उत्तर प्रदेश में
भारतीय मजदूर संघ
एक झलक

श्रद्धेय बड़े भाई
स्वर्गीय रामनरेश सिंह जी

श्रमिकाणां राष्ट्रभक्तिः राष्ट्रस्योद्योगशालिता ।
उद्योगे श्रम-स्वामित्वं एतत्सर्वार्थसाधनम् ॥

(शुक्रनीति)

× × ×

हमारे कृषि-प्रधान देश में आर्थिक-सामाजिक संरचना की सफलता के लिए श्रम-बचाऊ यंत्रों की नहीं अपितु श्रम-खपाऊ योजनाओं की आवश्यकता है ।

क्योंकि—

किसी भी देश की पूँजी श्रम ही होती है । श्रम और श्रमिकों के स्थान पर सोने-चाँदी को महत्त्व देना या चाँदी के लालच में श्रमिकों की उपेक्षा करना यह तो सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी को हलाल करने के समान है ।

विश्वकर्मा ! तुम्हें शत-शत प्रणाम !

यह जो विदेशियों द्वारा लांछित और स्वदेशवासियों द्वारा उपेक्षित छोटी जाति के किसान, मजदूर, जुलाहे आदि भारत के अत्यन्त साधारण लोग हैं—वास्तव में चिरकाल से चुपचाप ये ही कार्य करते चले आ रहे हैं । परिश्रम का फल भी इन्हें प्राप्त नहीं होता है । पर इनकी चिंता किसको है ? मौन रहकर घर और बाहर काम में जुटे रहकर दिन-रात पसीना बहानेवाले यह जो हमारे गरीब बन्धु हैं, इनकी क्या कोई बहादुरी नहीं है ?

बड़े काम का अवसर आने पर सभी बहादुरी दिखा सकते हैं । हजारों से प्रशंसित होने पर घोर स्वार्थी भी निःस्वार्थ परमार्थी बन सकता है । कायर भी हँसते हुए प्राण दे सकता है । किन्तु अनजाना रहकर छोटे- से-छोटे कार्य में भी जो निःस्वार्थ और कर्त्तव्यनिष्ठ रहता है, वही धन्य है ।

ऐसे, भारत के चिर पद-दलित श्रमजीवी मजदूर, तुम धन्य हो । तुम्हें मेरा प्रणाम है ।

— **स्वामी विवेकानन्द**

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ

एक झलक

संकलनकर्ता—
राजेश्वर दयाल शर्मा

भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश
२ नवीन मार्केट, परेड, कानपुर

वर्ष १९९५] [मूल्य : रु० २०.००

प्राक्कथन

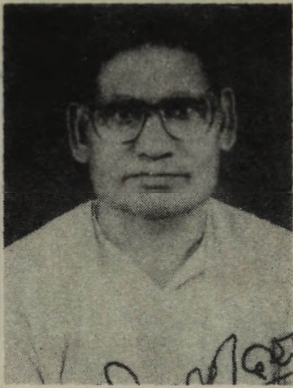

'कर्मप्रधान विश्व रचि राखा" यह भगवान् के लिए कहा गया है। सच्चे, यथार्थ मजदूर आन्दोलन पर आधारित श्रम संगठन पर उपरोक्त उक्ति खरी उतरती है। तात्पर्य यह है कि जहाँ पर जैन्युइन ट्रेड यूनियनिज्म पर आधारित भारतीय मजदूर संघ जैसा श्रम संगठन राष्ट्र एवं उद्योग के हित के लिए शोषित, पीड़ित दरिद्र नारायण की सेवा में अहोरात्र समर्पित भाव से संघर्ष, आन्दोलन, माँगपत्र अथवा हड़ताल आदि शस्त्रों से विधिवत् सज्जित होकर दीनबन्धु परमात्मा के बन्धु श्रमिकों की आर्थिक दशा एवं सम्मान को सँवारने में लगा हो तब उसकी इस तपस्या का वर्णन, हरि अनन्त, हरिकथा अनन्ता" की भाँति लिपिबद्ध करना एक असम्भव- सा कार्य है। हाँ, एक यत्किञ्चित् प्रयास उसके इस कार्य का परिचय भर कराने का अवश्य हो सकता है।

और उसी प्रयास के फलस्वरूप "उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ, एक झलक" आपके सामने है। निःसन्देह इस प्रयास में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य और उनका वर्णन अवश्य ही छूट गया है। इसकी हमको जानकारी भी है और हमारी असमर्थता भी है। कारण यह है कि हम उस सभी कुछ का विवरण देने में असमर्थ हैं जो त्याग, तपस्या और बलिदान के आधार पर शोषित, पीड़ित, दलित जनों की सेवार्थ आप सदृश कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया है। फिर भी अति संक्षेप में कहा जाय तो हम कह सकते हैं कि श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के आशीर्वाद एवं स्वर्गीय मान्यवर बड़े भाई जी के चहुँमुखी, प्रदीर्घ, अनथक परिश्रम एवं कृतित्व का परिणाम ही उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ का आज तक का इतिहास है।

शोषण कोई भी न कर पावे इसके लिए अपना यह कार्य है। अन्याय का सभी प्रकार से प्रतिकार करना यह अपना धर्म है। देश के गद्दारों का एकाधिकार मजदूर क्षेत्र से समाप्त हो और राष्ट्रभाव का पोषण हो, यह अपना लक्ष्य है। ट्रेड यूनियन के कार्य से ही सब कुछ होने वाला है, ऐसी बात नहीं है। प्रखर राष्ट्रभक्ति की विशाल योजना के अन्तर्गत मजदूर क्षेत्र भी एक अति आवश्यक विभाग है। अतएव ध्येयवाद के नाते हमने इस कार्य को स्वीकार किया है।

इस ध्येयवाद (मिशन) को बनाये रखने के लिए "दैनन्दिन कार्य" आवश्यक है। और यह दैनन्दिन कार्य (रुटीन वर्क) ही कार्यकर्ता को ध्येयवादी बनाता है। प्रसिद्धि लानी है, इमेज बनानी है—और यह आवश्यक भी है, लेकिन अपनी नहीं वरन् संस्था की, संगठन की, अपने कार्य की तथा व्यापक ध्येयवाद की इमेज बनाने के लिए हम लोग कार्यरत हैं।

इन्हीं संकल्पों को सामने रखकर भारतीय मजदूर संघ ने मजदूर क्षेत्र में प्रवेश किया है। अपने उत्तर प्रदेश के मजदूर जगत् में वह कहाँ तक पहुँच चुका है इसकी एक छोटी-सी झलक कार्यकर्ता बन्धुओं एवं अपने शुभचिन्तक महानुभावों को कराने के निमित्त ही यह एक लघु प्रयास है। इस पुस्तक में केवल आँकड़े देना हमारा उद्देश्य नहीं है, बल्कि कठोर एवं प्रदीर्घ परिश्रम के आधार पर तत्कालीन मजदूर जगत् के दूषित वायुमण्डल के विपरीत अपनी रीति एवं नीतियों को शनैः शनैः कैसे स्थापित किया गया है इसकी तरफ आप सभी का ध्यान आकर्षित करने में हम यदि सफल हो सके तभी इस प्रयास की सार्थकता है।

मान्यवर बड़े भाई जी ने शारीरिक परिश्रम के साथ चिंतन एवं लेखन के द्वारा जो सामग्री हम सभी को दी है उसने एवं उत्तर प्रदेश में अभी तक जो बन्धु महामंत्री के पद का दायित्व निभाते आये हैं उनके द्वारा दी गयी महामंत्री की प्रादेशिक रिपोर्ट (प्रतिवेदन) ने इस पुस्तक को आकार देने में बहुत सहयोग दिया है।

उन सभी बन्धुओं के प्रति मैं कृतज्ञतापूर्वक अपना आभार प्रकट करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका ही

भारतीय मजदूर संघ स्थापना दिवस
एकादशी, रविवार
२३ जुलाई १९९५ ई०

(राजेश्वर दयाल शर्मा)

श्रम का महत्त्व

श्रम से सरिता चलते-चलते,
सागर तक पा लेती है।
श्रम से ऊषा अन्धकार पी,
सहज उजाला देती है॥

अम्बर से धरती तक मारुत,
शब्द वहन कर सकता है।
श्रम से ब्रह्म अनादि अजन्मा,
आदि सृष्टि को रचता है॥

हमारी कामना

पाने का अपना आनन्द होता होगा,
किंतु चाहने का सुख भी कम नहीं है—
यदि चाह छोटी न हो।"
इसलिए चाहता हूँ,—
मनुष्य को पंगु व बौना बनाने वाली गरीबी मिटे।
जीविका के लिए जीवन रेहन न रखना पड़े।
रोटी इंसान को न खाए।
मशीनें श्रम की कठोरता घटायें, उत्पादकता बढ़ायें,
परन्तु श्रम का अवसर न छीनें।
दरिद्रता, दैन्य व अत्याचार को मिटाने, वीर आवेश भड़के
परन्तु बहादुरी का मुखौटा पहिन कर न घूमे।
सत्य, संख्या में न दब जाये।
विज्ञान, हिंसा का दास न हो पाये॥
—इन चाहों के चक्कर में युग-युग भटकने को,
मैं तैयार हूँ॥

—मान्यवर ठेंगड़ी जी

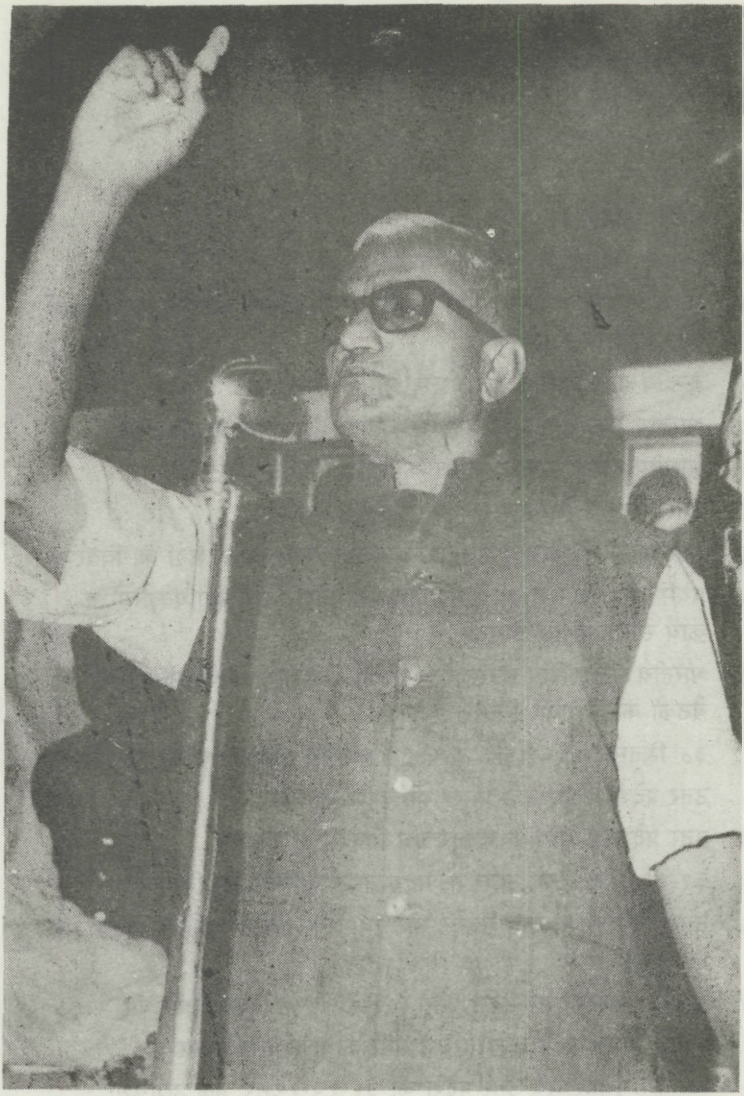

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक
श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी

अनुक्रमणिका

१.	प्राक्कथन	२
२.	हमारी कामना	४
३.	भारतीय मजदूर संघ (संक्षिप्त वृत्त)	१०
४.	भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन, अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग तथा महासमिति सम्मेलन	१८
५.	केन्द्रीय कार्य समिति व संचालन समिति की बैठकें	१९
६.	भारतीय मजदूर संघ की प्रदेशशः यूनियनें तथा सदस्यता (१९९४)	२०
७.	भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी	२१
८.	उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ का इतिहास	२५
९.	उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ के प्रादेशिक अधिवेशनों का विवरण	३६
१०.	प्रथम अधिवेशन से २६वें प्रादेशिक अधिवेशन तक पदाधिकारियों व कार्य समितियों का विवरण	३८
११.	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति की बैठकों का तिथिवार विवरण	६६
१२.	३० सितम्बर १९६४ तक उ०प्र० में भारतीय मजदूर संघ की यूनियनें	६९
१३.	उत्तर प्रदेश में हुए कुछ प्रमुख महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम	७६
१४.	उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ विकास के पथ पर	७७
१५.	३१-१२-१९८४ को उद्योगशः सदस्यता व यूनियनों का विवरण	७८
१६.	उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ एवं अन्य श्रम संगठनों का तुलनात्मक विश्लेषण	७९
१७.	भारतीय मजदूर संघ सबसे आगे (३१-१२-१९८९ के आधार पर)	७९
१८.	१९८९ में प्रदेश में कार्यरत श्रम संघों का तुलनात्मक विवरण	८०
१९.	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश की ३१-१२-१९८९ तक उद्योगशः पंजीकृत यूनियनों की सदस्यता का विवरण	८०
२०.	श्रम समितियों का विवरण	८२
२१.	भारतीय मजदूर संघ की यूनियनों व सदस्यता का विवरण (१-७-९५ तक)	८४
२२.	भारतीय मजदूर संघ (वर्तमान स्थिति)—संघ के कार्यक्रम में वृत्त निवेदन	८७

२३. उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध वर्तमान महासंघ ८८

२४. उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता जो केन्द्रीय कार्यसमिति के सदस्य हैं ८८

२५. कार्यकर्ताओं की विदेश यात्राएँ ८९

२६. १९९५ में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश के पूर्णकालिक कार्यकर्ता ९०

२७. उ०प्र० में भारतीय मजदूर संघ के कार्यालय ९१

२८. आगरा, अलीगढ़ सहारनपुर एवं फिरोजाबाद का कार्यवृत्त ९३

२९. दीपशिखा ९७

३०. श्रद्धाञ्जलि १००

३१. मेरी चाह १०२

३२. मान्यवर बड़े भाई जी १०५

भारतीय मजदूर संघ की मान्यताएँ

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम्।

कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

१.	चाहे जो मजबूरी हो, माँग हमारी पूरी हो।	नहीं	*	देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम।
२.	वर्ग संघर्ष	नहीं	*	अन्याय, शोषण तथा विषमता के विरुद्ध संघर्ष।
३.	इज्म	नहीं	*	अन्त्योदय पर आधारित समाज-रचना।
४.	मानव वर्ग की मौलिक इकाई	नहीं	*	मानव जाति की मौलिक इकाई राष्ट्र है।
५.	वेतन विषमता	नहीं	*	आय की विषमता समाप्त हो।
६.	राजनैतिक स्वरूप	नहीं	*	शुद्ध ट्रेड यूनियन आन्दोलन।
७.	दुनिया के मजदूरो एक हो।	नहीं	*	मजदूरो ! दुनिया को एक करो।
८.	समाजवाद	नहीं	*	एकात्म मानववाद।
९.	बोनस लाभांश या बख्शीस	नहीं	*	विलम्बित वेतन है।
१०.	लाल गुलामी ?	नहीं	*	लाल गुलामी छोड़कर, बोलो वन्दे मातरम्।
११.	मई दिवस हमारा श्रम दिवस	नहीं	*	विश्वकर्मा जयन्ती हमारा राष्ट्रीय श्रम दिवस है।
१२.	उद्योगों का राष्ट्रीयकरण ?	नहीं	*	श्रमिकीकरण हो।
१३.	उद्योगों का अतिरिक्त लाभ उद्योगपति को	नहीं	*	श्रमिकों को मिले।
१४.	कमाने वाला खायेगा।	नहीं	*	कमाने वाला खिलाएगा
१५.	इन्कलाब जिन्दाबाद।	नहीं	*	भारत माता की जय

"भारतीय मजदूर संघ—अमर हो, अमर हो॥"

●

"कृत कर, वंड छक, नाम जप।"

(काम करो, बाँट कर खाओ, प्रभु नाम का जाप करो)

—गुरु नानकदेव जी

श्री मनहर भाई मेहता

बड़े भाई श्री रामनरेश सिंह

श्री बी०एस० काम्बले

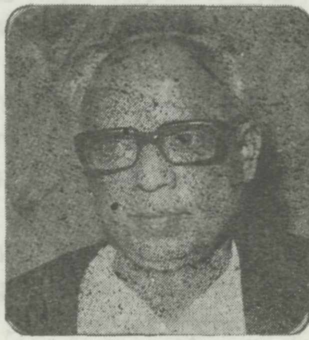

श्री नरेश कुमार गांगुली

श्री विनय कुमार मुखर्जी

श्री साठे जी

तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें !

भारतीय मजदूर संघ (संक्षिप्त वृत्त)

भारतीय मजदूर संघ राष्ट्र-पुनरुत्थान के कार्य का एक अङ्ग है। यह राष्ट्र-हित की चौखट के भीतर मजदूर-हित की कल्पना को लेकर चल रहा है। विशुद्ध राष्ट्रवादी और सही ट्रेड यूनियन आन्दोलन के आधार पर चलने के कारण स्वाभाविक ही यह मजदूरों का, मजदूरों के लिए और मजदूरों द्वारा संचालित श्रम संगठन है। बाहरी प्रभाव यथा नियोजकों व सरकार के प्रभाव अथवा राजनैतिक दलों, व्यक्तिगत नेतागिरी या विदेशी विचारधारा के प्रभाव से यह मुक्त है। यह भारतीय संस्कृति, परम्परा, आर्थिक दर्शन और प्रतिभा के आधार पर चलने वाला संगठन है। अतः इसके अनुसार राष्ट्र-हित, उद्योग-हित व मजदूर-हित तीनों एक ही दिशा में जाने वाले मार्ग हैं और एक-दूसरे पर आधारित, अन्योन्याश्रित हैं।

भारतीय-मजदूर संघ को वर्गों की कल्पना अमान्य है। हमारा मानना है कि सभी भारत माता के सपूत हैं इसलिए वर्ग संघर्ष नहीं अपितु अन्याय, शोषण और विषमता के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता है। वर्ग संघर्ष अथवा वर्ग समन्वय के स्थान पर परिस्थिति के अनुसार संघर्षक्षम या समन्वयक्षम के मार्ग पर हम चल रहे हैं। हम मानते हैं कि मजदूर सर्वहारा नहीं है अपितु यह राष्ट्र-शक्ति का एक अपरिहार्य अंग है।

भारतीय मजदूर संघ की जिस समय स्थापना हुई उस समय साम्यवादियों को मजदूरों के मसीहा के रूप में जाना जाता था। इनका लाल झण्डा ही मजदूरों का झण्डा है, यह मान्यता थी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्यवाद अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। एक-तिहाई दुनिया पर उनका लाल झण्डा लहरा रहा था और शेष दो-तिहाई दुनिया पर विजय पाने की उनकी तैयारी थी। INTUC, AITUC, HMS और UTUC चार अपने देश में उस समय भारत सरकार से मान्यता प्राप्त केन्द्रीय श्रम संगठन थे। चारों ही किसी न किसी राजनैतिक दल के मोर्चे (wing) के रूप में मजदूर क्षेत्र में काम कर रहे थे और ट्रेड यूनियनों की भूमिका किसी न किसी राजनैतिक दल के मोर्चे के रूप में काम करने की होती है, यह मान्यता उस समय प्रचलित थी।

भारतीय मजदूर संघ के उद्‌भव व विकास की कहानी त्याग, तपस्या और बलिदान की गाथा है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयन्ती के पावन पर्व पर २३ जुलाई, १९५५ को मान्यवर दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के आह्वान पर भोपाल में देश भर से आये लगभग पैंतीस प्रबुद्ध जनों नें मिल बैठकर भारतीय मजदूर संघ के निर्माण की घोषणा की। घोषणा करते समय कोई यूनियन, कार्यकर्ता, पैसा अथवा कार्यालय कुछ भी नहीं था, अर्थात् शून्य से सृष्टि के निर्माण की घोषणा की गयी थी। जिस क्षेत्र में काम करना था वहाँ एक-एक कदम के लिए जूझना पड़ा। अपना संरचनात्मक ढंग भी दूसरे संगठनों से अलग रहा। अन्य संगठनों में शीर्ष से आधार की ओर अर्थात् ऊपर से नीचे की ओर बढ़ते हैं लेकिन हमने

पहले आधार तैयार करते हुए फिर धीरे-धीरे शीर्ष की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। ऊपर से थोपा गया ऐसा यह कार्य नहीं है बल्कि इसके ठीक विपरीत भारतीय मजदूर संघ का विकास क्रम नीचे से ऊपर की ओर रहा है, और इसलिए निर्माण की घोषणा (२३ जुलाई, १९५५) से लेकर १२ व १३ अगस्त, १९६७ तक अर्थात् बारह वर्षों तक इसके संस्थापक मान्यवर ठेंगड़ी जी स्थान-स्थान पर घूम कर उद्योगों, विभागों, निकायों, नगरों और प्रदेशों में स्थानीय व प्रादेशिक इकाइयों का गठन करते रहे। तत्पश्चात् प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन १२-१३ अगस्त, १९६७ को जन्म के ठीक बारह साल बाद दिल्ली में पँचकुइयाँ रोड के कम्युनिटी हाल में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री ठेंगड़ी जी को विधिवत् महामंत्री घोषित किया गया।

इस अधिवेशन में १३५२ प्रतिनिधि देश के विभिन्न स्थानों से आये थे। इस बारह साल की अवधि में ९ व्यवस्थित प्रान्तीय इकाइयाँ गठित की जा चुकी थीं जिनकी कुल ५४१ यूनियनें थीं और चार अ० भा० औद्योगिक महासंघ—शुगर, इन्जीनियरिंग, टैक्सटाइल तथा रेलवे—भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध हो चुके थे।

इस सबका ब्यौरेवार विवरण निम्न प्रकार से है—

क्रमांक	प्रदेश	यूनियनों की संख्या	सदस्य संख्या	अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधि
१.	दिल्ली	४०	४५,१४३	१५०
२.	पंजाब	४०	१०,७५९	५७
३.	हरियाणा	२५	६,०००	९५
४.	राजस्थान	४१	२३,१००	४६
५.	गुजरात	१३	१,०००	३५
६.	विदर्भ	५४	९,५००	१७५
७.	महाराष्ट्र	६८	५१,१४३	२२९
८.	कर्नाटक	२०	६,०००	३०
९.	आन्ध्र	१०	१२,०००	५
१०.	मद्रास	५	५००	२
११.	केरल	१	५०	१
१२.	उड़ीसा	१	८००	१
१३.	मध्य प्रदेश	३२	८,७५७	४०
१४.	उत्तर प्रदेश	१४९	४३,०००	२०३
१५.	बिहार	२१	२५,०००	२५
१६.	बंगाल	१४	१,३००	२५
१७.	आसाम	१	२,०००	—
१८.	चण्डीगढ़	६	८५०	५
		५४१	२,४६,९०२	१,३५२

भारतीय मजदूर संघ का कार्य शून्य से प्रारम्भ हुआ था। इसकी स्थापना के समय

कोई केन्द्रीय कार्यकारिणी का गठन नहीं हुआ था। प्रान्तीय स्तर पर भी कोई समिति नहीं थी। अलग-अलग स्थानों पर स्थानीय स्तर पर छोटी-छोटी यूनियनों से कार्य का शुभारम्भ हुआ था जैसे दुकान कर्मचारी संघ, रिक्शा मजदूर संघ आदि। धीरे-धीरे प्रान्तीय महासंघ बने और बाद में औद्योगिक महासंघों का निर्माण हुआ। फिर कुछ प्रान्तों में प्रान्तीय कार्यकारिणी समितियों का गठन किया गया और बाद में अखिल भारतीय औद्योगिक महासंघ बने। हमने यथार्थ सच्चे श्रम संगठन (जेन्युइन ट्रेड यूनियन) की कार्यपद्धति पर विश्वास किया है। अर्थात् भारतीय मजदूर संघ मजदूरों का है, मजदूरों के लिए है और यह मजदूरों के द्वारा चलाया जाता है। और इसलिए इसका स्वरूप शुरू से ही गैर-राजनैतिक है। जब हमारा कार्य प्रारम्भ हुआ उन दिनों तथाकथित प्रगतिशील लोगों के मन में राष्ट्रवाद, राष्ट्र, राष्ट्रीयता और भारत माता की जय के बारे में बड़ी चिढ़ थी। उनको इन बातों से परहेज था। वे लोग ट्रेड यूनियन क्षेत्र में बोनस, महँगाई भत्ता और वेतनवृद्धि आदि बातों से आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। अतएव नारे भी "चाहे जो मजबूरी हो, माँग हमारी पूरी हो" जैसे आम तौर पर प्रचलित थे। लेकिन भारतीय मजदूर संघ ने अपनी प्राथमिकता का क्रम पहले राष्ट्र-हित, उसके बाद मजदूर-हित और बाद में भारतीय मजदूर संघ का हित रखा था। इसमें संस्थागत अहंकार को कोई स्थान नहीं था। राष्ट्र और मजदूरों के कल्याण के साधन के रूप में भारतीय मजदूर संघ एक माध्यम है, यही विचार लेकर हम लोग चले थे। सबसे पहले भारतीय मजदूर संघ ने ही यह कहा कि सभी को, सरकारी कर्मचारियों को भी, बोनस मिलना चाहिए। जब तक किसी कर्मचारी को मिलने वाले वेतन एवं जीने के लिए आवश्यक वेतन दोनों में ही बहुत अन्तर है तब तक जो भी बोनस के रूप में पैसा दिया जायेगा वह बोनस विलम्ब से दिया हुआ वेतन (डैफर्ड वेज) है यह बात हमने ही १९७२ में बम्बई में सबसे पहले कही थी। और उस समय हमारा मजाक बनाया गया था। लेकिन धीरे-धीरे बाद में इस तर्क को सभी ने स्वीकार किया और सरकार ने भी हर जगह ८.३३ प्रतिशत बोनस देना प्रारम्भ किया। इसी तरह कम्पोजिट बारगेनिंग एजेन्सी की बात सबसे पहले भारतीय मजदूर संघ ने ही रखी थी जिसका मतलब है कि वार्ता में तीन पक्षों का होना स्वाभाविक रूप से आवश्यक है, सरकार, मालिक एवं सभी श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधि। वामपंथियों ने एक भ्रामक भ्रान्ति फैला रखी थी कि उद्योग चलाने के लिए केवल दो ही प्रकार हो सकते हैं, एक तो राष्ट्रीयकरण अर्थात् सरकार उद्योग चलाये अथवा दूसरा प्राइवेट एण्टरप्राइजेज। वामपंथियों का कहना था कि इन दो के अलावा अन्य कोई तीसरा विकल्प हो ही नहीं सकता है। उस समय भारतीय मजदूर संघ ने ही कहा कि राष्ट्रीयकरण कोई रामबाण औषधि नहीं है। उद्योग को चलाने के लिए अन्य उपाय भी हो सकते हैं, जैसे—स्वरोजगार स्वामित्व, मजदूर स्वामित्व, सहकारिता के आधार पर, साझा स्वामित्व, स्वायत्तशासीकरण, श्रमिकीकरण, लोकतांत्रिक आधार। और किस उद्योग के स्वामित्व को किस ढाँचे में रखा जाय इसके लिए सरकार को नेशनल कमीशन फॉर दी पैटर्न ऑफ ओनरशिप ऑफ दी इण्डस्ट्रीज जैसी कोई समिति नियुक्त करनी चाहिए। इसके लिए राष्ट्रीय आयोग गठित करने की बात सर्वप्रथम हमने ही कही। हमने भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी को १९६९ में जो मजदूरों का माँगपत्र दिया था उसमें इसका भी उल्लेख है। श्रमिकीकरण भी स्वामित्व का एक प्रकार हो सकता

है यह भी हमारा ही विचार है जिसके अब अनेक स्थानों पर सफलतापूर्वक प्रयोग भी हुए हैं। उद्योग में पैसे के साथ ही साथ पसीने की साझेदारी की बात भी भारतीय मजदूर संघ ने ही उठायी जबकि अन्य लोग ज्यादा से ज्यादा प्रबन्ध अथवा व्यवस्था में भागीदारी का राग ही अलापते रहे हैं। वामपंथी जब बुर्जुआ और सर्वहारा केवल यह दो ही वर्ग हैं, इस मिथ्या कल्पना के प्रचार में जुटे हुए थे उस समय विश्वकर्मा सैक्टर का भी अस्तित्व है यह बात केवल भारतीय मजदूर संघ ने ही रखी। वामपंथी लोग तो स्वरोजगार, देशी कारीगर, बढ़ई, लुहार, चर्मकार जैसे विश्वकर्मा सैक्टर हैं, उनका भी अस्तित्व है यह बात मानते ही नहीं थे। लेकिन आज रूस ने भी हाउसहोल्ड इण्डस्ट्रीज एक्ट बनाया हुआ है। उस समय केवल हम कहते थे और यह मानते नहीं थे।

विदेशी सरमायेदारों को और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने देश में ज्यादा से ज्यादा छूट देने के कारण वित्तमंत्री डा० मनमोहन सिंह के विरोध में आज सभी स्वदेशी के जन्मजात भक्त हो गये हैं। इनके वक्तव्यों से ऐसा लगता है जैसे अपने यहाँ आर्थिक गुलामी डॉ० मनमोहन सिंह ही ला रहे हैं। भारतीय मजदूर संघ ने १९८२ में देश को चेतावनी दी थी कि सरकार की गलत नीतियों की वजह से अपने देश में आर्थिक गुलामी आ रही है। स्वर्गीय पं० दीन दयाल उपाध्याय के जन्मदिन २५ सितम्बर, १९९२ को जन-जागरण के लिए हम लोगों ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद की होली जलायी थी और विद्यार्थी परिषद, ग्राहक पंचायत, सहकार भारती, भारतीय किसान संघ और मजदूर संघ ने मिलकर स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की थी। अब तो आर्थिक गुलामी की निन्दा विश्वनाथ प्रताप सिंह जैसे लोग भी कर रहे हैं। गम्भीरता की भी हद होती है। राजीव गाँधी की सरकार में यह जब वित्तमंत्री थे तब इन्होंने ही ऐसे निर्णय लिये जिसकी वजह से आज की यह आर्थिक गुलामी आयी है। पाकिस्तान के साथ १९६५ में नहर के पानी के बँटवारे के समय विदेशी पूँजी के दबाव में जो अहितकर समझौता हुआ था उसके लिए उस समय संघ के सरसंघचालक परमपूजनीय श्री गुरु जी ने चेतावनी दी थी कि विश्व बैंक के दबाव में सरकार ने यह समझौता स्वीकार किया है और यदि सरकार की यही प्रवृत्ति चलती रही तो देश में आर्थिक गुलामी आयेगी। और आज जब हाथ से सत्ता चली गयी है तब वही विश्वनाथ प्रताप सिंह कहते हैं कि आर्थिक आजादी के लिए एक दूसरा युद्ध और करना पड़ेगा। "आर्थिक आजादी के लिए युद्ध", इस नीति का उद्‌घोष केवल भारतीय मजदूर संघ के मंच से ही समय-समय पर हुआ है। अन्य लोगों ने तो इसके बारे में सोचा तक नहीं है।

एक और बात तकनीक के बारे में। हमने कहा कि विदेशी तकनीक के ऐसे कौनसे हिस्से हैं जिनको पूरा का पूरा हम ग्रहण कर सकते हैं और वह कौनसी तकनीक हो सकती है कि जिसे अपने देश की आवश्यकता के अनुसार हेर-फेर करके हम ग्रहण कर सकते हैं और पूरी की पूरी विदेशी तकनीक जिसे अस्वीकार करना होगा वह कौनसी होगी, क्योंकि वह हमारे देश की परिस्थिति के अनुकूल नहीं है, जिसकी वजह से हमारी बहुत हानि होगी। अर्थात् adopt (स्वीकार), adapt (सुधार) and reject (त्यागना), और develop our own technology (अपनी तकनीक विकसित करना) यह चार बातें कही गयीं। एक पाँचवीं बात और कही गयी, वह यह कि हमारे यहाँ की जो कारीगरी है, दस्तकारी है उसको देखते

हुए नयी टैक्नोलॉजी को इस ढंग से अपने देश में विकसित करना चाहिए जिसकी वजह से इनके जो कारीगर हैं वह बेकार न हो जायें। इस बात को सारांश में कहें तो जैसा पूज्य गाँधी जी ने कहा कि Not mass production but production by masses. यह पद्धति हमारे देश के लिए होनी चाहिए और इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर तकनीक नीति बनाना आवश्यक है। तकनीक केवल मालिक व मजदूर के बीच की वस्तु नहीं है। यह एक नयी सभ्यता है। सब कुछ नयी रचना है जिसके लिए राष्ट्रीय तकनीक नीति की माँग करने वाला पहला संगठन भारतीय मजदूर संघ है। भारतीय मजदूर संघ अविवेकपूर्ण कम्प्यूटराइजेशन का भी विरोध करता है। हमारे कम्यूनिस्ट भाई तो हमको इस विषय पर हमेशा दकियानूसी ही घोषित करते रहे हैं। बैंकों में कम्प्यूटरों के प्रयोग पर यही हुआ। लेकिन बाद में जब उनके कार्यकर्ताओं ने ही उनका विरोध किया तो फिर विवश होकर हमारी नीति उनको स्वीकार करनी पड़ी।

कार्यक्षेत्र में संघर्षों और बलिदानों की एक लम्बी शृंखला है जो अब सर्वविदित है। हिन्दुत्व-विरोधी सरकारों, वामपंथी उग्र विचारों, मौकापरस्त पूँजीपतियों तथा गुण्डा तंत्र के अनाचारों का सफल प्रतिवाद करते हुए एवं समस्त कर्मचारियों और श्रमिक वर्ग का विश्वास अर्जित करते हुए आज जो भारतीय मजदूर संघ अपने देश का सबसे बड़ा केन्द्रीय श्रम संगठन हो गया है उसके लिए असंख्य ध्येयनिष्ठ, पूर्ण समर्पित व आदर्शवादी कार्यकर्ताओं के तप व बलिदान का अनूठा योगदान है।

मजदूर क्षेत्र में "भारतमाता की जय" का उद्‌घोष आज सामान्य बात है। किन्तु भारतीय मजदूर संघ के निर्माण के पूर्व लाल सलाम के नारे बुलन्द होते थे। मजदूर संघ ने नारा दिया "लाल गुलामी छोड़कर बोलो वन्देमातरम्।" हमने फिर आगे कहा, "राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण हो।" हमारा मानना है कि पैसे के समान पसीने को भी शेयर मानकर श्रमिकीकरण की कल्पना को साकार किया जा सकता है। अतः नारा दिया, "धन की पूँजी, श्रम का मान, कीमत दोनों एक समान" और "बी० एम० एस० की क्या पहिचान, त्याग, तपस्या और बलिदान।" यह नारा, नारा न होकर हमारा ध्येय-वाक्य बन गया है—"देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम।" जहाँ हमने ऐसे मौलिक नारों को प्रचलित किया वहीं वामपंथियों द्वारा "दुनिया के मजदूरो एक हो" जैसे वर्ग-आधारित नारों को प्रचारित किया गया था। उसके स्थान पर हमने "मजदूरो दुनिया को एक करो" जैसा सार्थक और सृजनात्मक नारा मजदूर जगत् को दिया।

सन् १९८० में सदस्यता-सत्यापन के परिणामस्वरूप भारतीय मजदूर संघ देश के सभी केन्द्रीय श्रम संगठनों में द्वितीय स्थान पर आया था। तत्पश्चात् अन्य देशों के श्रम संगठनों में भारतीय मजदूर संघ के विषय में जानकारी प्राप्त करने, सम्पर्क स्थापित करने की एक होड़-सी लग गयी—सर्वप्रथम आमंत्रण चीन से प्राप्त हुआ और वर्ष १९८५ में माननीय ठेंगड़ी जी के नेतृत्व में भारतीय मजदूर संघ का पाँच सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल चीन गया। वहाँ के बीजिंग रेडियो से मा० ठेंगड़ी जी का बीस मिनट का भाषण भी प्रसारित किया गया। इसी प्रकार वर्ष १९९० में दो सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल पूर्व सोवियत संघ के डब्ल्यू० एफ० टी० यू० के आमंत्रण पर मास्को गया जहाँ एक विश्व सम्मेलन में प्रस्ताव पारित

करके श्रम संघ दलगत राजनीति से परे रहने चाहिए" की घोषणा की गयी। साम्यवादी पार्टी के शासन में ऐसी घोषणा अभूतपूर्व मानी गयी। स्मरणीय है कि भारतीय मजदूर संघ अपनी स्थापना से ही इस सिद्धान्त की घोषणा करता रहा है कि श्रम संगठनों को दलगत राजनीति से परे रहना चाहिए। मास्को सम्मेलन ने इस सिद्धान्त की सत्यता को स्वीकार किया और इस तरह लाल झण्डे का जहाँ जन्म हुआ था वहाँ पर ही उसे सदैव के लिए त्याग दिया गया।

वर्तमान समय में भारतीय मजदूर संघ अपने देश में सबसे बड़ा केन्द्रीय श्रमिक संगठन है। वर्ष १९८९ को आधार मानकर केन्द्रीय सरकार ने सभी श्रम संघों के सत्यापन के पश्चात् जो घोषणा की उसके अनुसार भा० म० सं० की सदस्यता ३१,१७,३२४ है। यह दूसरे नम्बर पर आये इंटक से चार लाख दस हजार आठ सौ तिहत्तर अधिक है। वामपंथी संगठन बंगाल व केरल को छोड़कर सभी उद्योगों तथा प्रदेशों में अपना आधार खो चुके हैं। भारतीय मजदूर संघ आठ प्रदेशों तथा तेरह उद्योगों में प्रथम स्थान पर है। आज की तिथि में हमारी सदस्यता ४५ लाख से अधिक है। अण्डमान, निकोबार, सिक्किम, नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर, लक्षद्वीप को छोड़कर सभी प्रदेशों में अपना कार्य है। पच्चीस जिले छोड़कर सभी जिलों में और वायुमार्ग को छोड़कर सभी उद्योगों में हमारा कार्य है।

बोनस विलम्बित वेतन है अर्थात् १२ माह के बदले तेरह माह का वेतन सभी वेतनभोगी कर्मचारियों को दिया जाना चाहिए ऐसा केवल भारतीय मजदूर संघ ने ही साठ के दशक में पहली बार कहा था। आज सभी कर्मचारियों को बोनस दिया जाता है, जब कि इसके पूर्व केवल उत्पादन कार्य से जुड़े प्रतिष्ठानों के श्रमिक ही बोनस पाते थे।

अप्रैल १९७५ में अमृतसर के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर मजदूर संघ ने आशंका जतलायी थी कि देश में आपातकाल लागू किया जा सकता है, अतः लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु हमें सावधान रहना है। फलतः आपातकाल के दौरान असंख्य कार्यकर्ताओं ने अभूतपूर्व साहस का परिचय देते हुए, अपने रोजगार आदि की परवाह न करते हुए जेल यात्राएँ कीं। अनेक प्रकार की यातनाएँ और कष्ट तो उठाये किन्तु लोकतंत्र की पुनर्स्थापना तक हार नहीं मानी।

भारतीय मजदूर संघ ने बुलढाणा में असंगठित क्षेत्र के खेतिहर मजदूरों के दमन व शोषण के प्रतिकार स्वरूप जमीन के पट्टे श्रमिकों को दिलवाकर मालिकाना हक प्रदान करवाया।

सभी केन्द्रीय श्रम संघों की राष्ट्रीय अभियान समिति में भारतीय मजदूर संघ सम्मिलित था किन्तु अयोध्या प्रकरण में जब भा० म० सं० के अतिरिक्त अन्य श्रम संघों ने श्रीराम मन्दिर निर्माण का विरोध किया तो भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रीय अभियान समिति से अलग हट गया।

सन् १९६२ में चीन के आक्रमण के समय प्रतिरक्षा विभाग में अपना कार्य नहीं था। जिनका कार्य था उन वामपंथी संगठनों ने श्रमिकों से आक्रमणकारियों का स्वागत करने की बात कही। यह देशद्रोह देखकर प्रतिरक्षा विभाग में अपने संगठन का गठन द्रुति गति से किया गया। परिणाम १९७१ के भारत-पाक युद्ध में सामने आया जब सैकड़ों प्रतिरक्षा के असैनिक कर्मचारियों ने भारतीय मजदूर संघ के आह्वान पर पश्चिमी सीमा पर स्थित प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों में देशरक्षार्थ दिन-रात अनवरत कई कई दिन चौबीस घन्टे लगातार कार्य किया

और इसका कोई ओवरटाइम स्वीकार नहीं किया। सैनिक जवानों से कन्धे से कन्धा मिलकर हमारे असैनिक श्रमिकों ने देशप्रेम की भावना के वशीभूत हो, प्राणों की बाजी लगाकर जो भी कार्य उनको दिया गया, यथा गोलाबारूद का रखरखाव, खंदकें खोदना, यातायात सम्भालना आदि, उसे प्राणपण से सम्पन्न किया। इसके पश्चात् अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण उद्योगों में अपने औद्योगिक महासंघों का निर्माण प्रारम्भ किया गया। इसके पूर्व भी कई उद्योगों में अपने महासंघ बन चुके थे।

आज देश में आम धारणा है कि मजदूर कर्मचारी काम करने को राजी नहीं है। यह सही भी है और इसके लिए ऐसे तमाम श्रमिक संगठन जिम्मेदार हैं जिन्होंने केवल अपने अधिकारों के लिए मजदूरों को लड़ना सिखाया है। भारतीय मजदूर संघ पहला ऐसा संगठन है जिसने कर्त्तव्य और अधिकार दोनों पर बराबर जोर दिया है। इसी आशय का "कर्तव्य और अधिकार" माँगपत्र भारतीय मजदूर संघ की ओर से १९६९ में पूर्व राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि जी को दिया गया था।

हम आर्थिक क्षेत्र में हैं किन्तु हमारी जड़ें भारतीय संस्कृति में हैं। अतः १९९२ में अयोध्या में श्रीराममन्दिर हेतु कार सेवा में भारतीय मजदूर संघ की प्रेरणा से हजारों श्रमिकों ने जिनमें मुस्लिम तथा क्रिश्चियन समेत सभी समुदायों के श्रमिक सम्मिलित थे, भाग लिया।

आज से लगभग दस वर्ष पूर्व यह चेतावनी भारतीय मजदूर संघ ने दे दी थी कि अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों भारत को बेचने की कुचेष्टा की जा रही है। भारतीय मजदूर संघ के सदस्यों में जागृति लाकर जन-जागरण के अभियान चलाये गये और गैट-विरोधी प्रदर्शन में सर्वप्रथम भारतीय मजदूर संघ आगे आया। स्वदेशी की भावना जगाने और स्वदेशी उत्पादन प्रयोग में लाने का अभियान भी भारतीय मजदूर संघ ने बहुत पहले छेड़ दिया था जिसमें श्रमिकों का भरपूर सहयोग व समर्थन मिला है। गैट-विरोधी प्रदर्शन हेतु दिल्ली के लालकिले पर २० अप्रैल १९९३ को देशभर से एकत्रित हुए बासठ हजार से अधिक श्रमिकों की भारतीय मजदूर संघ द्वारा आयोजित यह प्रथम विशाल रैली थी, जिसके पश्चात् छोटी-बड़ी रैलियों का ताँता लग गया। इस रैली में महिला कर्मचारियों की भागीदारी १० हजार थी।

१९९५ में भा० म० सं० अपनी स्थापना के चालीस वर्ष पूरे कर रहा है। इस उपलक्ष्य में महिलाओं के ४०१ सम्मेलनों का आयोजन करना है। इस समय अपने २६० पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं उनकी संख्या बढ़ाकर ४०० करना है। इसी वर्ष ४०० नयी यूनियनों का निर्माण कर भा० म० सं० से सम्बद्ध करना तथा ४०० अभ्यास वर्ग आयोजित करना आदि कार्य भी करने हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम क्षेत्र में भी भा० म० सं० की साख और प्रतिष्ठा बढ़ी है। विदेश के अनेक सम्मेलनों, गोष्ठियों में अपने प्रतिनिधि भाग लेते हैं और भारतीयता पर आधारित अपना दृष्टिकोण प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। १९९४ के अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में जब आई० सी० एफ० टी० यू० ने सोशल क्लॉज जोड़ने का प्रस्ताव रखा तो उसका जोरदार विरोध भा० म० सं० के प्रतिनिधि ने किया। अन्य विकासशील देशों के प्रतिनिधि तो मौन रहे।

आने वाले वर्षों में देश में आर्थिक स्वतंत्रता, स्वदेशी स्वाभिमान के लिए भा० म० स०

के द्वारा व्यापक अभियान और संघर्ष चलाये जायेंगे और हम लोग कर्तव्य और अधिकार का सामंजस्य करते हुए राष्ट्रभाव को परिपुष्ट करने, आर्थिक विषमता समाप्त करने और सर्वांगीण विकास की ओर तेज गति से कदम बढ़ाते जायेंगे। भारतीय मजदूर संघ की स्थापना के साथ ही इसके संस्थापक मान्यवर ठेंगड़ी जी ने "इदं राष्ट्राय इदं न मम" की घोषणा में इसके उद्देश्य को स्पष्ट किया है। अतः राष्ट्र की तेजस्विता व अस्मिता के अनुरूप भारतीय मजदूर संघ के कार्य को गति प्रदान की जायेगी।

ऐसी अनेक बातें हैं जिनको लेकर हम कह सकते हैं कि जहाँ से कार्य प्रारम्भ किया था वहाँ से लेकर आज तक जो विकास क्रम रहा है वह सन्तोषजनक है। और यह सुगमता से नहीं हो गया है बहुत बाधाएँ आयी हैं। भारतीय मजदूर संघ का कार्य करते-करते अनेक कार्यकर्ता शहीद हो गये। अनेकों ने अपना पूरा जीवन इसी कार्य के निमित्त स्वाहा कर दिया। कार्यकर्ताओं ने अपने रक्त से सींच कर इस कार्य को इतना विकसित किया है। वैचारिक क्षेत्रवृद्धि, जिसका लोग पहले मजाक उड़ाते थे, उसको हमारा पागलपन कहते थे, आज सभी उसी को स्वीकार करने लगे हैं। वैचारिक एवं संगठनात्मक दृष्टि से भारतीय मजदूर संघ आज तक प्रगति करता आया है, और इसके लिए प्रत्यक्ष शहादत के अलावा भी कितने कार्यकर्ताओं की नौकरी छूटी और कितने घर बरबाद हुए इसका हिसाब रखना भी बहुत कठिन है।

प्रारम्भ में ही भारतीय मजदूर संघ के लिए कहा गया था कि मजदूर को आबाद करने के लिए कार्यकर्ताओं को बरबाद होना होगा। समाज में जो अच्छे लोग हैं वह त्याग करें, तकलीफ उठाएँ ताकि सम्पूर्ण समाज आनन्द एवं प्रसन्नता से जीवन यापन कर सके। इमरजेन्सी के समय भी जब वामपंथी, तथाकथित क्रान्तिकारी और मजदूरों की आर्थिक लड़ाई का दम भरने वाले दुम दबाकर मैदान छोड़कर भाग गये थे, वहाँ भारतीय मजदूर संघ के बावन हजार कार्यकर्ता इमरजैन्सी के खिलाफ आन्दोलन करके जेल गये थे।

अंत में हम कह सकते हैं कि हमको कहाँ पहुँचना है यह तो हमको मालूम है, लेकिन तब से लेकर अब तक जितनी दूरी हमने तय की है वह सन्तोषजनक है।

भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन

स्थापना भोपाल २३ जुलाई १९५५ ई० लोकमान्य बाल गंगाधर के शुभ पावन जन्म दिवस पर

			यूनियनें	सदस्य संख्या
१.	दिल्ली	१२ व १३ अगस्त १९६७ ई०	५४१	२,४६,९०२
२.	कानपुर	११ व १२ अप्रैल १९७० ई०	८९९	४,५८,०००
३.	बम्बई	२२ व २३ मई १९७२ ई०	१२११	६,००,०००
४.	अमृतसर	१९ व २० अप्रैल १९७५ ई०	१३१३	६,३९,४२४
५.	जयपुर	२१, २२ व २३ अप्रैल १९७८ ई०	१५१५	१०,८३,४८५
६.	कलकत्ता	७ व ८ मार्च १९८१ ई०	१७३६	१८,०५,९२०
७.	हैदराबाद	९, १० व ११ जनवरी १९८४ ई०	२००७	२०,५३,७२१
८.	बैंगलौर	२६, २७ व २८ दिसम्बर १९८७ ई०		
९.	बड़ोदरा	२१, २२ फरवरी १९९१ ई०		
१०.	धनबाद	१८, १९ व २० मार्च, १९९४ ई०		

अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग

१.	भुसावल	सन् १९६९ ई०
२.	बड़ोदरा	१४, १५ व १६ दिसम्बर, १९७७ ई०
३.	पुणे	१४, १५, १६ व १७ जनवरी १९८० ई०
४.	इन्दौर	२९, ३० अक्टूबर व १, २ नवम्बर १९८४ ई०
५.	नागपुर	२६, २७ व २८ फरवरी १९९२ ई०

महासमिति सम्मेलन (General Council)

बड़ोदरा	१७ व १८ अप्रैल १९७१ ई०
ग्वालियर	१२ व १३ मई १९७३ ई०

केन्द्रीय कार्य समिति एवं संचालन समिति की बैठकें

दिल्ली	१४ अगस्त	१९६७
राँची	१६, १७ मई	१९६९
नागपुर	१०, ११ जुलाई	१९६९
दिल्ली	१६ नवम्बर	१९६९
कानपुर	१० अप्रैल	१९७०
कोचीन	२८, २९ अगस्त	१९७०
हैदराबाद	६, ७ दिसम्बर	१९७०
बड़ोदरा	१६ अप्रैल	१९७१
बड़ोदरा	१९ अप्रैल	१९७१
जालन्धर	१५, १६ सितम्बर	१९७१
वाराणसी	१८, १९ जनवरी	१९७२
बम्बई	२०, २१ मई	१९७२
बम्बई	२४ मई	१९७२
ग्वालियर	१०, ११ मई	१९७३
ग्वालियर	१३, १४ मई	१९७३
मंगलूर	२०, २१, २२ सितम्बर	१९७३
राजकोट	२६, २७, २८ जनवरी	१९७४
दिल्ली	२९, ३० अगस्त	१९७४
अमृतसर	१७, १८ अप्रैल	१९७५
अमृतसर	२१ अप्रैल	१९७५
पुणे	१३, १४ अगस्त	१९७७
बड़ोदरा	१६, १७ दिसम्बर	१९७७
जयपुर	२० अप्रैल	१९७८
जयपुर	२४ अप्रैल	१९७८
बंगलूर	२६, २७ सितम्बर	१९७८
भोपाल	१९, २० फरवरी	१९७९
वाराणसी	२८, २९ अक्टूबर	१९७९
पुणे	१८ जनवरी	१९८०
कटक	२७, २८ अप्रैल	१९८०
टाटानगर	८, ९ सितम्बर	१९८०
कलकत्ता	६ मार्च	१९८१
कलकत्ता	९ मार्च	१९८१
बम्बई	५, ६ जून	१९८१
दिल्ली	२४, २५ नवंबर	१९८१
शिमला	२६, २७, २८ अप्रैल	१९८२
अलवाय	२९, ३० नवम्बर	१९८२
मथुरा	२८, २९, ३० अप्रैल	१९८३
दिल्ली	२०, २१, २२ अगस्त	१९८३
हैदराबाद	७, ८ जनवरी	१९८४
हैदराबाद	१२, १३ जनवरी	१९८४
दिल्ली	१९, २० अप्रैल	१९८४
इन्दौर	२८ अक्टूबर	१९८४
कोटा	१२, १३, १४ जुलाई	१९८५
बम्बई	३० नवम्बर,	
	१, २ दिसम्बर	१९८५
जम्मू	२, ३ मई	१९८६
हुबली	२३, २४, २५ सितम्बर	१९८७
पटना	२, ३, ४ अप्रैल	१९८७
दिल्ली	२१, २२, २३ अगस्त	१९८७
बंगलौर	२५ दिसम्बर	१९८७
बंगलौर	२९ दिसम्बर	१९८८
जयपुर	१२, १३ अप्रैल	१९८८
करनाल	२७, २८, २९ सितंबर	१९८९
कलकत्ता	१८, १९, २० अप्रैल	१९८९
हरिद्वार	२५, २६, २७ सितंबर	१९८९
नागपुर	४, ५, ६ फरवरी	१९९०
भोपाल	३, ४, ५ जुलाई	१९९०
बड़ोरा	२० फरवरी	१९९१
बड़ोदरा	२३ फरवरी	१९९१
कोटा	२७, २८ अगस्त	१९९१
नागपुर	२५ फरवरी	१९९२
कटक	१३, १८ अगस्त	१९९२
दिल्ली	२६, २७ फरवरी	१९९३
गाजियाबाद	६, ७ सितम्बर	१९९३
उज्जैन	८, ९, १० जनवरी	१९९४
धनबाद	१७ मार्च	१९९४
धनबाद	२१ मार्च	१९९४
राजकोट	१८, १९, २० अगस्त	१९९४
बालाजी तिरुपति	२६, २७, २८ जनवरी	१९९५
लुधियाना	१८, १९, २० जून	१९९५

भारतीय मजदूर संघ की प्रदेशशः यूनियनें तथा सदस्यता दि० ३०.६.९४

प्रदेश	श्रमसंघ	सदस्यता
आंध्र	३४६	६,६९,२५६
आसाम	२६	१,२७,१४०
अरुणाचल	१	१७५
बिहार	१८२	४,६६,५७०
चण्डीगढ़	१३	५,०००
दिल्ली	१०७	८,०१,७००
गोवा	८	९,८७६
गुजरात	११३	३१,१३०
हरियाणा	१५७	८३,३९०
हिमाचल प्रदेश	५४	४०,२५०
जम्मू-काश्मीर	४२	१९,२२६
कर्नाटक	१३२	९७,११०
केरल	१८२	१,०१,९३८
मध्य प्रदेश	२३६	२,३७,९०३
महाराष्ट्र	२५५	२,९९,२४३
नागालैंड	१	२५०
उड़ीसा	६७	५१,३४०
पांडेचेरी	२	८००
पंजाब	२१६	१,५७,८८०
राजस्थान	४३३	३,६५,५०९
त्रिपुरा	१	४५०
तमिलनाडु	५७	४२,३४०
उत्तर प्रदेश	५७३	६,१९,३०६
विदर्भ	१०८	१,०५,६०८
पं० बंगाल	१९५	१,७९,१८०
योग	३,५०७	४५,१२,६००

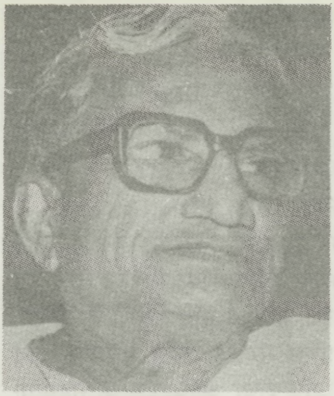

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक

श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी

मान्यवर दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का जन्म दीपावली के शुभ पावन पर्व पर १० नवम्बर १९२० को महाराष्ट्र में विदर्भ प्रान्त के आर्वी गाँव में हुआ था। उनके पिता स्वर्गीय श्री बापू राव दाजी ठेंगड़ी वर्धा जिले के प्रसिद्ध वकील थे जिन्होंने अपने परिश्रम के बलबूते पर समाज में प्रतिष्ठा एवं धन अर्जित किया था। स्वतंत्रता एवं देशप्रेम बचपन से ही दत्तोपंत जी के रक्त में संचार करता रहा है। बचपन में गठित वानर सेना के अध्यक्ष के रूप में वह सक्रिय रहे और कालेज में पहुँचते-पहुँचते आपका विभिन्न विचारधाराओं से सम्पर्क स्थापित हो चुका था। अपने कालेज जीवन में श्री ठेंगड़ी जी सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के नेता माने जाते थे। अपने मितभाषी मृदु स्वभाव के पुत्र को उनके पिता जी पढ़ा-लिखा कर अपने समान वकील बनाना चाहते थे। लेकिन ठेंगड़ी जी को छल-प्रपंच से भरे संसार के वंचक मार्ग आकर्षित नहीं कर सके। अतः भोगवादी जीवनधारा से पराङ्मुख होकर उन्होंने संघ के प्रचारक के रूप में अपना तन-मन, विद्या-बुद्धि सभी कुछ भारतमाता की सेवा में अर्पित कर दिया। श्री ठेंगड़ी जी १९४१ में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जीवनव्रती प्रचारक के रूप में संघ कार्य का विस्तार करने के लिए घर का मोह छोड़कर निकल पड़े थे।

मान्यवर ठेंगड़ी जी १९४२ से ४४ तक केरल प्रान्त, १९४५ से ४७ तक कलकत्ता हावड़ा तथा १९४८ से ४९ तक बंगाल एवं आसाम प्रान्त में संघ के प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे हैं। वे १९४९ से ५४ तक हिन्दुस्थान समाचार समिति के संगठन मंत्री रहे हैं और विश्व हिन्दू परिषद् के आजीवन सदस्य हैं। कालीकट में केरल प्रान्त के राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के १९४२ में सम्पन्न हुए प्रान्तीय अधिवेशन के वह प्रधान रहे और भारतीय बुद्ध महासभा के सहयोगी सदस्य हैं। श्री ठेंगड़ी जी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संस्थापक सदस्य हैं और १९५० में विदर्भ प्रान्त विद्यार्थी परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। भारतीय जनसंघ में १९५१ से १९५४ तक प्रादेशिक संगठन मंत्री मध्य प्रदेश एवं

१९५५ में जनसंघ के अध्यक्ष पंण्डित प्रेमनाथ जी डोगरा के निजी सचिव तथा १९५६ से ५७ तक दक्षिण भारत के क्षेत्रीय संगठन मंत्री के नाते कार्य करते रहे हैं।

वे सन् १९४९ से ५१ तक आई० एन० टी० यू० सी० में १० उद्योगों से सम्बन्धित यूनियनों के पदाधिकारी रहे और अक्टूबर १९५० में इंटक की अखिल भारतीय जनरल कौन्सिल के सदस्य चुने गये तथा जो पुराना मध्य प्रदेश है उसके १९५०–५१ के कार्यकाल में प्रादेशिक संगठन मंत्री मनोनीत किये गये थे। मान्यवर ठेंगड़ी जी ने १९५२–५५ में ऑल इण्डिया बैंक एसोसिएशन में काम किया और इससे सम्बन्धित कुछ यूनियनों के पुराने मध्य प्रदेश के मंत्री भी रहे हैं। विविधताओं से भरे अनेक दायित्वों का निर्वहन करते हुए १९५४–५५ में ऑल इण्डिया आर० एम० एस० एम्पलाईज यूनियन तृतीय श्रेणी के सेन्ट्रल सर्किल के अध्यक्ष, रिटायर्ड रेलवेमेन्स फेडरेशन के प्रथम संरक्षक, ऑल इण्डिया रेलवे स्टेनोग्राफर ऐसोसिएशन के संरक्षक, इण्डियन एकेडेमी ऑफ लेबर आर्बिट्रेटर्स के सहयोगी सदस्य, ऑल इण्डिया रेलवे टेलीग्राफ स्टाफ कौन्सिल के संरक्षक, लोको मैकेनिकल आर्टीजन स्टाफ एसोसिएशन ईस्टर्न रेलवे के संरक्षक, टैक्सटायल टैकनीशियन्स ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया के आजीवन सदस्य और फैडरेशन ऑफ आल इण्डिया पेंशनर्स ऐसोसिएशन के संरक्षक हैं। सन् १९५९ में उन्होंने ऑल इण्डिया इंश्योरेन्स कारपोरेशन फील्ड वर्कर्स एसोसिएशन के अखिल भारतीय अधिवेशन का सभापतित्व भी किया था। सन् १९५४ से ५५ तक मध्य प्रदेश टेनेन्ट्स एसोसिएशन के संगठन मंत्री और सन् १९५३ से ५६ तक डॉ० अम्बेडकर जयन्ती उत्सव समिति, नागपुर के सदस्य, शेड्यूल्ड कास्ट रिक्शा पुलर्स कोआपरेटिव ट्रान्सपोर्ट सोसायटी लिमिटेड दिल्ली के उपाध्यक्ष, ऑल इण्डिया ट्रेवलर्स एण्ड ट्रान्सपोर्ट रिलीफ एसोसिएशन के आजीवन सदस्य, सन् १९५६ में साकोली तालुका शेतकरी (कृषक) परिषद् के सभापति, सन् १९५३ से ५५ तक मध्य प्रदेश हैण्डलूम्स वीवर्स कांग्रेस के सलाहकार, सन् १९५३ से ५५ तक विदर्भ बुनकर कामगार संघ के सलाहकार, सन् १९५३ से ५४ तक छुई खदान गोलीकाण्ड पीड़ित सहायता समिति के मंत्री, छत्तीसगढ़ मर्ज स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स की कार्यकारिणी के सदस्य, सन् १९५२ में नागपुर नगर महापालिका संयुक्त नागरिक मोर्चा के संयोजक एवं जिला परिषद् कानपुर के सदस्य रह चुके हैं।

मान्यवर ठेंगड़ी जी मार्च १९६४ से उत्तर प्रदेश से राज्य सभा के सदस्य के रूप में दो बार चुने गये हैं। विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा करके श्री ठेंगड़ी जी ने विश्व के मानव मन का सूक्ष्म अध्ययन भी किया है। विभाजन के तुरन्त पश्चात् पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्ला देश) में उनका प्रवास कार्यक्रम हुआ था। अपने संसदीय कार्यकाल की अवधि के दौरान श्री ठेंगड़ी जी को विदेशों के मजदूर आन्दोलनों का अध्ययन करने का सुअवसर मिला है। सन् १९६८ की सोवियत संघ एवं हंगरी की यात्रा इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रही है। सन् १९७७ में जिनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में उनको भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। यूगोस्लाव ट्रेड यूनियन के निमंत्रण पर वहाँ के श्रमिकीकरण प्रयोग के अध्ययन हेतु यूगोस्लाविया और १९७९ में अमरीका सरकार के निमंत्रण पर वहाँ के ट्रेड यूनियन आन्दोलन का अध्ययन करने के लिए अमेरिका की यात्रा, कनाडा और ब्रिटेन का प्रवास एवं अप्रैल १९८५ में चीन के मजदूर संगठन ऑल चायना

फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (ए० सी० एफ० टी० यू०) के निमंत्रण पर भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व श्री ठेंगड़ी जी ने किया था और उस समय २८ अप्रैल १९८५ को चाइना ने अपने बीजिंग (पीकिंग) रेडियो से उनका संदेश भी प्रसारित कराया था। १९८५ में ही जकार्ता में सम्पन्न आई० एल० ओ० की दसवीं रीजनल कान्फ्रेन्स हेतु इण्डोनेशिया की यात्रा के अतिरिक्त उन्होंने बर्मा, थाइलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, मिश्र, केनिया, युगाण्डा तथा तन्जानिया का भी भ्रमण किया है।

२३ जुलाई १९५५ से वह भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक, जन्मदाता एवं महामंत्री के रूप में विश्व के श्रम संगठनों के गगन पर सूर्य की तरह उदित हुए। वे भारतीय मजदूर संघ की आत्मा हैं। भारतीय मजदूर संघ के अलावा सामाजिक समरसता मंच, भारतीय किसान संघ और ग्राहक पंचायत के जन्मदाता भी वही हैं। स्वदेशी जागरण मंच और सर्व पंथ समादर मंच आदि ऐसी अनेक और भी संस्थाएँ है जो मान्यवर ठेंगड़ी जी की छत्रछाया एवं मार्गदर्शन में जन्मी, पली और बड़ी हुई हैं।

भारतीय इतिहास, दर्शन, अर्थनीति, समाजनीति, राजनीति आदि अनेक विषयों में पारंगत तथा संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, बंगाली तथा मलयालयम भाषाओं पर पूरा अधिकार रखने वाले अत्यन्त सादा व सरल मृदुभाषी मजदूर नेता श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का पूरे भारतवर्ष में सभी लोग अत्यधिक श्रद्धा व सम्मान करते हैं। श्री ठेंगड़ी जी के अविश्रान्त ध्येयनिष्ठ जीवन से स्फूर्ति लेकर देश के हरएक कोने से राष्ट्रभक्ति से उद्वेलित मजदूरों का विशाल कारवाँ भारतीय मजदूर संघ के भगवा ध्वज को नील गगन में फहराते हुए द्रुतगति से बढ़ता ही रहा है। मान्यवर ठेंगड़ी जी के विनम्र व्यक्तित्व, संगठन-कुशलता, कुशाग्र एवं मेधावी प्रतिभा-चिन्तन और मार्गदर्शन से भारतीय मजदूर संघ दिन दूने रात चौगुने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है।

विदेश-यात्रा हो, सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे कार्य हों, लेखन या भाषण हो, श्री ठेंगड़ी जी के विचार और कार्य की आधारभूमि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उसका ध्येय एवं कार्य ही हैं। सार्वजनिक जागरण के अनेक क्षेत्रों में सक्रिय उनकी मूल प्रेरणा का स्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं परमपूजनीय श्री गुरु जी का निकट का सहवास है। अपने राष्ट्रीय अतीत, वर्तमान और भविष्य की ओर देखने का श्री ठेंगड़ी जी का दृष्टिकोण एक सार्वभौम, समृद्ध और परम वैभवशाली हिन्दू राष्ट्र की संकल्पना को तर्कशुद्ध और इतिहास-शुद्ध सक्षम आधार प्रदान करती है। रहन-सहन की सर्वमान्य सरलता, ध्येयवादी राष्ट्र-समर्पित तपस्वी जीवन, तत्वचिंतन की गहराई, लक्ष्य की स्पष्टता, ध्येय-साधना में सातत्य और कार्य की सफलता में अडिग विश्वास के धनी, कुशल संगठक श्री ठेंगड़ी जी की दिनचर्या अति व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने समय-समय पर अत्यन्त उपयोगी लेखन कार्य किया है। वे सिद्धहस्त लेखक हैं। विभिन्न विषयों पर उनके विचार पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। समाज के कमजोर वर्ग और पीड़ित, शोषित श्रमजीवियों की आर्थिक दशा में सुधार लाने के लिए उन्होंने केवल विचार ही नहीं दिये वरन् देशभर में अन्याय, अत्याचार, विषमता और दीनता से जूझने के लिए कर्मठ व लगनशील कार्यकर्ताओं का निर्माण करने में भी वे सफल हुए हैं।

श्रद्धेय ठेंगड़ी जी के प्रयास से सगूचे देश में विश्वकर्मा जयन्ती को राष्ट्रीय श्रम दिवस

के रूप में सभी स्वीकार करने लगे हैं और देश के मजदूर-जगत् में स्वदेश-भक्ति एवं भारतीयता की अलख जग गई है और भारतमाता की जय के नारे भी गूँजने लगे हैं। काम और आराम यह मजदूरों का मौलिक अधिकार है, पैसे और पसीने की बराबर की साझेदारी है अतएव मजदूर भी अपने-अपने उद्योगों का मालिक है, उद्योगों का राष्ट्रीयकरण की जगह श्रमिकीकरण होना चाहिए—जैसे सूत्र-बिन्दु भारत के मजदूर-जगत् के मानस में उनके द्वारा ओजस्वी एवं भावपूर्ण प्रभावी ढंग से भरे गये हैं। राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण और श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण यह त्रिसूत्र मान्यवर ठेंगड़ी जी का ही दिया हुआ है। गरीबी और बेकारी से मुक्ति पाने के लिए पूँजीप्रधान नहीं तो श्रमप्रधान अर्थ-रचना हमारे देश की जनता की मौलिक आवश्यकता है यह विचार लेकर भारतीय मजदूर संघ उनके मार्गदर्शन में उत्साह, उमंग के साथ सफलतापूर्वक आगे और आगे बढ़ता ही जा रहा है।

साईं इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाय।
आप न भूखा मैं रहूँ अतिथि न भूखा जाय॥

● ● ●

पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम॥

राष्ट्रभक्ति खेल नहीं है। जब इसकी कसौटी का दिन आता है तो संसार के अप्रतिम लावण्य, नाते-रिश्ते एवं सांसारिक वैभव के सुनहले जीवन को बुद्ध से भी भीषण, दधीचि से भी दृढ़ तथा भीष्म पितामह की भयंकर प्रतिज्ञा से भी अधिक अचल बनकर एक ठोकर से ठुकरा देना पड़ता है। जो इसकी गम्भीरता को समझता है वही इस कठिन परीक्षा में सफल हो सकता है और वही अमृतपुत्र है।

● ● ●

हिमालय जिसका मस्तक, कश्मीर जिसका मुकुट, पंजाब व बंगाल जिसकी सबल भुजाएँ, उत्तर प्रदेश जिसका हृदयस्थल, गंगा व यमुना जिसके हार, विन्ध्याचल जिसका कटि प्रदेश, नर्मदा जिसकी करधनी, पूर्वी व पश्चिमी घाट जिसकी पुष्ट जंघाएँ, कन्याकुमारी जिसके चरण तथा हिन्दु महासागर जिन चरणों को पखारता है—

वह है मेरी वन्दनीया भारत माँ!

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ का इतिहास

श्रमिक क्षेत्र में कम्यूनिस्ट एवं अन्य वामपंथी श्रमिक नेताओं व उनके अराष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं गैरजिम्मेदाराना व्यवहार एवं INTUC (इंटक) की सरकारपरस्त एवं मिलमालिकों की जीहुजूरी करने वाली नीति के दुष्परिणामों को देखकर १५ नवम्बर १९५३ को उत्तर प्रदेश के औद्योगिक केन्द्र कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश नाम से एक यूनियन की स्थापना की गयी। इस संगठन का उद्देश्य श्रमिकों में राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न करते हुए उनके आर्थिक हितों की रक्षा करना था। इसका पंजीकरण २१ दिसम्बर १९५३ को हो गया। श्री हंसदेव सिंह गौतम इसके अध्यक्ष थे और श्री रामकृष्ण त्रिपाठी मंत्री थे। अपने जन्मकाल से ही यह यूनियन उत्तर प्रदेश के सभी कर्मचारियों के लिए बनायी गयी थी, अतएव महासंघ (Federation) की आवश्यकता को पूर्ण करने में भी सक्षम थी। लेकिन जब २३ जुलाई १९५५ को भोपाल में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी के पावन जन्मदिवस पर मान्यवर दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण पर आधारित एक अखिल भारतीय मजदूर संगठन के निर्माण की दृष्टि से श्रमिक नेताओं का आह्वान किया तब कानपुर के हमारे यह नेता भी पीछे नहीं रहे और भोपाल से स्फूर्ति लेकर महासंघ की स्थापना के लिए उत्तर प्रदेश में भी प्रयत्नशील हुए। फलस्वरूप २४ फरवरी १९५७ को कानपुर में पाँच पंजीकृत यूनियनों के सहयोग से भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेशीय शाखा की स्थापना की गयी। इसको उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्याप्त ननुच (आनाकानी) के बाद और वह भी भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के आमरण अनशन पर बैठने के बाद १९ दिसम्बर १९६० को मान्यता प्रदान की। आमरण अनशन पर बैठने वालों में श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री भगवतशरण रस्तौगी, श्री हंसदेव सिंह गौतम और श्री शारदाप्रसाद त्रिपाठी आदि कार्यकर्ता प्रमुख रूप से थे।

इस प्रकार भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश में अपने जन्मकाल से ही शक्ति-प्रदर्शन, आन्दोलन एवं पौरुष की अभिव्यक्ति से मूल रूप में जुड़ा हुआ है, और इसके फलस्वरूप हम लोगों ने सत्यमेव जयते और श्रमेव जयते के मंत्र की सार्थकता को समझने का प्रयास किया है।

जो कार्यकर्ता मान्यवर ठेंगड़ी जी के आह्वान पर उत्तर प्रदेश से २३ जुलाई १९५५ को भोपाल गये थे उनमें से श्री ठाकुर दास जी साहनी, रामकृष्ण त्रिपाठी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी, श्री राजामोहन अरोड़ा, एवं श्री शिवकुमार जी त्यागी के नाम अभी

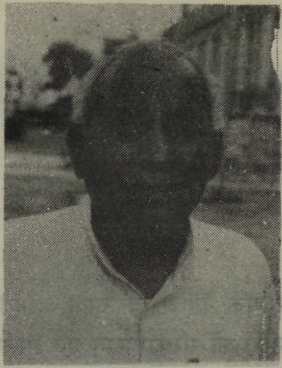

श्री रामप्रकाश मिश्रा
राज०, म०प्र०, उड़ीसा प्रान्त प्रभारी

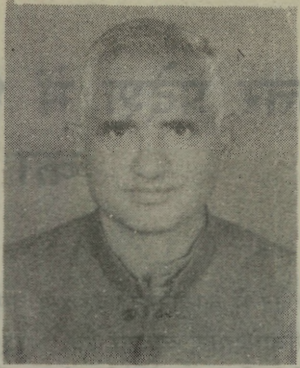

श्री देवनाथसिंह (वाराणसी)
महामन्त्री भा०म०सं० उत्तर प्रदेश

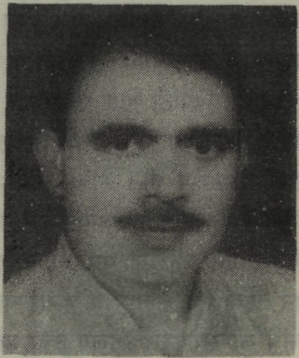

श्री अत्रिदेव तिवारी (गोरखपुर)
प्रदेश मन्त्री

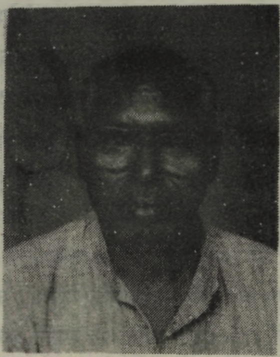

श्री रामदौर सिंह
प्रभारी एवं राष्ट्रीय मन्त्री भा०म०सं० उ०प्र०

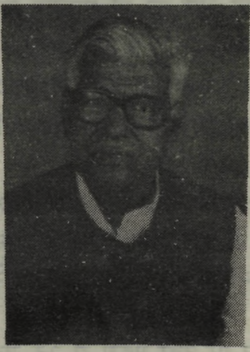

श्री ओमप्रकाश गौतम (बरेली)
महामन्त्री अ०भा० सुगर मिल मजदूर संघ

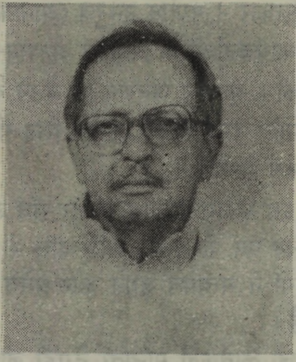

श्री गोपालचन्द बनर्जी (प्रयाग)
प्रान्तीय उपाध्यक्ष

भी स्मरण हैं। भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की इस ऐतिहासिक आम सभा में प्रथम भाषण उत्तर प्रदेश के श्रीमान शिव कुमार त्यागी जी का हुआ था।

उत्तर प्रदेश में जिन श्रमिक नेताओं ने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना में सहयोग दिया तथा प्रारम्भिक कठिनाइयों को झेलते हुए उसको आगे प्रगति की ओर बढ़ाया और जिन पर आज भी भारतीय मजदूर संघ को गर्व है वे हैं—श्री ठाकुर दास साहनी, परमात्मा चरण सक्सैना, श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, श्री शिवकुमार त्यागी, श्री ईश्वर दयाल सक्सैना, श्री हंसदेव सिंह गौतम, श्री यज्ञदत्त शर्मा तथा श्री भगवत शरण रस्तोगी।

सन् १९६० तक महासंघ को मान्यता न मिलने के कारण प्रदेश के अन्य जिलों व कारखानों में यूनियन की स्थापना करना तथा उनको भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध करना सम्भव नहीं था। अतएव स्वाभाविक ही इससे सम्बद्ध यूनियनों की संख्या प्रारम्भ में कम रही और सारे कार्य व हलचल का केन्द्र कानपुर तक ही सीमित रहा। फिर भी उस समय लोहा उद्योग में लगे हुए कर्मचारियों का एक विशाल सम्मेलन ५ जनवरी सन् १९५८ को कानपुर में किया गया जिसमें हजारों की संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया था।

उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ प्रान्तीय अधिवेशन तथा समय-समय पर होने वाले प्रतिनिधि सभा के सम्मेलन भी कानपुर में ही करने पड़े थे।

२४ फरवरी १९५७ को जब कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेशीय शाखा का गठन किया गया तब उसके संयोजक श्री राम कृष्ण त्रिपाठी थे। चेयरमैन श्री परमात्मा चरण सक्सैना एवं प्रदेश मंत्री श्री राम कृष्ण त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष श्री भगवत शरण रस्तोगी को रखा गया था। श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री शिवकुमार त्यागी, श्री अयोध्या नाथ एवं श्री रामकरण सिंह सदस्य मनोनीत किये गये थे। उस समय प्रादेशिक कार्यालय १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर में स्थापित किया गया। जिन पाँच यूनियनों को लेकर भारतीय मजदूर संघ की उत्तर प्रदेश में स्थापना की गई थी वह यह थीं—

१. भारतीय मजदूर संघ, कानपुर
२. बुशवेयर कर्मचारी यूनियन, कानपुर।
३. आरा मशीन मजदूर यूनियन, कानपुर
४. भारतीय कैमीकल्स मजदूर संघ, कानपुर एवं
५. नागरथ आयल (पेण्ट्स) मिल मजदूर यूनियन, कानपुर

इनकी अनुमानतः सदस्य संख्या लगभग ५०० थी। बाद में तो लोहा एवं इन्जीनियरिंग उद्योग में भी काम प्रारम्भ हुआ। उत्तर प्रदेश में कानपुर के अलावा अन्य स्थानों पर कार्य खड़ा करने के लिए—

१. गोरखपुर क्षेत्र के लिए श्री मिश्री लाल जी
२. लखनऊ क्षेत्र के लिए श्री शिव कुमार जी त्यागी
३. आगरा क्षेत्र के लिए श्री राजा मोहन अरोड़ा
४. मेरठ क्षेत्र के लिए श्री जगमोहन लाल गर्ग
५. बरेली क्षेत्र के लिए श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट, देहरादून (वर्तमान में आप उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सम्माननीय कार्यकारी सभापति हैं)

६. प्रयाग क्षेत्र के लिए श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी एवं

७. कानपुर के लिए श्री राम कृष्ण त्रिपाठी

को संगठक मनोनीत किया गया था।

चैयरमैन श्री परमात्मा चरण जी सक्सैना का १९ जनवरी १९५८ को देहान्त हो गया। अतएव जब दूसरे वर्ष प्रान्तीय अधिवेशन २० फरवरी १९५८ को कानपुर में हुआ तब श्री भगवत शरण जी रस्तोगी को चेयरमैन निर्वाचित किया गया और श्री अयोध्यानाथ को कोषाध्यक्ष का कार्यभार दिया गया।

भारतीय मजदूर संघ के पास उस समय अठारह पंजीकृत यूनियनें उत्तर प्रदेश में थीं—

१. कपड़ा मिल मजदूर संघ, कानपुर
२. ब्रुश वेयर कर्मचारी संघ, कानपुर
३. आरा मशीन मजदूर यूनियन, कानपुर
४. लोहा मिल कर्मचारी यूनियन, कानपुर
५. नैनी इन्जीनियरिंग कर्मचारी संघ, नैनी, इलाहाबाद
६. ट्रंक मेकर्स एण्ड ब्लैकस्मिथ यूनियन, देहरादून
७. स्वदेशी मिल मजदूर संघ, नैनी, इलाहाबाद
८. वाराणसी सिल्क मिल्स श्रमिक संघ, वाराणसी
९. भारतीय आयरन एण्ड इन्जीनियरिंग मजदूर संघ, कानपुर
१०. भारतीय कैमीकल मजदूर संघ, कानपुर

आदि के नाम प्रमुख रूप में अभी भी स्मरण हैं। २ अप्रैल १९६० को नारायणी धर्मशाला, परेड, कानपुर में प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा (General Council) का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उस समय प्रादेशिक अध्यक्ष श्री नित्यानन्द स्वामी, देहरादून थे। जब प्रधानमंत्री श्री रामकृष्ण त्रिपाठी ने कार्य करने में अपनी असमर्थता के कारण ६ जुलाई १९६० को प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया तब २८ अगस्त १९६० को सम्पन्न हुई प्रादेशिक कार्य समिति ने उनके त्यागपत्र को स्वीकार करते हुए सर्वसम्मति से मान्यवर बड़े भाई जी (श्री राम नरेश सिंह जी) को प्रधानमंत्री निर्वाचित किया।

२०, २१ व २२ अक्टूबर १९६० को नारायणी धर्मशाला, कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश का चतुर्थ प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री नित्यानन्द स्वामी, देहरादून को प्रान्तीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस अधिवेशन में लखनऊ, गोंडा, कानपुर, मेरठ, सहारनपुर, बाँदा, देहरादून एवं वाराणसी आदि से प्रतिनिधि बन्धु उपस्थित हुए थे।

उस समय प्रमुख रूप से सिल्क मिल्स श्रमिक संघ वाराणसी, राजमजदूर संघ सीतापुर, नाविक जल मजदूर संघ बाँदा, आरा मशीन मजदूर यूनियन, कानपुर, ब्रुशवेयर कर्मचारी यूनियन कानपुर, एन० ई० आर० पोर्टर्स ऐसोसिएशन गोरखपुर, नागरथ पेण्ट्स एण्ड आयल वर्कर्स यूनियन कानपुर, ट्रंक मेकर्स एण्ड ब्लेक स्मिथ यूनियन देहरादून, आयरन एण्ड स्टील मजदूर यूनियन कानपुर, भारतीय कैमीकल्स मजदूर संघ कानपुर एवं भारतीय आयरन एण्ड इन्जीनियरिंग मजदूर संघ कानपुर आदि यूनियनें थीं।

६ व ७ मई १९६१ को वाराणसी के टाउन हाल में भारतीय मजदूर संघ उ०प्र० की प्रतिनिधि सभा का द्विदिवसीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उस समय तक रिक्शाचालक, सफाई कर्मचारी, चीनी उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, गन्ना सहकारी समितियाँ, राज्य कर्मचारी, जल-कल मजदूर, नाविक मजदूर, स्वदेशी काटन मिल कानपुर, एल्यूमीनियम कारखाना मिर्जापुर, धातु खाना, ढरैय्या मजदूर मिर्जापुर, बर्तन उद्योग मुरादाबाद, कपड़ा छपाई उद्योग के मजदूर फर्रुखाबाद, आगरा शू उद्योग, आर्डिनैन्स फैक्ट्री मुरादाबाद, आरा मशीन देहरादून, दुकान कर्मचारी ऋषिकेश, लालटेन उद्योग के कर्मचारी मोदीनगर (मेरठ), चूड़ी उद्योग फिरोजाबाद, साहू कैमीकल्स वाराणसी और वाराणसी सिल्क उद्योग के मजदूरों की आवाज एवं माँगों को उठाने में भारतीय मजदूर संघ समर्थ हो चुका था।

१४ अक्टूबर १९६१ को अचल भवन, आगरा में पाँचवा प्रान्तीय अधिवेशन हुआ और श्री लक्ष्मीनारायण सक्सैना को प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इसके बाद जैन धर्मशाला, देहरादून में १२ मई, १९६२ को प्रतिनिधि सभा की बैठक सम्पन्न हुई। नगरपालिका पुस्तकालय भवन गोरखपुर में १९, २० व २१ अक्टूबर १९६२ को भारतीय मजदूर संघ, उ०प्र० का छठा अधिवेशन सम्पन्न हुआ था। उस समय श्री वरमेश्वर पाण्डेय अध्यक्ष एवं मान्वयर रामनरेश सिंह जी प्रधानमंत्री घोषित किये गये थे। उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ के पास उस समय कुल ४१ यूनियनें थीं जो बढ़ते-बढ़ते १० हजार संख्या वाली ६८ यूनियनों का महासंघ हो गया था। अक्टूबर १९६२ में ही उत्तर प्रदेश चीनी मिल मजदूर संघ की स्थापना हुई और इसका प्रथम अधिवेशन १३ अप्रैल १९६३ को पडरौना में सम्पन्न हुआ।

२१ अक्टूबर १९६२ को गोरखपुर में सम्पन्न हुए अधिवेशन की नवनिर्वाचित कार्य-समिति की बैठक में—

कानपुर क्षेत्र के लिए श्री हंसदेव सिंह गौतम।
लखनऊ क्षेत्र के लिए श्री रक्षपाल सिंह, एम०एल०ए०
गोरखपुर क्षेत्र के लिए श्री सुधीर सिंह
प्रयाग क्षेत्र के लिए श्री ज्ञान चन्द एडवोकेट
बरेली क्षेत्र के लिए श्री लक्ष्मीनारायण जी
आगरा क्षेत्र के लिए श्री राजा मोहन अरोड़ा और
मेरठ क्षेत्र के लिए श्री सलेक चन्द जी

को संगठक नियुक्त किया गया।

२६, २७ व २८ अप्रैल १९६३ को सरस्वती शिशु मन्दिर गाजियाबाद में भारतीय मजदूर संघ की प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उस समय अपने पास १६ हजार सदस्यता वाली ११२ यूनियनें पूरे प्रदेश में कार्यरत थीं। साथ ही साथ प्रान्तीय स्तर के चार औद्योगिक महासंघ भी काम करने लगे थे—

१. उ०प्र० चीनी मिल मजदूर संघ
२. उ०प्र० दुकान कर्मचारी संघ
३. उ०प्र० टैक्सटायल मजदूर संघ एवम्
४. उ०प्र० इन्जीनियरिंग वर्कर्स फेडरेशन

खण्डेलवाल धर्मशाला, बरेली में ३ अक्टूबर १९६३ को सम्पन्न हुए सातवें अधिवेशन तक भारतीय मजदूर संघ उ०प्र० के पास १७५०० की सदस्यता वाली ११२ यूनियनें हो गयी थीं। इस अधिवेशन में लखनऊ के दादा विनय कुमार मुखर्जी को प्रान्तीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया जो कालान्तर में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हुए।

उ०प्र० चीनी मिल मजदूर संघ का तीसरा प्रान्तीय अधिवेशन तुलसीपुर (गोंडा) में हुआ जिसमें अध्यक्ष श्री रामचन्द्र वर्मा एडवोकेट, उपाध्यक्ष मान्यवर रामनरेश सिंह जी (बड़े भाई जी) और प्रधानमंत्री श्री सुधीर सिंह जी घोषित किये गये। श्री दिलीप नारायण सिंह और श्री घनश्याम दास गुप्ता को मंत्री तथा श्री सत्यनारायण प्रसाद खेतान को कोषाध्यक्ष बनाया गया था। ऐसे ही उत्तर प्रदेशीय विश्वविद्यालय कर्मचारी संघ का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन २३ व २४ फरवरी १९६४ को लखनऊ के मालवीय हाल में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, आगरा विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने भाग लिया था। इनके अध्यक्ष श्री टम्बरेश्वर प्रसाद एम० एल० ए०, उपाध्यक्ष श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी एवं श्री एस० पी० मित्तर लखनऊ तथा प्रधानमंत्री श्री आर० पी० चतुर्वेदी लखनऊ, मंत्री श्री वासुदेव मिश्रा कानपुर, श्री विजय प्रकाश गुरुकुल कांगड़ी निर्वाचित हुए और कार्यकारिणी में श्री राम नरेश सिंह जी कानपुर, श्री सियाराम जी आगरा, श्री शिव सिंह राठौर लखनऊ, श्री गोपाल देव टण्डन लखनऊ, श्री कामता प्रसाद लखनऊ, श्री शिव शंकर लखनऊ, श्री एम० ए० डेविड प्रयाग, श्री हमीद अहमद जुबैरी व श्री अब्दुल माबूद खाँ अलीगढ़, श्री भोलानाथ व श्री बेनी माधव जी इलाहाबाद चुने गये थे।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेशीय विद्यालय कर्मचारी संघ का द्वितीय अधिवेशन गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल, अमीनाबाद, लखनऊ में २० व २१ फरवरी १९६५ को सम्पन्न हुआ था।

वर्ष १९६४-६५ में लगभग बीस हजार सदस्यता संख्या वाली १२८ यूनियनें पूरे प्रान्त भर में भारतीय मजदूर संघ के पास थीं तथा बैंक व जीवन बीमा निगम के अलावा लगभग सभी प्रमुख उद्योगों में अपने कार्य का विस्तार हो गया था। १ मई १९६५ को उत्तर प्रदेश की प्रादेशिक महासमिति की सभा हाथरस में सम्पन्न हुई। उत्तर प्रदेश में उस समय तक २९ जिलों में भारतीय मजदूर संघ का कार्य कुछ न कुछ प्रारम्भ हो चुका था और लगभग बीस हजार सदस्य संख्या हो गयी थी।

इस वर्ष विश्वविद्यालय, विद्यालय, दुकान, टैक्सटायल, शुगर एवं इन्जीनियरिंग उद्योगों के प्रादेशिक महासंघों के अलग-अलग स्थानों पर अधिवेशन भी किये गये थे। मिर्जापुर व वाराणसी के कालीन उद्योग मजदूर संघ की सदस्यता हजारों में हो चुकी थी और शुगर मिलों में सशक्त व प्रभावी कार्य खड़ा हो गया था।

आगरा की माई थान धर्मशाला में २४ व २५ दिसम्बर १९६५ को भारतीय रेलवे मजदूर संघ का नामकरण संस्कार किया गया। इस ऐतिहासिक अधिवेशन में उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन, पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ, पूर्वी रेलवे कर्मचारी संघ, मध्य रेलवे कर्मचारी संघ, पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद्, दक्षिण-पूर्व रेलवे कर्मचारी संघ तथा दक्षिण रेलवे कार्मिक संघ आदि लगभग ५० हजार सदस्य संख्या वाले संघों के १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद शर्मा और स्वागत मंत्री श्री लोक नाथ अरोड़ा थे। मान्यवर दत्तोपंत जी ठेंगड़ी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया एवं मान्यवर दादा विनय कुमार मुखर्जी ने अध्यक्षता की थी। भारतीय रेलवे मजदूर संघ का विधान बनाने के लिए जो समिति गठित की गयी उसमें लखनऊ से श्री डी० एस० मिश्रा, वाराणसी के श्री रामजन्म पाण्डेय, नागपुर के श्री एल० जी० दबीर, भावनगर से श्री एम० एम० प्रताप, जमालपुर से श्री बालेश्वर प्रसाद शर्मा, विजय वाड़ा के श्री ए० सत्य नारायण तथा बम्बई से मध्य रेलवे कर्मचारी संघ के श्री अमलदार सिंह सदस्य चुने गये थे।

पश्चिम रेलवे के आगरा, मध्य रेलवे के झाँसी, पूर्व रेलवे के मुगलसराय, उत्तर रेलवे के लखनऊ, कानपुर, प्रयाग, वाराणसी, सहारनपुर, मुरादाबाद तथा पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर, वाराणसी, गोंडा, लखनऊ, फतेहगढ़ तथा आइजटनगर आदि प्रमुख केन्द्रों पर भारतीय रेलवे मजदूर संघ का कार्य विधिवत् रूप से प्रारम्भ हो चुका था और रेलवे में उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन, मध्य रेलवे कर्मचारी संघ, पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ एवं पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद् सुचारु रूप से कार्य करने लगी थीं।

वर्ष १९६४–६५ में आगरा व बरेली में रोडवेज कर्मचारियों के बीच में भी अपना कार्य प्रारम्भ हो गया था और गोरखपुर व प्रयाग में प्रारम्भ होने वाला था, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी यूनियन हरिद्वार में चल रही थी। और हाथरस में सूती मिल कर्मचारी संघ सुचारु रूप से अपना कार्य कर रहा था।

"भूख इंसान को गद्दार बना देती है" के जवाब में उस समय मान्यवर बड़े भाई जी ने कहा—

डालर हो या रूबल
चैक पीली हो या लाल
दाम, सिक्के हों या शोहरत
कह दो उनसे—
जो खरीदने आए है तुमको
हर भूखा इंसान, बिकाऊ नही होता है।"

वर्तमान वर्ष १९९५ की २३ जुलाई को भारतीय मजदूर संघ को स्थापित हुए चालीस वर्ष हो जायेंगे। अतएव इस वर्ष को भारतीय मजदूर संघ के चालीसवें वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। संगठन का योजनाबद्ध ढंग से विस्तार, कार्यकर्ताओं की संख्या एवं गुणवत्ता में वृद्धि, कृषि व ग्रामीण एवं असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को संगठित करने का प्रयास, भारतीय मजदूर संघ का कार्य जो महिलाओं के बीच में है उसका और अधिक विस्तार एवं उनके संगठन को भली प्रकार से खड़ा करना तथा भारतीय मजदूर संघ को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने के कार्यक्रमों की रचना की गयी है।

उत्तर प्रदेश के २५वें अधिवेशन के समय वाराणसी में प्रथम बार महिलाओं का सम्मेलन हुआ था। विगत चार वर्षों में महिलाओं में अपने कार्य का विस्तार हुआ है। कानपुर, झाँसी व वाराणसी में आंगनबाड़ी में अपना कार्य खड़ा हो गया है और ठीक प्रकार

से चल रहा है। कानपुर व वाराणसी में इनकी यूनियनें पंजीयन में हैं। कानपुर में बालबाड़ी में अपना अच्छा कार्य है। इसके अतिरिक्त विभिन्न उद्योगों में कार्यरत महिलाएँ अपने यहाँ चलनेवालीं भारतीय मजदूर संघ की यूनियनों में अधिकाधिक संख्या में सदस्य बनी हैं। प्रदेश कार्य समिति में भी चार महिलाएँ, महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। २५ सितम्बर १९९३ को देहरादून में, २३ दिसम्बर १९९३ को लखनऊ में एवं २६ दिसम्बर १९९३ को कानपुर में महिलाओं के क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुए हैं।

भारत सरकार के श्रम मंत्रालय द्वारा ३१ दिसम्बर १९८९ के आधार पर कराये गये सदस्यता सत्यापन में उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ ने ३५ उद्योगों में कार्यरत ४८८ यूनियनों की ५,१७,३६ सदस्यता का दावा किया था। केन्द्रीय श्रम विभाग द्वारा सत्यापित सदस्यता का जो परिणाम घोषित गया है उसके अनुसार कृषि को छोड़कर हमारी सत्यापित सदस्यता ३,७३,९५४ तथा कृषि की ७६,८७२ अर्थात् कुल ४,५०,८२६ है। इस प्रकार हमारे द्वारा दावा की गयी सदस्यता का ८७% से अधिक अपनी सत्यापित सदस्यता है।

उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी आगरा में पहली बार भारतीय मजदूर संघ उ० प्र० का पाँचवाँ प्रान्तीय अधिवेशन १४ व १५ अक्टूबर १९६१ को अचल भवन में हुआ था, १४ नवम्बर १९७६ को आपातकालीन परिस्थिति की भयानकता में दूसरी बार राजामण्डी रेलवे स्टेशन के पास धर्मशाला में सम्पन्न हुआ और अब तीसरी बार कमलानगर आगरा के सरस्वती शिशु मन्दिर के भवन में १३, १४ व १५ नवम्बर १९९४ को प्रदेश का छब्बीसवाँ प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ है।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या इस समय लगभग १४ करोड़ से भी अधिक है और क्षेत्रफल २,९४,१४३ वर्ग किलोमीटर है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में कुल ६६ जिले और २९४ तहसीलें, ८९७ विकास खण्ड, ७३,९१४ ग्राम सभाऐं एवं १,१२,२३२ ग्राम हैं। इनके अतिरिक्त ८ नगर निगम, २२९ नगर परिषद् तथा ४१८ टाऊन एरिया हैं। श्रम विभाग द्वारा पूरे उत्तर प्रदेश को १५ क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इस समय प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ की कुल ५५५ पंजीकृत यूनियनें हैं जिनकी सदस्य संख्या ५,४०,७८५ है। इस विशाल भूखण्ड वाले प्रदेश में सर्वत्र अपना काम फैल चुका है। पूर्व में शक्तिनगर सेबरही से लेकर पश्चिम में शामली, पिलखनी एवं सरसावा तक अपना कार्य फैला हुआ है। इसी प्रकार सुदूर दक्षिण में ललितपुर से भी १०० किलोमीटर दक्षिण में स्थित पिसनारी खदान से लेकर उत्तर में बलरामपुर गिरजापुरी तक तो कार्य है ही किन्तु इसके साथ ही साथ धुर उत्तर में पहाड़ के दुर्गम मार्गों को लाँघते हुए चीन की सीमा पर स्थिति धारचूला और तवाघाट तक भारतीय मजदूर संघ का गैरिक ध्वज लहरा रहा है। किन्तु फिर भी अभी ग्रामीण व खेतिहर मजदूरों में अपना काम बढ़ाने की आवश्यकता है।

इस समय उत्तर प्रदेश में केवल पहाड़ के दो जिले चमोली और उत्तरकाशी ऐसे हैं जहाँ पर अभी भी भारतीय मजदूर संघ की पंजीकृत यूनियन नहीं बनी है। वैसे काम तो सभी जिलों में है। प्रदेश कार्यकारिणी समिति की प्रान्तीय बैठक निश्चित एवं निर्धारित समय पर तीन-चार माह के अन्तराल पर होती रहती है। वर्तमान में पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की संख्या २५ है। कार्य के बढ़ते हुए विस्तार एवं प्रदेश के क्षेत्रफल को देखते हुए यह

संख्या निश्चित रूप से कम है। इस पर गम्भीरता से विचार भी किया जा रहा है। ६६ जिलों में से कुल ४८ जिलों में जिला समिति है तथा शेष जिलों में संयोजक हैं और इनमें भी जिला समिति गठित करने के प्रयास चल रहे हैं।

संगठनात्मक

वर्तमान में उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ को गतिशील बनाने के लिए जो संगठनात्मक परिवर्तन किये गये हैं वह इस प्रकार से हैं—

श्री विद्यासागर जी, सह संगठन मंत्री, ब्रज प्रदेश, केन्द्र आगरा।

श्री वीरेन्द्र जी, सह संगठन मंत्री, पश्चिम (मेरठ) प्रदेश, केन्द्र मुरादाबाद॥

श्री श्रीप्रकाश जी—सह संगठन मंत्री, केन्द्र कानपुर—प्रदेश कार्यालय की व्यवस्था व अवध प्रदेश के संगठन का कार्य।

श्री अम्बिका प्रसाद सिंह—सह संगठन मंत्री, इलाहाबाद क्षेत्र का दायित्व विशेष, साथ ही काशी प्रदेश संगठन का कार्य।

श्री प्रदीप चक्रवर्ती—मिरजापुर क्षेत्र प्रमुख।

श्री यशवन्त सिंह—मीरजापुर क्षेत्र सह क्षेत्र प्रमुख।

श्री लल्लन शुक्ल—वाराणसी-जौनपुर-भदोही जिले का काम।

श्री आर० एन० सिंह—गाजीपुर-मऊ-बलिया जिले का काम।

श्री अत्रिदेव तिवारी—गोरखपुर क्षेत्र।

श्री प्रेमसागर मिश्र—फैजाबाद क्षेत्र एवं कृषि मजदूर व असंगठित क्षेत्र।

श्री रामसूरत जी—लखनऊ क्षेत्र।

श्री बी० एन० मिश्रा—लखनऊ नगर का सरकारी काम।

श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र—आवासीय मंत्री एवं कानपुर क्षेत्र।

श्री महेन्द्र पाठक—झाँसी क्षेत्र।

श्री अशोक दिग्विजय—आगरा क्षेत्र।

श्री रामलोचन उपाध्याय—बरेली क्षेत्र।

श्री डी० डी० शर्मा—कुमायूँ क्षेत्र (नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़)

श्री जगदीश बाजपेयी—गाजियाबाद क्षेत्र।

श्री राजेश्वर दयाल शर्मा—मेरठ क्षेत्र।

श्री हरीश तिवारी—हरिद्वार जिला।

श्री कमलेश श्रीवास्तव—देहरादून क्षेत्र।

श्री शम्भूप्रसाद भट्ट—पौडी-गढ़वाल, चमोली, टिहरी एवं उत्तरकाशी जिले।

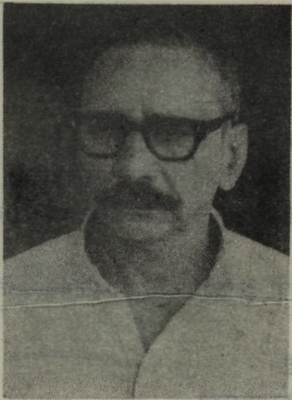

श्री वीरेन्द्र जी भटनागर
महामंत्री भा०म०सं० उ०प्र०

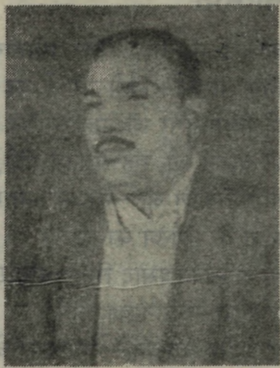

श्री राजमोहन अरोड़ा (आगरा)

श्री घनश्यामदास गुप्ता (शामली)
महामंत्री, भा०म०सं० उ०प्र०

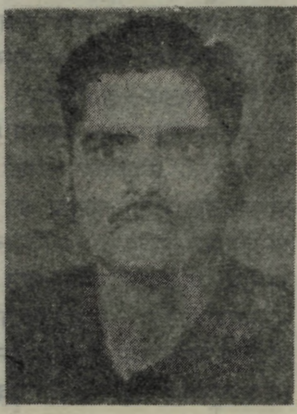

श्री रामकृष्ण त्रिपाठी
महामंत्री भारतीय इंजी० मजदूर संघ उ०प्र०

श्री सलेकचन्द जी
महामंत्री उ०प्र० इंजी० वर्कर्स फैडरेशन

श्री ब्रह्मदत्त त्यागी
मन्त्री भारतीय मजदूर संघ उ०प्र०

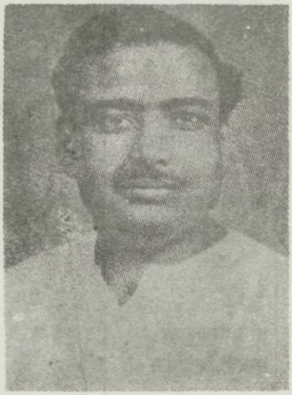

श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट (देहरादून)
अध्यक्ष भा०म०सं० उ०प्र०

श्री वरमेश्वर पांडेय एडवोकेट (वाराणसी)
अध्यक्ष भा०म०सं० उ०प्र०

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ के प्रादेशिक अधिवेशनों का विवरण

१५ नवम्बर १९५३ को कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश नाम से एक यूनियन की स्थापना की गयी।

२१ दिसम्बर १९५३ को उ०प्र० शासन के श्रम विभाग द्वारा इसको पंजीकृत किया गया। इसके अध्यक्ष थे स्वर्गीय श्री हंसदेव सिंह गौतम एवं मंत्री थे श्री रामकृष्ण त्रिपाठी।

२४ फरवरी १९५७ को कानपुर में पाँच पंजीकृज यूनियनों से भारतीय मजदूर संघ की उत्तर प्रदेशीय शाखा की स्थापना की गयी।

२९ दिसम्बर १९६० को उत्तर प्रदेश की सरकार ने पर्याप्त ननुच करने के बाद भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं के आमरण अनशन करने पर भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश को मान्यता प्रदान की। अपने पास उस समय १८ पंजीकृत यूनियनें थीं।

अधिवेशन क्रमांक	स्थान	तिथि	अध्यक्ष	महामंत्री
प्रथम	प्रादेशिक कार्यालय १४/१२ बम्बा रोड, कानपुर	२ मार्च १९५७ ई०	श्री पी०सी० सक्सैना	श्री रामकृष्ण त्रिपाठी
द्वितीय	,,	२० फरवरी, १९५८	श्री भगवतशरण रस्तोगी	,,
तृतीय	,,	रविवार २२ मार्च १९५९	श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट, देहरादून	,,
चतुर्थ	नारायणी धर्मशाला, कानपुर	२२ अक्टूबर, १९६०	,,	श्री रामनरेश सिंह (स्व० बड़े भाई जी)
पंचम	अचल भवन, आगरा	१४ व १५ अक्टूबर, १९६१	श्री लक्ष्मीनारायण सक्सैना, वकील साहब	,,
षष्ठ	नगर ालिका पुस्कालय भवन, गोरखपुर	१९, २० व २१ अक्टूबर, १९६२	श्री वरमेश्वर पांडेय	,,
सप्तम	खण्डेलवाल धर्मशाला, बरेली	२ व ३ अक्टूबर, १९६३	श्री विनयकुमार मुखर्जी, लखनऊ	,,
अष्टम	अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर	२, ३ व ४ अक्टूबर, १९६४	,,	,,
नवम	लखनऊ	९ व १० अक्टूबर, १९६५	,,	,,
दशम	वाराणसी	८ व ९ अक्टूबर, १९६६	,,	,,

अधिवेशन क्रमांक	स्थान	तिथि	अध्यक्ष	महामंत्री
ग्यारहवाँ	टाऊन हाल, मुजफ्फरनगर	९ व १० मार्च, १९६८	श्री विनयकुमार मुखर्जी, लखनऊ	श्री रामनरेश सिंह (स्व० बड़े भाई जी)
बारहवाँ	शाहजहाँपुर	२८ व २९ मार्च, १९६९	,,	,,
तेरहवाँ	राजर्षि टण्डन भवन, इलाहाबाद	२१ व २२ नवम्बर, १९७०	श्री ज्ञानचंद द्विवेदी, एडवोकेट, हाईकोर्ट इलाहाबाद	श्री रामप्रकाश मिश्र, कानपुर
चौदहवाँ	एस०डी० कॉलेज, अलीगढ़	२ व ३ अक्टूबर, १९७१	,,	,,
पंद्रहवाँ	बी०एच०ई०एल० रानीपुर, हरिद्वार	१७, १८ व १९ नवम्बर, १९७२	,,	,,
सोलहवाँ	रेणुकूट, मिर्जापुर	१८, १९ व २० नवम्बर, १९७३	,,	,,
सत्रहवाँ	कताई मिल, सहकारी नगर, बुलन्दशहर	२२ व २३ दिसम्बर, १९७४	,,	,,
अठारहवाँ	राजामण्डी रेलवे स्टेशन के पास दीप चंद जैन धर्मशला, आगरा	१४ नवम्बर, १९७६	श्री अर्जुन प्रसाद मिश्रा, एडवोकेट (वाराणसी)	श्री पं० रामप्रकाश मिश्रा
उन्नीसवाँ	कॉलेज कैम्पस, गाजियाबाद	७ व ८ जनवरी, १९७८	,,	श्री वीरेन्द्रस्वरूप भटनागर
बीसवाँ	नैनी, इलाहाबाद	२५, २६ व २७ नवम्बर, १९७८	,,	,,
इक्कीसवाँ	बरेली	१७ व १८ दिसम्बर, १९७९	,,	,,
बाईसवाँ	अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर	११, १२ व १३ अप्रैल, १९८२	,,	श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली
तेईसवाँ	कॉलेज कैम्पस, लखनऊ	१७ व १८ फरवरी, १९८५	,,	,,
चौबीसवाँ	कानपुर	२४ व २५ अप्रैल, १९८८	श्री डॉ० गजेन्द्र पाल शर्मा, अलिगढ़	श्री रामदौर सिंह, लखनऊ
पच्चीसवाँ	डी०ए०वी० डिग्री कॉलेज, वाराणसी	२१ व २२ अक्टूबर, १९९१	,,	श्री देवनाथ सिंह, वाराणसी
छब्बीसवाँ प्रान्तीय अधिवेशन	सरस्वती शिशु मन्दिर, कमला नगर, आगरा	१३, १४ व १५ नवम्बर, १९९४	,,	,,

प्रथम अधिवेशन

२ मार्च १९५७, कानपुर

२४ फरवरी १९५७ को भारतीय मजदूर संघ, उत्तर प्रदेशीय शाखा का गठन किया गया।

२ मार्च १९५७ को प्रादेशिक कार्यालय १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर में जनरल कौन्सिल का निर्वाचन—

चेयरमैन	श्री पी० सी० सक्सैना
प्रदेश मंत्री	श्री रामकृष्ण त्रिपाठी
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी
सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा
	श्री शिवकुमार त्यागी
	श्री अयोध्या नाथ
	श्री रामकरण सिंह

पूरे प्रान्त में कार्य विस्तार की दृष्टि से संगठन मंत्रियों की नियुक्ति—

गोरखपुर क्षेत्र	श्री मिश्रीलाल
लखनऊ क्षेत्र	श्री शिव कुमार त्यागी
आगरा क्षेत्र	श्री राजा मोहन अरोड़ा
मेरठ क्षेत्र	श्री जगमोहन लाल
बरेली क्षेत्र	श्री नित्यानंद स्वामी
कानपुर क्षेत्र	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी
प्रयाग क्षेत्र	श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी

द्वितीय वार्षिक अधिवेशन (चतुर्थ जनरल कौंसिल)

२० फरवरी १९५८

चेयरमैन	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
प्रधानमंत्री	श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, कानपुर
कोषाध्यक्ष	श्री अयोध्या नाथ, कानपुर
सदस्य	श्री यज्ञ दत्त शर्मा, कानपुर
	श्री शिवकुमार त्यागी, लखनऊ
	श्री रामकरण सिंह
	श्री मिश्री लाल, गोरखपुर
	श्री नित्यानन्द स्वामी, देहरादून

तृतीय वर्षिक अधिवेशन (छठी जनरल कौंसिल)

२२ मार्च १९५९, रविवार, भारतीय मजदूर संघ कार्यालय, बम्बा रोड दर्शनपुरवा, कानपुर

चेयरमैन	श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट, देहरादून
प्रधानमंत्री	श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, कानपुर
मंत्री	श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी, इलाहाबाद
	श्री बरमेश्वर पाण्डेय, वाराणसी
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
सदस्य	श्री आई० डी० सक्सैना, कानपुर
	श्री यज्ञदत्त शर्मा, कानपुर
	श्री रमाकान्त वाजपेयी, लखनऊ
	श्री ओम प्रकाश सारस्वत
	श्री बाबू लाल गुप्ता

चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन (अठारहवीं कार्य समिति)

२२ अक्टूबर १९६०, नारायणी धर्मशाला, कानपुर

प्रादेशिक अध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट, देहरादून
प्रधानमंत्री	श्री रामनरेश सिंह, कानपुर
मंत्री	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, वाराणसी
कोषाध्यक्ष	श्री भगवतशरण रस्तोगी, कानपुर
सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, कानपुर
	श्री मिश्रीलाल निषाद, गोरखपुर
	श्री पुरुषोदास मेहरोत्रा, सीतापुर
सदस्य	श्री अयोध्या नाथ
	श्री हंसदेव सिंह गौतम कानपुर
	श्री चन्द्र प्रकाश
	श्री रामकरण सिंह
	श्री रमाकान्त वाजपेयी

पंचम प्रान्तीय अधिवेशन

१४ व १५ अक्टूबर १९६१ ई०, अचल भवन, आगरा

अध्यक्ष	श्री लक्ष्मी नारायण एडवोकेट, बरेली
प्रधानमंत्री	श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भाई) १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर

मंत्री	श्री उदय भानु जैन, वकील, जौहरी बाजार, आगरा	
	श्री सुधीर सिंह, गोरखपुर	
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, एफ/जी-२ फजलगंज, कानपुर	
कार्यसमिति सदस्य	श्री हंसदेव सिंह गौतम	
	२७/२ श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर	
	श्री यज्ञदत्त शर्मा, ११९/१७२, ओमनगर, दर्शनपुरवा, कानपुर	
	श्री सुरेश चंद रस्तोगी	
	१४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर	
	श्री राजामोहन अरोड़ा, वंशीवट, माईथान, आगरा	
	श्री रामचन्द्र प्रसाद शाही	
	चीनी मिल श्रमिक वस्ती, बलरामपुर-गोंडा	
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर	
	श्री नरेन्द्रसिंह यादव, प्राध्यापक	
	तम्बाकूवालों का घेर, सहारनपुर	
	श्री पुरुषोत्तम लाल मेहरोत्रा, सीतापुर	
	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, एस ६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी	
	श्री नित्या नन्द स्वामी, ४७, लक्ष्मण चौक, देहरादून	
क्षेत्रीय संगठक	प्रयाग	श्री वरमेश्वर पाण्डेय
	गोरखपुर	श्री सुधीर सिंह
	लखनऊ	श्री पुरुषोत्तम दास मेहरोत्रा
	कानपुर	श्री सुरेश चंद रस्तोगी
	आगरा	श्री राजा मोहन अरोड़ा
	बरेली	श्री लक्ष्मी नारायण
	मेरठ	श्री नित्यानन्द स्वामी

छठा प्रान्तीय अधिवेशन

१९, २० व २१ अक्टूबर, १९६२ ई०, नगरपालिका पुस्तकालय भवन, गोरखपुर

अध्यक्ष	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, वाराणसी
उपाध्यक्ष	श्री लक्ष्मी नारायण एडवोकेट, बरेली
	श्री नित्यानन्द स्वामी, देहरादून
महामंत्री	श्री रामनरेश सिंह (बड़े भाई), कानपुर
मंत्री	श्री ज्ञानचंद द्विवेदी, प्रयाग
	श्री राजामोहन अरोड़ा, आगरा
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
सदस्य	श्री सुरेश चंद रस्तोगी, कानपुर

सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, कानपुर
	श्री हंसदेव सिंह गौतम, कानपुर
	श्री ईश्वर दयाल सक्सैना, कानपुर
	श्री सुधीर सिंह, गोरखपुर
	श्री ए० बेलेस्की
	श्री राम चंद शाही, बलरामपुर (गोंडा)
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँ
	श्री उदय भानु जैन, आगरा
	श्री सलेक चंद, गाजियाबाद
	श्री रघुनाथ सहाय जैन, गाजियाबाद
	श्री हंसराज नन्दा
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, सहारनपुर
	श्री पुरुषोत्तम दास मेहरोत्रा, सीतापुर
	श्री रक्षपाल सिंह, एम० एल० ए०
	श्री बशीर अहमद
	श्री ओम प्रकाश गौतम, हाथरस (अलिगढ़)

७वाँ प्रान्तीय अधिवेशन

२ व ३ अक्टूबर १९६३, खण्डेलवाल धर्मशाला, बरेली,

.अध्यक्ष	श्री विनय कुमार मुखर्जी, लखनऊ
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानंद स्वामी, देहरादून
	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, वाराणसी
महामंत्री	श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भाई), कानपुर
मंत्री	श्री ज्ञानचंद द्विवेदी, प्रयाग
	श्री राजामोहन अरोड़ा, आगरा
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
कार्यसमिति सदस्य	श्री हंसदेव सिंह गौतम
	श्री यज्ञदत्त शर्मा, कानपुर
	श्री लक्ष्मी नारायण सक्सैना, आगरा
	श्री लखन लाल अमर
	श्री सुरेश चंद रस्तोगी, लखनऊ
	श्री वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, बरेली
	श्री सुधीर सिंह, गोरखपुर
	श्री राधेमोहन सक्सैना, गोरखपुर
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँ

कार्यसमिति सदस्य	श्री रक्षपाल सिंह
	श्री ओम प्रकाश गौतम, हाथरस, अलीगढ़
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, सहारनपुर
	श्री रामचंद प्रसाद शाही, बलरामपुर (गोंडा)
	श्री पुरुषोत्तम दास मेहरोत्रा, सीतापुर

अष्टम प्रान्तीय अधिवेशन

२, ३ व ४ अक्टूबर १९६४ ई०, अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर

इस अधिवेशन में १०३ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और उस समय सहारनपुर में २१ यूनियनें थीं। मान्यवर ठेंगड़ी जी का सहारनपुर रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत करने के उपरान्त हजारों की संख्या में एक विशाल जुलूस निकाला गया था।

अध्यक्ष	श्री विनय कुमार मुखर्जी, ए० पी० सैन मार्ग, लखनऊ	
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी, एडवोकेट ४७ लक्ष्मी चौक, देहरादून	
	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, ५६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी	
महामंत्री	श्री रामनरेश सिंह, भारतीय मजदूर संघ कार्यालय २ नवीन मार्केट, परेड, कानपुर	
मंत्री	श्री ज्ञानचन्द द्विवेदी, एडवोकेट हाईकोर्ट १३, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद	
	श्री हंसदेव सिंह गौतम २७/२ श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर	
कोषाध्यक्ष	श्री भगवतशरण रस्तोगी, एफ जी/२ फजलगंज, कानपुर	
क्षेत्रीय संगठन मंत्री	कानपुर क्षेत्र	श्री यज्ञदत्त शर्मा ११९/१७२ ओमनगर, दर्शनपुरवा, कानपुर
	लखनऊ क्षेत्र	श्री भोमेन्द्र श्रीवास्तव ६ नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ
	बरेली क्षेत्र	श्री वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर दर्जी चौक, बड़ा बाजार, बरेली
	आगरा क्षेत्र	श्री ओमप्रकाश गौतम, २२/३ चन्द्रपुरी गोशाला रोड, हाथरस, जिला अलीगढ़
	मेरठ क्षेत्र	श्री सलेक चन्द जी मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर
कार्यालय मंत्री	श्री रामप्रकाश मिश्रा भा० म० संघ, २ नवीन मार्केट, परेड, कानपुर	

कार्यसमिति सदस्य श्री भैरव प्रसाद पाण्डेय, १०६/२७१ हीरागंज, कानपुर

श्री सुरेश चन्द रस्तोगी, एडवोकेट
इलैक्ट्रिक मोटर वर्क्स, फैजाबाद

श्री रामचन्द्र वर्मा, एडवोकेट, टेढ़ी गली चौक, फैजाबाद

श्री गौरी शंकर मिश्र, अध्यक्ष उ० प्र० दुकान कर्मचारी संघ
टालाटऊ आमल शालिग्राम, बड़ा बाजार, बरेली

श्री सुधीर सिंह, प्रधानमंत्री, उ० प्र० चीनी मिल मजदूर संघ
भा० म० संघ कार्यालय, जटेपुर पोखरा, गोरखपुर

श्री राधेमोहन सक्सैना, प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ
बी० एम० एस० कार्यालय, गोरखपुर

श्री दिलीप नारायण सिंह
श्रमिक वस्ती चीनी मिल, कठकुइयाँ, जिला देवरिया

श्री राम चन्द्र शाही
श्रमिक बस्ती चीनी मिल, बलरामपुर, जिला गोंडा

श्री राजा मोहन अरोड़ा, बंशीवट, माई थान, आगरा

श्री जगमोहन लाल गर्ग, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर

श्री रघुनाथ सहाय जैन, अध्यक्ष, उ० प्र० इंजीनियरिंग
वर्कर्स फैडरेशन, ५७६ बजरिया बाजार, गाजियाबाद

श्री निरंजन लाल, एडवोकेट, कलक्टरी कचहरी, मेरठ

नवम प्रान्तीय अधिवेशन

९ व १० अक्टूबर १९६५ ई०, छेदीलाल धर्मशाला, लखनऊ

अध्यक्ष	श्री विनय कुमार मुखर्जी, लखनऊ
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी, देहरादून
	श्री वरमेश्वर पाण्डेय, वाराणसी
	श्री रघुनाथ सहाय जैन
	श्री राम चन्द वर्मा
महामंत्री	श्री राम नरेश सिंह जी, कानपुर
मंत्री	श्री ज्ञान चंद द्विवेदी, प्रयाग
	श्री हंस देव सिंह गौतम, कानपुर
	श्री राजा मोहन अरोड़ा, आगरा
	श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरनगर
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर

कार्यसमिति सदस्य	श्री यज्ञ दत्त शर्मा, कानपुर
	श्री भैरव प्रसाद पाण्डेय, कानपुर
	श्री राम प्रकाश मिश्रा, कानपुर
	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी, कानपुर
	श्री वासुदेव प्रसाद मिश्रा, कानपुर
	श्री सुरेशचन्द रस्तोगी, लखनऊ
	श्री भोमेन्द्र श्रीवास्तव, कानपुर
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, देहरादून
	श्री रमाकान्त वाजपेयी
	श्री फूलचंद तिवारी
	श्री सुधीर सिंह, गोरखपुर
	श्री राधे मोहन सक्सैना
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँ
	श्री रामेश्वर दयाल शर्मा, आगरा
	श्री ओम प्रकाश गौतम
	श्री वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर
	श्री गोपी शंकर मिश्रा
	श्री वीरेन्द्र सिंह सोलंकी
	श्री सलेक चंद जी, गाजियाबद
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, सहारनपुर

१०वाँ वार्षिक अधिवेशन

८ व ९ अक्टूबर, १९६६, वाराणसी

अध्यक्ष	श्री विनय कुमार मुखर्जी, ए० पी० सैन मार्ग, लखनऊ
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी एडवोकेट ४७ लक्ष्मण चौक, देहरादून
	श्री ज्ञान चंद द्विवेदी, एडवोकेट, १३ प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
	श्री हंसदेव सिंह गौतम २७/२ श्रमिक बस्ती, बाबू पुरवा, कानपुर
	श्री रघुनाथ सहाय जैन, ५७६, बजरिया, गाजियाबाद
महामंत्री	श्री रामनरेश सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर
मंत्री	श्री रामकृष्ण त्रिपाठी, ७६/७४, हालसी रोड, कानपुर
	श्री घनश्याम दास गुप्ता वार्ड नं० ४, शामली, मुजफ्फरनगर

मंत्री	श्री राजा मोहन अरोड़ा, बंशीवट, माईथान, आगरा
	श्री जगमोहन लाल, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर
	श्री भगवत शरण रस्तोगी एफ० जी० २, फजलगंज, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, १४/१२, बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर
	श्री भैरव प्रसाद पाण्डेय, १०६/३७१, हीरागंज, कानपुर
	श्री भौमेन्द्र श्रीवास्तव, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री वासुदेव प्रसाद मिश्र, ५४/४ विजय नगर, कानपुर
	श्री सुरेश चंद रस्तोगी ६, नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ
	श्री रमाकान्त वाजपेयी, लालकुआँ, लखनऊ
	श्री फूलचन्द तिवारी एफ-७ कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशचमोचन, वाराणसी
	श्री सुधीर सिंह भा० म० संघ कार्यालय, जटैपुर पोखरा, गोरखपुर
	श्री शिव मंगल राय, चीनी मिल, देवरिया
	श्री दिलीप नारायण सिंह श्रमिक बस्ती, चीनी मिल, कठकुइयाँ, देवरिया
	श्री रामेश्वर दयाल शर्मा ४७/६२, बी, कूचा साधूराम, फुलट्टी, आगरा
	श्री ओमप्रकाश गौतम २२१३, चन्द्रपुरी, गोशाला रोड, हाथरस, जिला अलीगढ़
	श्री वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर एफ-७ कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री गौरी शंकर मिश्र बड़ा बाजार, बरेली
	श्री श्रीधर शुक्ल भा० म० संघ कार्यालय, दर्जी चौक, बड़ा बाजार, बरेली
	श्री वीरेन्द्र सिंह सोलंकी, एडवोकेट सिविल लाइन्स, बदायूँ
	श्री सलेक चंद, द्वारा पंजाब बूट हाऊस, गाजियाबाद
	श्री रामजन्म पाण्डेय एफ-७ कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री राम चन्द्र वर्मा, टेढ़ी गल्ली चौक, फैजाबाद
	श्री राम प्रकाश मिश्र, २ नवीन मार्केट, कानपुर

११वाँ प्रान्तीय अधिवेशन (२५वीं प्रतिनिधि सभा)

९ व १० मार्च १९६८, बड़ी धर्मशाला, मुजफ्फरनगर

अध्यक्ष	श्री विनय कुमार मुखर्जी, लखनऊ
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानंद स्वामी एडवोकेट, देहरादून
	श्री ज्ञान चंद द्विवेदी एडवोकेट हाईकोर्ट, प्रयाग
	श्री हंसदेव सिंह गौतम, कानपुर
	श्री रघुनाथ सहाय जैन
महामंत्री	श्री रामनरेश सिंह, कानपुर
मंत्री	श्री राम कृष्ण त्रिपाठा कानपुरि
	श्री घन श्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरुगर
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँश देवरिया
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, सहारनपुरु
कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञ दत्त शर्मा, श्री राम प्रकाश मिश्रा, श्री भैरव प्रसाद पाण्डेय, श्री रमाकान्त शुक्ला, श्री भौमेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, श्री सुरेश चदं रस्तोगी, श्री रमाशंकर सिंह, श्री प्रदीप कुमार चक्रवर्ती, श्री सुधीर सिंह, श्री शिव मंगल राय, श्री राजा मोहन अरोड़ा, श्री रामेश्वर दयाल शर्मा, श्री ओम प्रकाश गौतम, श्री वीरेन्द्र भटनागर, श्री गौरी शंकर मिश्र, श्री राम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री वीरेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री सलेक चंद, श्री राधे मोहन सक्सैना, श्री तेजभान सिंह।

१३वाँ वार्षिक अधिवेशन

२१ व २२ नवम्बर १९७० ई०, मारवाड़ी अग्रवाल धर्मशाला, प्रयाग

अध्यक्ष	श्री ज्ञान चंद द्विवेदी एडवोकेट, प्रयाग
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानंद स्वामी, एडवोकेट व विधायक, देहरादून
	श्री रघुनाथ सहाय जैन, गाजियाबाद
	श्री हंस देव सिंह गौतम, कानपुर
	श्री जगमोहन लाल गर्ग, सहारनपुर
महामंत्री	श्री राम प्रकाश मिश्रा, कानपुर
मंत्री	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी, कानपुर
	श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँ, देवरिया
	श्री राजा मोहन अरोड़ा, आगरा

कोषाध्यक्ष	श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा कानपुर, श्री भैरव प्रसाद पाण्डे कानपुर, श्री भौमेन्द्र श्रीवास्तव कानपुर, श्री रमाकान्त शुक्ल कानपुर, श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ला कानपुर, श्री सुधीर सिंह गोरखपुर, श्री शिवमंगल राय देवरिया, श्री वीरेन्द्रस्वरूप भटनागर वाराणसी, श्री रमाशंकर सिंह व राम जन्म पाण्डेय वाराणसी, श्री प्रदीप कुमार चक्रवर्ती चुर्क, श्री राजेश्वर दयाल शर्मा प्रयाग, श्री सुरेश चन्द रस्तोगी (एडवोकेट) प्रयाग, श्री तेजभान सिंह लखनऊ, श्री ओम प्रकाश गौतम बरेली, श्री राम प्रकाश श्रीवास्तव (एडवोकेट) शाहजहाँपुर, श्री सलेक चंद गाजियाबाद, श्री ब्रह्मदत्त त्यागी देहरादून, श्री सुरेश चंद जैन अलीगढ़, दादा विनय कुमार मुखर्जी लखनऊ, श्री रामनरेश सिंह जी (मा० बड़े भाई जी), कानपुर

पन्द्रहवाँ वार्षिक अधिवेशन

१८ व १९ नवम्बर १९७२ ई०, बी०एच०ई०एल०, रानीपुर, हरिद्वार

अध्यक्ष	श्री ज्ञानचन्द द्विवेदी (एडवोकेट), १३, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी, एम० एल० ए० (एडवोकेट) ४७, लक्ष्मण चौक, देहरादून
	श्री राजा मोहन अरोड़ा, १८/३४३ माई थान, आगरा
	श्री हंसदेव सिंह गौतम, २७/२ श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री जगमोहन लाल गर्ग, ४५, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर
महामंत्री	श्री रामप्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
मंत्री	श्री भैरव प्रसाद पांडे, १०६/३६१, हीरागंज, कानपुर।
	श्री घनश्यामदास गुप्त, वार्ड नं० ४, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री दिलीपनारायण सिंह श्रमिक बस्ती, चीनी मिल, कठकुइयाँ, देवरिया
	श्री ओमप्रकाश गौतम, भारतीय मजदूर संघ, बांसमण्डी, बरेली

कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल २७०/१, जुही लेबर कालोनी गोविन्दनगर, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, ६३/१, लेबर कालोनी गोविन्दनगर, कानपुर
	श्री प्रतापनारायण सचान १२५/४, श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर
	श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६०, फेथफुलगंज, कानपुर
	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री ऋषिकान्त तिवारी, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री सुधीर सिंह भा० म० संघ, जटेपुर पोखरा, उत्तरी किनारा, गोरखपुर
	श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव. पू० रे० जी० एम० (कामर्शियल) कार्यालय डाकसेवा, गोरखपुर
	श्री रमाशंकर सिंह ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टरर्स पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री प्रेमसागर मिश्र ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री देवनाथ, १४/४, श्रमिक बस्ती, साहू पुरी, वाराणसी
	श्री वीरेन्द्र भटनागर, २५, महाजनी टोला, इलाहाबाद
	श्री गजेन्द्रपाल शर्मा भारतीय मजदूर संघ, कार्यालय, स्टेशन रोड, अलीगढ़
	श्री प्रदीप कुमार चक्रवर्ती जे० ९८, चुर्क सीमेंट मजदूर संघ, चुर्क, मिरजापुर
	श्री सत्यमोहन कपूर, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री राजेश्वरदयाल शर्मा, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी ३२, डॉ० दुर्गाप्रसाद मार्ग, चकरौता रोड, देहरादून
	श्री वीरेन्द्र सोलंकी (एडवोकेट), सिविल लाइन्स, बदायूँ
कार्यकारिणी सदस्य	श्री दामोदर प्रसाद शर्मा, संघ कार्यालय, राजामंडी, आगरा
	श्री ओमप्रकाश शर्मा ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
	श्री रामनरेश सिंह, एम० एल० सी०, २, नवीन मार्केट, कानपुर

सोलहवाँ वार्षिक अधिवेशन

१८, १९ व २० नवम्बर १९७३ ई०, रेणुकूट (मिरजापुर)

अध्यक्ष	श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी, एडवोकेट, १३, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
उपाध्यक्ष	श्री नित्यानन्द स्वामी एम० एल० ए०, एडवोकेट.४७, लक्ष्मण चौक, देहरादून
	श्री सुधीर सिंह भा० म० संघ, जटेपुर पोखरा, उत्तरी किनारा, गोरखपुर
	श्री हंसदेव सिंह गौतम, २७/२, श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर
	श्री ओमप्रकाश गौतम, भा० म० संघ, बाँसमंडी, बरेली
महामंत्री	श्री रामप्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र भटनागर, २५, महाजनी टोला, इलाहाबाद
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२, रामपुर मंडी रोड, देहरादून
	श्री सत्यमोहन कपूर, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६०, फेथफुलगंज, कानपुर
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल.२७०/१, जुही लेबर कालोनी, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, ६३/१, लेबर कालोनी, गोविन्दनगर, कानपुर
	श्री प्रतापनारायण सचान १२५/४, श्रमिक बस्ती, बाबूपुरवा, कानपुर
	श्री भैरोप्रसाद पाण्डेय, १०६/३७, हीरागंज, कानपुर
	श्री सुखदेवप्रसाद मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री ऋषिकान्त तिवारी, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री घनश्यामदास गुप्त.वार्ड नं० ४, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव, पूर्वोत्तर रेलवे जी० एम० कार्यालय (कामर्शियल) डाकसेवा, गोरखपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री रमाशंकर सिंह ७ एफ, कारपोरेशन क्वाटर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री प्रेमसागर मिश्र ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी

कार्यकारिणी सदस्य श्री देवनाथ
७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
श्री जगमोहन लाल, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर
श्री गजेन्द्रपाल शर्मा
भा० म० संघ कार्यालय, मधुपरा, रेलवे रोड, अलीगढ़
श्री प्रदीप कुमार चक्रवर्ती, जे० ९८, चुर्क, मिरजापुर
श्री राजामोहन अरोड़ा, १८/३४३, माई थान, आगरा
श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री दिलीपनारायण सिंह
श्रमिक बस्ती, चीनी मिल, कठकुइयाँ, देवरिया
श्री ओमप्रकाश शर्मा, ४, सुभाष मार्केट, गाजियाबाद
श्री इन्द्रबहादुर सिंह, जे० ९८, चुर्क, मिरजापुर
श्री रामदास चक, पैंठ बाजार, लोहा मंडी, फिरोजाबाद
श्री रामनरेश सिंह, एम० एल० सी०, २, नवीन मार्केट, कानपुर

सत्रहवाँ वार्षिक प्रादेशिक अधिवेशन

२२ व २३ दिसम्बर १९७३ ई०, कताई मिल, सहकारी नगर, बुलन्दशहर

अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द द्विवेदी, इलाहाबाद
उपाध्यक्ष श्री सुधीर सिंह, गोरखपुर; ओम प्रकाश गौतम, बरेली
श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, अलीगढ़; जगमोहन लाल, सहारनपुर
महामंत्री श्री राम प्रकाश मिश्रा, कानपुर
मंत्री श्री वीरेन्द्र भटनागर, इलाहाबाद
श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, देहरादून
श्री सत्य मोहन कपूर, लखनऊ
श्री दिलीप नारायण सिंह, देवरिया
कोषाध्यक्ष श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री रमाकान्त शुक्ल, कानपुर; रमाकान्त मिश्र, कानपुर;
भैरव प्रसाद पांडेय, कानपुर; यज्ञदत्त शर्मा कानपुर;
सुखदेव प्रसाद मिश्र, कानपुर; ऋषिकान्त तिवारी, कानपुर;
घनश्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरनगर;
राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव, देवरिया; रमा शंकर सिंह, वाराणसी;
प्रेम सागर मिश्रा, वाराणसी; देवनाथ जी, वाराणसी;

कार्यकारिणी सदस्य	प्रदीप चक्रवर्ती, मिरजापुर; राजा मोहन अरोड़ा, आगरा; राजेश्वर दयाल शर्मा, लखनऊ; रमाकान्त दुबे, लखनऊ; ओमप्रकाश शर्मा, गाजियाबाद; इन्द्र बहादुर सिंह, मिरजापुर; रामदास चक, फिरोजाबाद; रामाधार वशिष्ठ, बरेली; श्री रामनरेश सिंह, कानपुर

आपातकाल में आगरा में अठाहरवाँ वार्षिक अधिवेशन

१४ नवम्बर १९७६ ई०, दीपचन्द जैन धर्मशाला, राजामण्डी रेलवे स्टेशन के पास, आगरा

अध्यक्ष	श्री अर्जुनप्रसाद एडवोकेट, डी० आई० जी० कालोनी, वाराणसी
उपाध्यक्ष	श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी एडवोकेट, १३, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
	श्री ओमप्रकाश गौतम, भारतीय मजदूर संघ, बाँसमंडी, बरेली
	श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, भारतीय मजदूर संघ, मधुपुरा, अलीगढ़
	श्री घनश्याम दास गुप्त, वार्ड नं० ४, शामली, मुजफ्फरनगर
महामंत्री	श्री रामप्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र भटनागर, २१, उद्योगनगर, नैनी, इलाहाबाद
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२, रामपुर मंडी रोड, देहरादून
	श्री सत्यमोहन कपूर, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री दिलीपनारायण सिंह, श्रमिक बस्ती चीनी मिल
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद, २७०/१ लेबर कालोनी, जूही, कानपुर
कार्यकारिणी सदस्य	श्री यज्ञदत्त शर्मा, ६३/१ लेबर कालोनी, गोविन्दनगर, कानपुर
	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र, १८/१६ दादानगर, कानपुर
	श्री भूपेन्द्र नाथ सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६०, फेथफुलगंज, कानपुर
	श्री जगमोहन लाल, मिश्रान पथ, खालापार, सहारनपुर
	श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, २४, तुर्कमानपुर, गोरखपुर
	श्री अत्रिदेव तिवारी, भारत स्टोर्स, जलकल रोड, देवरिया
	श्री रमाशंकर सिंह, ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, वाराणसी
	श्री प्रेमसागर मिश्रा, ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, वाराणसी
	श्री देवनाथ, ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, वाराणसी
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री इन्द्रबहादुर सिंह, जे ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़

कार्यकारिणी सदस्य श्री रमाकान्त दुबे, ६, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री ओमप्रकाश शर्मा,
४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
श्री राजामोहन अरोड़ा, १८/३४ माई थान, आगरा
श्री रामदास चक, पैंठ बाजार लोहामण्डी, फिरोजाबाद
श्री रामाधार वशिष्ठ, भा० म० सं०, नूरी दरवाजा, आगरा
श्री रमाकांत मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
श्री रामनरेश सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर

उन्नीसवाँ प्रादेशिक अधिवेशन

७ व ८ जनवरी १९७८ ई०, गाजियाबाद

अध्यक्ष श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र, एडवोकेट
डी० आई० जी० कालोनी, वाराणसी
उपाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी एडवोकेट
१३, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद
श्री ओमप्रकाश गौतम, भा० म० सं०, बाँसमण्डी, बरेली
श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़
श्री रामजन्म पाण्डे, टी १३२ रेलवे क्वार्टर्स, वाराणसी
महामंत्री श्री वीरेन्द्र भटनागर, ४, सुभाष मार्केट, गाजियाबाद
मंत्री श्री रमाकान्त मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, भारतीय मजदूर संघ, मधुपुरा, अलिगढ़
श्री देवनाथ, १४/४ साहूपुरी श्रमिक बस्ती, वाराणसी
श्री ओमप्रकाश शर्मा, ४, सुभाष मार्केट, गाजियाबाद
कोषाध्यक्ष श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल, २७०/१ जुही लेबर कालोनी, कानपुर
सदस्य श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र
१८/१६ न्यू गोविन्दनगर श्रमिक बस्ती, कानपुर
श्री भूपेन्द्रनाथ सिंह, १३३/३०० ढकना पुरवा, कानपुर
श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६० फेथफुलगंज, कानपुर
श्री भैरों प्रसाद पाण्डेय, १०६/३०७ हीरागंज, कानपुर
श्री राम प्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
श्री रामनरेश सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर

सदस्य	श्री अख्तर हुसैन, ३०० शेख सराय, बुलन्दशहर
	श्री रामदास चक, पैठ बाजार, लोहामण्डी, फिरोजाबाद
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री इन्द्र बहादुर सिंह, जे ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री प्रेमसागर मिश्र ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री अशोक शर्मा ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री रमाकान्त दुबे, ४ न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री सत्यमोहन कपूर, ४ न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री ध्रुवनारायण, ४ न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री अत्रिदेव तिवारी, जलकल रोड, देवरिया
	श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, २४, तुर्कमानपुर, गोरखपुर
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२ रामपुर मण्डी रोड, देहरादून
	श्री रामाधार वशिष्ठ, भा० म० सं०, ३५५/१, सिविल लाइन्स, झाँसी
	श्री घनश्याम दास गुप्त, ४, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री महिनारायण झा क्वार्टर नं० १४७, टाइप ३, से० १, भेल, रानीपुर, हरिद्वार
	श्री लोकनाथ अरोड़ा, १७/४ जीवन सिनेमा कम्पाउन्ड, आगरा
	श्री मदनलाल शर्मा, ८४, रानीमण्डी, इलाहाबाद
	श्री दिलीप नारायण सिंह, कठकुइयाँ चीन मिल क्वार्टर्स, देवरिया

प्रान्तीय अधिवेशन जिनके वृत्त नहीं प्राप्त हो सके हैं

१२वाँ, शाहजहाँपुर—२८, २९ मार्च १९६९; १४वाँ, हीरालाल बारहसैनी इण्टर कालेज, अलीगढ़—२ व ३ अक्टूबर १९७१ और २०वाँ, नैनी, इलाहाबाद—२५, २६ व २७ नवम्बर १९७८—इनका वृत्त नहीं मिल सका है।

इक्कीसवाँ प्रादेशिक अधिवेशन

१७ व १८ दिसम्बर १९७९ ई०, बरेली

अध्यक्ष	श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र, डी० आई० जी० कालोनी, वाराणसी
उपाध्यक्ष	श्री ज्ञानचंद्र द्विवेदी, एडवोकेट, १३, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
	श्री ओमप्रकाश गौतम, भा० म० सं०, बाँसमण्डी, बरेली

उपाध्यक्ष	श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़
	श्री रामजन्म पाण्डे, भा० म० सं०, पिशाचमोचन, वाराणसी
महामंत्री	श्री वीरेन्द्र भटनागर, ४, सुभाष मार्केट, गाजियाबाद
मंत्री	श्री रमाकान्त मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, शंकर आश्रम, मेरठ
	श्री देवनाथ, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री ओम प्रकाश शर्मा, ४, सुभाष मार्केट, गाजियाबाद
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल, २७०/१ श्रमिक बस्ती, जुही, कानपुर
सदस्य	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र, १८/१६ श्रमिक बस्ती, दादानगर कानपुर
	श्री भूपेन्द्रनाथ सिंह, १३३/३०० ढकनापुरवा कानपुर
	श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६० फेथफुलगंज, कानपुर
	श्री भैरोप्रसाद पांडेय, १०६/३०७ हीरागंज, कानपुर
	श्री राम प्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री रामनरेश सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री अख्तर हुसेन, ३००, शेखसराय, बुलंदशहर
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे० ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री इन्द्र बहादुर सिंह, जे० ९८ चुर्क, मिरजापुर
	श्री अशोक शर्मा, ७ एफ, कारपोरेशन क्वाटर्स, वाराणसी
	श्री प्रेमसागर मिश्र, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री रमाकान्त दुबे, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
	श्री ध्रुवनारायण, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग लखनऊ
	श्री अत्रिदेव तिवारी, जलकल रोड, देवरिया
	श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, २४, तुर्कमानपुर, गोरखपुर
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२, चकरौता रोड, देहरादून
	श्री दिलीपनारायण सिंह, चीनी मिल, कठकुइयाँ, देवरिया
	श्री घनश्याम दास गुप्त ४, मुहल्ला लाजपतराय, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री रामाधार वशिष्ठ, नूरी दरवाजा, आगरा
	श्री महिनारायण झा, १४७, सेक्टर-१, टाइप-३, भेल, हरिद्वार
	श्री लल्लन शुक्ल, मुन्शीपुरा, मऊनाथभंजन, आजमगढ़
	श्री सच्चिदानन्द राय, भा० म० सं०, ७३३ छत्ता बाजार, मथुरा
	श्री त्रिभुवन सिंह, एच० एच० ३४८, रेणुकूट

२२वाँ प्रान्तीय अधिवेशन

११, १२ व १३ अप्रैल १९८२, अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर

अध्यक्ष	श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र, डी० आई० जी० कालोनी, वाराणसी
उपाध्यक्ष	श्री ओम प्रकाश गौतम, भारतीय मजदूर संघ, बाँसमण्डी, बरेली
	श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, भारतीय मजदूर संघ, मधुपुरा, अलीगढ़
	श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी (एडवोकेट), १३, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग
	श्री अत्रिदेव तिवारी, ५/३३५ सिन्धी मिल कालोनी, देवरिया
महामंत्री	श्री घनश्याम दास गुप्त मुहल्ला लाजपतराय, शामली, मुजफ्फरनगर
मंत्री	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्रा १८/१६ दादानगर लेबर कालोनी, कानपुर
	श्री प्रेमसागर मिश्रा, ४, नवीन मार्केट, केसर बाग, लखनऊ
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२, चकरौता रोड, देहरादून
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे ९८ चुर्क, मिरजापुर
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ला, ६२/१ जुही लेबर कालोनी, कानपुर
संगठन मंत्री	श्री देवनाथ, १४/४ साहूपुरी, वाराणसी
सदस्य	श्री ओमप्रकाश शर्मा, ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग, मेरठ
	श्री दिलीपनारायण सिंह, चीनी मिल कठकुइयां, देवरिया
	श्री विश्वनाथ मिश्र, चीनी मिल, देवरिया
	श्री आर० एन० सिंह ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री अशोक शर्मा ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री इन्द्र बहादुर सिंह, चुनार सीमेन्ट फैक्टरी, मिरजापुर
	श्री त्रिभुवन सिंह, एच/५०४, रेनूकूट, मिरजापुर
	श्री दयाशंकर उपाध्याय, ११८ मधवापुर, इलाहाबाद
	श्री भूपेन्द्रनाथ सिंह, १३३/३०० ढकनापुरवा, कानपुर
	श्री भैरव प्रसाद पाण्डेय, १०६/३७१ हीरागंज, कानपुर
	श्री गिरीश अवस्थी, १०/२७७ खलासी लाइन, कानपुर
	श्री रमाकान्त मिश्र, १०९, ख्योरा, कानपुर
	श्री राम प्रकाश मिश्र, २ नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री राम नरेश सिंह, २ नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री ब्रजेश बहादुर श्रीवास्तव, १४७, जटाशंकर पोखरा, गोरखपुर
	श्री सच्चिदानन्द राय, आजमगढ़ (मऊनाथभंजन)

सदस्य	श्री आर० के० श्रीवास्तव भा० म० संघ, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ श्री के० एन० शर्मा, भा० म० संघ, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ श्री के० वी० एल० राव भा० म० संघ, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ श्री आर० के० दुबे, भा० म० संघ, ४, न्यू मार्केट, केसरबाग, लखनऊ श्री महिनारायन झा सेक्टर-१, टाइप-३, क्वार्टर १४७, बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार श्री अख्तर हुसैन, ३००, शेखसराय, बुलन्दशहर श्री शिवेन्द्र सिंह सीसोदिया, २४, बेलनगंज, लक्ष्मी मार्केट, आगरा श्री इन्द्रपाल सिंह, २४, बेलनगंज, लक्ष्मी मार्केट, आगरा श्री वीरेन्द्र चौधरी तिलोई बिल्डिंग बंगाली घाट, मथुरा श्री रामदास चक, पैंठ बाजार, लोहामण्डी, फिरोजाबाद श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी, ५७, झारखण्डी, साकेत, फैजाबाद श्री सतीश रोहतगी, भारतीय मजदूर संघ बाँसमण्डी, बरेली श्री प्रदीप कुमार, भा० म० संघ, ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद

विशेष आमंत्रित—

श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह, रायबरेली
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सहारनपुर
श्री लक्ष्मी नारायण वार्ष्णेय, अलीगढ़
श्री वी० के० वाजपेयी, आगरा
श्री ए० एस० दिवाकर, इलाहाबाद
श्री रामजन्म पाण्डेय, वाराणसी;
श्री माता प्रसाद त्रिपाठी, झांसी
श्री विशम्भर नाथ श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री सुरेन्द्र नाथ, कानपुर
श्री अवध नारायण मिश्र, इलाहाबाद

२३वाँ प्रान्तीय अधिवेशन

१७ व १८ फरवरी १९८५, लखनऊ

अध्यक्ष	श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र, डी० आई० जी० कालोनी, वाराणसी
उपाध्यक्ष	श्री ओम प्रकाश गौतम, भारतीय मजदूर संघ, बांसमण्डी, बरेली श्री गजेन्द्र पाल शर्मा, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़ श्री अत्रिदेव तिवारी भा० म० सं० कार्यालय, १४७, जटाशंकर पोखरा, गोरखपुर श्री देवनाथ, १४/४, साहूपुरी, वाराणसी

महामंत्री	श्री घनश्याम दास गुप्त, मु० लाजपतराय, शामली, मुजफ्फरनगर
मंत्री	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र १८/१६, दादानगर लेबर कालोनी, कानपुर
	श्री प्रेमसागर मिश्र, ६, नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे-९८, चुर्क, मिर्जापुर
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, ३२, चकरौता रोड, देहरादून
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल, ६२/१, जुही लेबर कालोनी, कानपुर
संगठन मंत्री	श्री रामदौर सिंह, ६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
कार्यालय मंत्री	श्री जगदीश चन्द्र वाजपेयी. भा० म० सं०, २, नवीन मार्केट, कानपुर
सदस्य	श्री राम नरेश सिंह, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री राम प्रकाश मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री ओम प्रकाश शर्मा ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
	श्री राजेश्वरदयाल शर्मा, शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग, मेरठ
	श्री सुरेन्द्र शर्मा, २१/९, लेबर कालोनी, सहारनपुर
	श्री महीनारायण झा, सैक्टर-१, टाईप-३, क्वार्टर नं० १४७, बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार
	श्री ब्रजेश बहादुर श्रीवास्तव ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
	श्री अख्तर हुसैन. ३००, शेखसराय, बुलन्दशहर
	श्री डी० के० वाजपेयी. केनरा बैंक, कमलानगर, आगरा
	श्री आर० एन० सिंह ७ एफ, कारपोरेशन, क्वार्टर्स पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री अशोक शर्मा ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स पिशाचमोचन, वाराणसी
	श्री रमेश उपाध्याय, २१-सी, नई बाजार, नैनी, इलाहाबाद
	श्री विश्वनाथ मिश्र, चीनी मिल, देवरिया
	श्री ओमप्रकाश, जी० एम० ओ० यू० कार्यालय, कोटद्वार
	श्री त्रिभुवन सिंह. एच-५०४, रेनुकूट, मिर्जापुर
	श्री भूपेन्द्रनाथ सिंह, १३३/३००, ढकनापुरवा, कानपुर
	श्री शिवपूजन यादव, भा० म० स०, २ नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री राधेश्याम चौबे. भा० म० स०, २ नवीन मार्केट, कानपुर
	श्री इन्द्रपाल सिंह. भा० म० स० भगतसिंह द्वार, आगरा
	श्री शिवेन्द्र सिंह सिसौदिया, भा० म० सं०, भगतसिंह द्वार, आगरा
	श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह २७, आई० टी० आई० कालोनी, रायबरेली

सदस्य — श्री रामदास चक, पैठ बाजार, लोहामण्डी, फिरोजाबाद
श्री श्रीकान्त अवस्थी, ६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री आर० के० श्रीवास्तव, ६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री राजेन्द्र प्रसाद .६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री के० एन० शर्मा, ६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ
श्री प्रेम कुमार ओझा, द्वारा टुबैको ट्रेडर्स, मिखाबाजार, गाजीपुर
श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी, ५७, झारखण्डी, साकेत, फैजाबाद
श्री के० सी० गोसाईं, ७५-ए, हरथला रेलवे कालोनी, मुरादाबाद
श्री लक्ष्मी नारायण, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़
श्री कृष्णस्वरूप श्रीवास्तव, भा० म० सं०, २, नवीन मार्केट, कानपुर
श्री रामभरोसे चतुर्वेदी, ओझा गली, कसेरट बाजार, मथुरा

विशेष आमंत्रित—

श्री मिश्रीलाल उपाध्याय
७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर, पिशाचमोचन, वाराणसी
श्री माताप्रसाद त्रिपाठी, ४८१, सिपरी बाजार, झाँसी
श्री अवधेश कुमार सिंह, भा० म० सं०, अनपरा, जि० मिर्जापुर
श्री विश्वम्भरनाथ श्रीवास्तव, ६, न्यू मार्केट केसरबाग, लखनऊ
श्री गिरीश अवस्थी, १०/२७७, खलासी लाइन, कानपुर
श्री नरेश कुमार बंसल, भा० म० स०, ३२, चकरौता रोड, देहरादून
श्री इन्द्र बहादुर सिंह, चुनार सीमेंट फैक्टरी, मिर्जापुर
श्री सर्वेशचन्द्र त्रिवेदी, भा० म० सं०, २, नवीन मार्केट, कानपुर

२४वाँ प्रान्तीय अधिवेशन

२४ व २५ अप्रैल १९८८ ई०, कानपुर
प्रान्तीय कार्यकारिणी वर्ष (१९८८–१९९०)

अध्यक्ष — डा० गजेन्द्र पाल शर्मा, अलीगढ़
उपाध्यक्ष — श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरनगर
श्री गोपाल चंद्र बनर्जी, ३८३, मीरापुर, इलाहाबाद
श्री कैलाशनाथ शर्मा, बादशाहनगर रेलवे कालोनी, लखनऊ
श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे-९८, चुर्क, मिरजापुर
महामंत्री — श्री रामदौर सिंह, २, नवीन मार्केट, परेड, कानपुर
मंत्री — श्री सुखदेव प्रसाद मिश्रा, कानपुर
श्री अत्रिदेव तिवारी, देवरिया

मंत्री	श्री प्रेमसागर मिश्रा, लखनऊ
	श्री अम्बिका प्रसाद सिंह, इलाहाबाद
	श्री ओम प्रकाश गौतम, बरेली
	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी, देहरादून
	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, मेरठ
कोषाध्यक्ष	श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ला, कानपुर
कार्यालय मंत्री	श्री श्रीकान्त अवस्थी, कानपुर
सदस्य	श्री भूपेन्द्र नाथ सिंह, कानपुर
	श्री सर्वेश चंद द्विवेदी, कानपुर
	श्री राधेश्याम चौबे, कानपुर
	श्री जगदीश चंद्र वाजपेयी, कानपुर
	श्री एस० के० सिन्हा, कानपुर
	श्री एस० बी० सिंह, रायबरेली
	श्री प्रेमकुमार ओझा, गाजीपुर
	श्री अख्तर हुसैन, बुलन्दशहर
	श्री गिरीश चंद श्रीवास्तव, इलाहाबाद
	श्री शैलेन्द्र नाथ त्रिपाठी, फैजाबाद
	श्री रामाधार शुक्ला, सीतापुर
	श्री गंगा विष्णु शुक्ला, रायबरेली
	श्री राम सूरत गुप्ता, लखनऊ
	श्री अनिल कुमार तिवारी, झाँसी
	श्री लक्ष्मी नारायण गुप्ता, अलीगढ़
	श्री राम भरोसे लाल चतुर्वेदी, मथुरा
	श्री ब्रजेश बहादुर श्रीवास्तव, झाँसी
	श्री महेन्द्र कुमार पाठक, गाजियाबाद
	श्री भगत सिंह रावत, देहरादून
	श्री कमलेश कुमार, आगरा
	श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सहारनपुर
	श्री के० पी० तिवारी, गोरखपुर
	श्री चरनजीत बत्रा, देहरादून
	श्री मही नारायण झा, बी० एच० ई० एल० रानीपुर, हरिद्वार
	श्री हरीओम मिश्रा, शाहजहाँपुर
	श्री रामलोचन उपाध्याय, बरेली
	श्री चन्द्रसैन गंगवार, बरेली
	श्री रमेश चंद उपाध्याय, गोरखपुर
	श्री विश्वनाथ मिश्रा, देवरिया

सदस्य	श्री अशोक शर्मा, वाराणसी
	श्री आर० एन० सिंह वाराणसी
	श्री अवधेश पाल सिंह, हरदोई
	श्री जगदीश चंद वाजपेयी, फैजाबाद
	श्री आर० के० श्रीवास्तव, लखनऊ

विशेष आमंत्रित—

श्री अजय सिंह, जौनपुर
श्री रामदास चक, फिरोजाबाद
श्री दामोदर उपाध्याय, मिरजापुर
श्री शान्ती शरण, विधूना (इटावा)
श्री गिरीश चंद आर्य, गाजियाबाद
श्री ओम प्रकाश, कोटद्वार
श्री भैरवदत्त जोशी, नैनीताल
श्री डी० एन० प्रसाद, धारचूला (पिथौरागढ़)
श्री नरेन्द्र कुमार शुक्ला, बाराबंकी
श्री ब्रजलाल यादव, सीतापुर
श्री वीरेन्द्र, मुरादाबाद
श्री जवाहर लाल, आगरा

पच्चीसवाँ प्रान्तीय अधिवेशन

२१ व २२ अक्टूबर १९९१ ई०, डी०ए०वी० डिग्री कॉलेज, वाराणसी

पदाधिकारी व प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति वर्ष १९९१–९३

अध्यक्ष	श्री डा० गजेन्द्र पाल शर्मा, अलीगढ़
उपाध्यक्ष	श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली, मुजफ्फरनगर
	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, मेरठ
	श्री गोपाल चन्द बनर्जी, इलाहाबाद
	श्री प्रदीप चक्रवर्ती, चुर्क, मीरजापुर
महामंत्री	श्री देवनाथ सिंह, वाराणसी
संगठन मंत्री	श्री रामदौर सिंह, लखनऊ
मंत्री	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्रा, कानपुर
	श्री ओम प्रकाश गौतम, बरेली
	श्री प्रेम सागर मिश्रा, लखनऊ
	श्री अत्रिदेव तिवारी, देवरिया
	श्री अम्बिका प्रसाद सिंह, प्रयाग

मंत्री	श्री जगदीश वाजपेयी, गाजियाबाद
	श्री वीरेन्द्र मिश्र, मुरादाबाद
कोषाध्यक्ष	श्री रमाकान्त शुक्ला, कानपुर
कार्यालय मंत्री	श्री श्रीकान्त अवस्थी, कानपुर
सदस्य	श्री सर्वेश चंद द्विवेदी, कानपुर
	श्री जगदीश चंद खन्ना, कानपुर
	श्री पी० के० पालीवाल, कानपुर
	श्री वी० के० शर्मा, कानपुर
	श्रीमति कैलाश त्रिपाठी, कानपुर
	श्री शान्ति शरण मिश्रा, विधूना, इटावा
	श्री कैलाश नाथ शर्मा, लखनऊ
	श्री रामसूरत गुप्ता, लखनऊ
	श्री इन्द्र पाल सिंह, लखनऊ
	श्री सोमदत्त शुक्ला, लखनऊ
	श्री अवधेश पाल सिंह, हरदोई
	श्री रामशिव तिवारी, ग्राम व पोस्ट कपराहा, लखीमपुर खीरी
	श्री रामाधार शुक्ला, डोलीनगर, सीतापुर
	श्री नागेश कुमार सिंह, पी० डब्ल्यू० डी० कालोनी, श्रमिक बस्ती, कानपुर
	श्री गंगा विष्णु शुक्ला, रायबरेली
	श्रीमति मीना शर्मा, रायबरेली
	श्री आर० एन० सिंह, वाराणसी
	श्री अशोक शर्मा, वाराणसी
	श्री राम खिलावन गुप्ता, वाराणसी
	श्री लल्लन शुक्ला, वाराणसी
	श्रीमती दुर्गावती सिंह, कठरवाँ, फूलपुर, वाराणसी
	श्री अजय सिंह, हुसैनाबाद, जौनपुर
	श्री बैजनाथ सिंह, रेणुकूट, सोनभद्र
	श्री सदानन्द दुबे, बीना, सोनभद्र
	श्री इन्द्र बहादुर सिंह, चुनार, मिरजापुर
	श्री बेचन सिंह, नैनी, इलाहाबाद
	श्री राम लोचन उपाध्याय, बरेली
	श्री जगदीश चन्द्र शर्मा, बरेली
	श्री डी० डी० शर्मा, काठगोदाम, नैनीताल
	श्री महिनारायण झा, बी० एच० ई० एल०, रानीपुर, हरिद्वार
	श्री भगत सिंह रावत, देहरादून

सदस्य	श्री लक्ष्मी प्रसाद जैसवाल, देहरादून
	श्री सुधीर कुमार त्यागी, नानौता, सहारनपुर
	श्री राधेश्याम शुक्ला, गाजियाबाद
	श्री अख्तर हुसैन, बुलन्दशहर
	श्री अशोक दिग्विजय, आगरा
	श्री जवाहर लाल, आगरा
	श्री लक्ष्मी नारायण गुप्ता, अलीगढ़
	श्री जगदीश सिंह, अलीगढ़
	श्री एस० एन० पाण्डेय, मथुरा
	श्री महेन्द्र पाठक, बी० एच० ई० एल० टाऊनशिप, खेलार, झाँसी
	श्री श्रीकान्त दुबे, बी० एच० ई० एल० टाऊन शिप खेलार, झाँसी
	श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव, गोरखपुर
	श्री प्रेम कुमार ओझा, पीरनगर, गाजीपुर
	श्री आर० के० श्रीवास्तव, लखनऊ

२६वाँ प्रादेशिक अधिवेशन

सरस्वती शिशु मन्दिर कमला नगर, आगरा

कार्यकारिणी वर्ष (१९९४--९७)

अध्यक्ष	डॉ० गजेन्द्र पाल शर्मा भा० म० सं० (निकट रेलवे स्टेशन), मधुपुरा, अलीगढ़
उपाध्यक्ष	श्री जी० सी० बनर्जी, ३८३, मीरापुर, इलाहाबाद
	श्री ओम प्रकाश गौतम, भा० म० सं०, बाँसमण्डी, बरेली
	श्री बी० एन० मिश्रा, ६ नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ
	श्री दुर्गादत्त शर्मा श्रमिक बस्ती, शीशमहल, काठगोदाम, नैनीताल
महामंत्री	श्री देवनाथ सिंह ७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर, पिशाचमोचन, वाराणसी
मंत्री (आवासीय)	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र, २, नवीन मार्केट, कानपुर
मंत्री	श्री प्रेमसागर मिश्र, ६, नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ
	श्री अत्रिदेव तिवारी, ५/३३५, सिन्धी मिल कालोनी, देवरिया
	श्री जगदीश बाजपेयी, ४, सुभाष मार्केट, रमतेराम रोड, गाजियाबाद
	श्री महिनारायण झा ४७, टाइप-३, सेक्टर-१, बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार
	श्री रामलोचन उपाध्याय, भा० म० सं० बाँसमण्डी, बरेली

मंत्री श्री सभा नारायण पाण्डे, २/१०६, रिफाइनरी नगर, मथुरा

श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, ११३/८, एम० टी० लाईन, इलाहाबाद

वित्त सचिव श्री रमाकान्त शुक्ल, ४६०, फेथफुलगंज, कानपुर

संगठन मंत्री श्री रामदौर सिंह, ६, नवीन मार्केट, केसरबाग, लखनऊ

सह संगठन मंत्री श्री श्रीप्रकाश जी, २, नवीन मार्केट, कानपुर

श्री वीरेन्द्र कुमार, भा० म० सं०, अमरोहा गेट, मुरादाबाद

श्री विद्या सागर जी

१५/३९०, भगत सिंह द्वार, नूरी दवाजा, आगरा

श्री अम्बिका प्रसाद सिंह

२०५/८०, टैगोर टाउन, कर्नलगंज, इलाहाबाद

सदस्य श्री राजेश्वर दयाल शर्मा, शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग, मेरठ

श्री घनश्याम दास गुप्ता, मो० लाजपतराय, शामली, मुजफ्फरनगर

श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव, ३२, चकरौता रोड, देहरादून

श्री महेन्द्र पाठक, ३५५/१, सिविल लाइन्स, झाँसी

श्री प्यारेलाल प्रजापति, भा० म० सं०, बाँसमण्डी, बरेली

श्री देवदत्त शर्मा, ३/८८, शेख पट्टी, बदायूँ

श्री प्रेम प्रकाश राय

विद्युत वितरण खण्ड द्वितीय, ग्रा० पो० सठियाव, आजमगढ़

श्री शेखर यादव (एडवोकेट)

४०/२९६, कृष्णा नगर, कीडगंज, इलाहाबाद

श्री रामाधार शुक्ल, २८, होलीनगर, सीतापुर

श्री राम नरेश परिहार

घाटमपुर चीनी मिल क्वार्टर, जहाँगीराबाद, कानपुर देहात

श्री सुधाकर मिश्रा, एल० आई० जी० ४, इन्द्रानगर, कानपुर

श्री जगदीश चन्द्र शर्मा, चीनी मिल कालोनी, बरेली

श्री सुरेन्द्र प्रसाद, काशीपुर चीनी मिल, काशीपुर, नैनीताल

श्री शम्भू प्रसाद भट्ट, ग्रा० उपल्डा, पोस्ट श्रीनगर, पौड़ी, गढ़वाल

श्री मुरारी लाल बत्रा

सुगर मिल मजदूर संघ, रोहना कलाँ, मुजफ्फरनगर

श्री सुधीर त्यागी

किसान सहकारी चीनी मिल मजदूर संघ, ननौता, सहारनपुर

श्री हरीश तिवारी

८१७/II/सैक्टर ३ बी० एच० ई० एल०, रानीपुर, हरिद्वार

श्री सत्य प्रकाश शर्मा

भा० म० सं० १५/३९० भगत सिंह द्वार, नूरी दवाजा, आगरा

सदस्य श्री लक्ष्मी प्रसाद जैसवाल
ई/११-ए, अपर रेलवे कालोनी, देहरादून
श्री सतीश चन्द्र उपाध्याय, १२७, आगरा गेट, फिरोजाबाद
श्री सर्वेश चन्द्र द्विवेदी, ११९/३८ नसीमाबाद, कानपुर
श्री अशोक कुमार शर्मा
उ० प्र० रोडवेज कर्मचारी संघ कार्यालय, कैंट डिपो, वाराणसी
श्री अरुण कुमार मिश्र, १२८/३२१ शास्त्री नगर, कानपुर
श्री कोमल सिंह
गोरखपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, ललकुलवा बाजार, गोरखपुर
श्री राजकिशोर यादव
टेलीफोन कार्यालय, निकट नगरपालिका, फैजाबाद
श्री नागेश सिंह, पी० डब्ल्यू० डी० कालोनी, दूरभाषनगर, रायबरेली
श्री गंगा विष्णु शुक्ल
७२८, टेकारी कोठी, सिविल लाइन्स, रायबरेली
श्री लक्ष्मी नारायण, भा० म० सं०, मधुपुरा, अलीगढ़
श्री रामसूरत, ६, नवीन मार्केट केसरबाग, लखनऊ
श्री आर० एन० सिंह
७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
श्री यशवन्त सिंह, एल्यूमीनियम कर्मचारी यूनियन कार्यालय
७ बी, स्टाफ क्वार्टर, रेनूकूट, सोनभद्र
श्री प्रदीप चक्रवर्ती, जे-९८, चुर्क, मिर्जापुर
श्री लल्लन शुक्ल
७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
श्री बेचन सिंह, ४८ ए, चक रघुनाथपुर, नैनी, इलाहाबाद
श्री अशोक कुमार दिग्विजय
१५/३९० भक्त सिंह द्वार, नूरी दरवाजा, आगरा
श्री शान्तिशरण मिश्र, लोहियानगर विधूना, इटावा
श्री अजय सिंह
६७८ हुसेनाबाद खरका विद्युतप्रेषण खण्ड, पोस्ट कचहरी
जौनपुर
श्री अख्तर हुसैन, ३०० शेख सराय, बुलन्दशहर
श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह, आदर्श डिस्टीलरी कर्मचारी संघ
केसपिपसन लिमिटेड, रोजा, शाहजहाँपुर
श्री रामनरेश भार्गव
१३६, सिपरी बाजार, निकट मालगोदाम, झाँसी

सदस्य श्री त्रिभुवन सिंह, ब्लाक नं० १०/एल ४०६ हिन्दुस्तान
एल्यूमिनियम कारपोरेशन, रेनूकूट, सोनभद्र
श्री अवधेश कुमार शर्मा, १८४/४ बाबूपुरवा कालोनी, कानपुर
श्री के० एन० शर्मा, १३-ए, रेलवे कालोनी, बादशाह नगर, लखनऊ
श्रीमती राजकुमारी सिंह
७ एफ, कारपोरेशन क्वार्टर्स, पिशाचमोचन, वाराणसी
श्री कैलाश त्रिपाठी, २, नवीन मार्केट, कानपुर
कु० बसन्ती शाही,
कार्यालय बाल विकास परियोजना, गरम पानी, नैनीताल
श्रीमती मुन्नी राय
द्वारा के० के० सिंह, सोमैय्या आर्गेनिक्स, बाराबंकी
श्रीमती दुर्गावती सिंह, ग्राम कहरवा, पोस्ट फूलपुर, वाराणसी

विशेष आमन्त्रित

श्री विजय पाल सिंह, सहकारी नगर इण्टर कालेज, बुलन्दशहर
श्री सुरेन्द्र सिंह, किसान सहाकारी चीनी मिल
प्रगतिशील कर्मचारी संघ, सम्पूर्णानगर, खीरी
श्री राम बाबू गुप्ता, ३३९, गोपालगंज, उरई, जालौन
श्री पी० के० पालीवाल
आई-१-७७ विश्व बैंक कालोनी, बर्रा, कानपुर
श्री इन्द्र बहादुर सिंह
चुनार सीमेन्ट फैक्ट्री कालोनी, चुनार, मिर्जापुर
श्री रामकिशोर शिवहरे
आर० टी० ओ० बिल्डिंग, शास्त्रीनगर, अतर्रा रोड बाँदा
श्री हंसराज सिंह, हाइडिल कालोनी रेलवे स्टेशन के पास, मैनपुरी
श्री देवेन्द्र सिंह, भा० म० सं०, १४७, जटाशंकर पोखरा, गोरखपुर
श्री के० के० सिंह, सोमैया आर्गेनिक्स, बाराबंकी
श्री डी० सी० शर्मा
१५/३९०, भगत सिंह द्वार, नूरी दरवाजा, आगरा
श्री राम भुवन मिश्र एडवोकेट,
ग्राम मुरादपुर कोटला, पोस्ट बदलापुर, जौनपुर

भारतीय मजदूर संघ उ०प्र० की प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति की बैठकों का तिथिवार विवरण

प्रारम्भ में २४ फरवरी १९५७ को प्रथम, २० फरवरी १९५८ को द्वितीय, २२ मार्च १९५९ को तृतीय और २२ अक्टूबर १९६० को चतुर्थ प्रान्तीय अधिवेशन कानपुर में ही सम्पन्न हुए। सत्रह प्रान्तीय अधिवेशनों तक, अर्थात् बुलन्दशहर में जो प्रान्तीय अधिवेशन २२ व २३ दिसम्बर १९७४ को हुआ था वहाँ तक, प्रान्तीय अधिवेशन वार्षिक अधिवेशन के रूप में उत्तर प्रदेश में हर साल हुआ करते थे अतः ब्यौरेवार प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति की बैठक हर तीसरे अथवा चौथे महीने में बुलाना लगभग कठिन होता था। इसलिए छः महीने के बाद प्रान्तीय प्रतिनिधि सम्मेलन की आम सभा प्रान्त के किसी न किसी स्थान पर करने का चलन उस समय था। १९७५ में इमरजेंसी (आपातकाल) का खौफनाक वातावरण सारे देश में रहा। वैसी विकट परिस्थिति में भी अदम्य साहस का परिचय देते हुए १४ नवम्बर १९७६ को आगरा में अठारहवाँ प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ था जहाँ पर एक निर्णय यह भी लिया गया था कि प्रान्तीय अधिवेशन हर साल न करके हर तीसरे साल किये जायें। अतः गाजियाबाद में ७ व ८ जनवरी १९७७ को सम्पन्न प्रान्तीय अधिवेशन के बाद यही प्रथा चलती आ रही है।

इस समय जो भी आँकड़े उपलब्ध हो सके हैं उनके अनुसार प्रान्तीय कार्यसमिति की बैठकों का विवरण निम्न प्रकार से है—

६ व ७ मई १९६१	वाराणसी
१ मई १९६५	हाथरस (अलीगढ़)
४ मार्च १९६७	नवगढ़िया धर्मशाला, देवरिया में उत्तर प्रदेश व बिहार प्रदेश की सम्मिलित कार्यसमिति सम्पन्न हुई थी।
२० जुलाई १९६९	७, रॉयल होटल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ। इस पुस्तक के संकलनकर्ता श्री राजेश्वर दयाल शर्मा पहली बार विशेष आमंत्रित के रूप में बी०एम०एस० की इस प्रान्तीय बैठक में सम्मिलित हुए थे।
१ जनवरी १९७१	निराला नगर शिशु मन्दिर, लखनऊ
२ दिसम्बर १९७१	रामलीला भवन (संघ कार्यालय), हरिद्वार
१६ फरवरी १९७२	कानपुर कार्यालय, कानपुर (सभी क्षेत्रीय संगठन मंत्री)
२७ जुलाई १९७२	जे०के० धर्मशाला, श्रीनगर, कानपुर
१७ नवम्बर १९७२	बी०एच०ई०एल०, रामलीला मैदान, रानीपुर, हरिद्वार
१८-२० नवम्बर १९७३	रेनूकूट, मिर्जापुर
३० मई १९७४	दारुल सफा, लखनऊ

२१ जून १९७४	देवरिया शुगर फैक्ट्री, देवरिया
२९ अगस्त १९७४	दरियागंज दिल्ली का श्री राम मन्दिर
२१ दिसम्बर १९७४	सहकारी नगर, बुलन्दशहर
३१ मई १९७५	कानपुर कार्यालय, २, नवीन, मार्केट, परेड, कानपुर
३० मई १९७६	दारुल सफा, लखनऊ
२७ व २८ अप्रैल १९७७	कालिया बाग, वाराणसी
७, ८ अगस्त १९७७	धर्म समाज कालेज, अलीगढ़
१९ मार्च १९७८	४०, रायल होटल, लखनऊ
१५ जून १९७८	भारतीय शिक्षा मन्दिर, इंगलिशिया लाइन, वाराणसी
८ फरवरी १९७९	अग्रवाल धर्मशाला, नरौरा, बुलन्दशहर
२६ व २७ मई १९७९	कम्यूनिटी हाल, भेल, रानीपुर, हरिद्वार
१८ व १९ अगस्त १९७९	सुन्दर लाल जैन धर्मशाला, आगरा
२४ जून १९८०	वाराणसी
२४ व २५ अक्टूबर १९८०	पूर्वोत्तर रेलवे मनोरंजन केन्द्र, लखनऊ
१८ व १९ जनवरी १९८१	द्वारिकाधीश धर्मशाला, जयपुर जूट उद्योग के पास, कानपुर
३० व ३१ मई १९८१	आई० टी० आई० कम्यूनिटी हॉल, रायबरेली
१९ व २० सितम्बर १९८१	लखनऊ मनोरंजन क्लब, ऐश बाग, लखनऊ
२४ जनवरी १९८२	रामलीला मैदान, अलीगढ़
१३ अप्रैल १९८२	अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर
१८, १९, २० सितम्बर १९८२	बाबा सिद्धनाथ मन्दिर, लखनऊ
९ मई १९८२	प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक, लखनऊ
२२ दिसम्बर १९८२	प्रमुख कार्यकताओं की बैठक, वाराणसी
२३, २४, २५ जनवरी १९८३	फर्टिलाइजर निरीक्षण भवन गोरखपुर
२५ व २६ मई १९८३	सरस्वती शिशु मन्दिर, देहरादून
२१ व २४ सितम्बर १९८३	रामचरित मानस धर्मशाला, अयोध्या
१९ दिसम्बर १९८३	क्षेत्र प्रमुखों की बैठक, कानपुर
१० व ११ मार्च १९८४	मेरठ सूरजकुण्ड कार्यालय, मेरठ
८ व ९ जुलाई १९८४	कल्याण मण्डप हिण्डालको, रेनूकूट, मिर्जापुर
१८ फरवरी १९८५	कान्यकुब्ज इण्टर कालिज, लखनऊ
१६ मार्च १९८५	क्षेत्र प्रमुखों की बैठक, गाजियाबाद कार्यालय। इसके बाद सभी लोग अस्वस्थ मान्यवर बड़े भाई जी से मिलने केशव कुंज, झण्डेवालान, नई दिल्ली गये थे जो एक दिन पूर्व ही अपने गाँव बगही जिला मिरजापुर से आये थे।
१६ व १७ मई १९८५	वाराणसी
१ व २ अक्टूबर १९८५	नैनीताल
१५, १६, १७ फरवरी १९८५	सीतापुर

८ व ९ जून १९८६	राजपुर रोड, देहरादून
२५ व २६ अक्टूबर १९८६	फिरोजाबाद
१५ व १६ फरवरी १९८७	सरस्वती शिशु मन्दिर, बरेली
३० व ३१ मई १९८७	देवरिया
३०, ३१ अगस्त व १ सितम्बर १९८७	स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश
२८ व २९ फरवरी १९८८	कानपुर
२८ व २९ मई १९८८	सरस्वती शिशु मन्दिर, बी० एच० ई० एल०, रानीपुर, हरिद्वार
४ व ५ सितम्बर १९८८	राजामण्डी, आगरा
७ व ८ जनवरी १९८९	गाजियाबाद
२९ व ३० अप्रैल १९८९	अयोध्या
३० व ३१ जुलाई १९८९	मुरादाबाद
३ व ४ दिसम्बर १९८९	अलीगढ़
५ व ६ अप्रैल १९९०	इलाहाबाद
२८ व २९ जुलाई १९९०	आर्य समाज मन्दिर, झाँसी
१५ व १६ दिसम्बर १९९०	जैन धर्मशाला, इटावा
२२ व २३ जून १९९१	शुगर मिल कैम्पस, बाजपुर, जिला नैनीताल
२२ अक्टूबर १९९१	डी० ए० वी० कालिज, वाराणसी
२१ व २२ दिसम्बर १९९१	जिन्दल धर्मशाला, अलीगढ़
२३ व २४ मई १९९२	सरस्वती शिशु मन्दिर, बरेली
१९, २०, २१ सितम्बर १९९२	अग्रवाल व्यापार सभा भवन, ऋषिकेश
१३ व १४ फरवरी १९९३	हकीम मुकुट लाल की धर्मशाला बुलन्दशहर
२३ व २४ मई १९९३	तुलसी नगर सरस्वती शिशु मन्दिर, अयोध्या
१९, २०, २१ सितम्बर १९९३	शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर
१२ व १३ दिसम्बर १९९३	बहेड़ी शुगर मिल, जिला बरेली
२४ व २५ अप्रैल १९९४	पीलीभीत शुगर मिल, पीलीभीत
४ व ५ सितम्बर १९९४	सरस्वती शिशु मन्दिर, जौनपुर
१५ नवम्बर १९९४	सरस्वती शिशु मन्दिर, कमला नगर, आगरा
२४ व २५ दिसम्बर १९९४	राम राय ट्रस्ट, जोखीराम धर्मशाला कानपुर। प्रान्तीय पदाधिकारियों एवं क्षेत्र प्रमुखों की बैठक सम्पन्न हुई।
५ व ६ मार्च १९९५	प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति, रामनाथ रामकिशन सरस्वती शिशु, मन्दिर कर्वी (चित्रकूट), जिला बाँदा
२१ व २२ मई १९९५	संचालन समिति की बैठक, हरिद्वार
१५, १६, १७ जुलाई १९९५	शाहजहाँपुर

३० सितम्बर १९६४ तक उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ की रजिस्टर्ड यूनियनें

१.	आगरा शू मजदूर संघ, नगला गंगाराम, आगरा	१-९-६१
२.	काँच एवं चूड़ी उद्योग मजदूर संघ, फिरोजाबाद मौहल्ला गंज, फिरोजाबाद, जिला आगरा	८-१-६२
३.	रिक्शाचालक संघ, फिरोजाबाद, आगरा मौहल्ला गंज, फिरोजाबाद, जिला आगरा	२१-८-६२
४.	आगरा आरा मशीन मजदूर संघ, हींग की मण्डी रोड, आगरा	२३-११-६३
५.	आगरा स्वर्णकार मजदूर संघ, आगरा कार्यालय, फुव्वारा, आगरा	२९-१-६४
६.	आगरा कैमिस्ट वर्क्स यूनियन, आगरा, फुव्वारा, आगरा	१९-९-६४
७.	ठेलिया पल्लेदार मजदूर संघ, प्रयाग २६३, रानी मण्डी, प्रयाग, इलाहाबाद	२५-८-६२
८.	दुकान कर्मचारी मजदूर संघ, प्रयाग २७३, रानी मण्डी, प्रयाग, इलाहाबाद	२४-९-६२
९.	सूती मिल कर्मचारी संघ, हाथरस द्वारा राम जी, हाथरस, जिला अलीगढ़	१६-२-६२
१०.	बी फार्मेसी लेवर यूनियन, विजयगढ़, अलीगढ़ मार्फत श्री बाबू राम शर्मा, विजयगढ़, अलीगढ़	६-९-६३
११.	श्री स्वर्णकार संघ हाथरस, रुई की मण्डी, हाथरस, जिला अलीगढ़	४-१०-६३
१२.	सफाई मजदूर संघ, सासनी, कृष्णापुरी, सासनी, अलीगढ़	३-८-६४
१३.	सूती मिल मजदूर संघ, उझानी, बदायूँ	८-२-५५
१४.	जिला धीवर निषाद फेडरेशन, कटरा बांदा, जिला बांदा	२०-१०-५९
१५.	मिल मजदूर संघ, नारायणी रोड, अतर्रा, जिला बांदा	१८-९-६१
१६.	भारतीय चीनी मिल श्रमिक संघ, बुलन्दशहर, श्री सुरेश चंद गुप्ता द्वारा श्री गीताराम जी, राजा बाबू रोड, शिवपुरी, बुलन्दशहर	२९-१-६४
१७.	बरेली बाजार कर्मचारी संघ मार्फत श्री सत्य प्रकाश, शिवाजी मार्ग, बरेली	२-२-६१
१८.	होटेल वकर्स यूनियन द्वारा श्री सत्य प्रकाश, शिवाजी मार्ग, बरेली	३०-१२-६३
१९.	राजकीय रोडवेज कर्मचारी सुरक्षा संघ, बरेली रीजन कार्यालय, बरेली	२३-१-६४
२०.	सिल्क मिल श्रमिक संघ, वाराणसी एस-६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी कैन्ट	६-६-५८
२१.	रासायनिक मजदूर संघ, वाराणसी एस-६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी कैन्ट	२४-१२-६०

२२. मुद्रण कर्मचारी संघ, वाराणसी
एस-६/३ अर्दली बाजार वाराणसी कैन्ट — १८–९–६१

२३. यांत्रिक श्रमिक संघ, वाराणसी,
एस-६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी कैन्ट — ३–१०–६१

२४. ड्राई क्लीनर्स श्रमिक संघ वाराणसी,
एस-६/३ अर्दली बाजार, वाराणसी कैन्ट — ५–१२–६२

२५. हलवाई एवं होटेल कर्मचारी संघ, वाराणसी
ठठेरी बाजार, वाराणसी — १–२–६३

२६. शम्भु राव गलीचा श्रमिक संघ, खमरिया
ग्रा० व पो० खमरिया, वाराणसी — ५–८–६४

२७. चीनी उद्योग कर्मचारी संघ, कठकुइयाँ
चीनी मिल कठकुइयाँ, जिला देवरिया — २०–३–६२

२८. भारतीय चीनी मिल मजदूर संघ, पडरौना, जिला देवरिया
मौहल्ला कुनईजिया, पश्चिमी पडरौना (देवरिया) — १–५–६२

२९. भारतीय चीनी उद्योग कर्मचारी संघ, गाँव व पोस्ट छितौनी,
देवरिया — ९–८–६२

३०. भारतीय चीनी मिल मजदूर संघ, मिल क्वार्टर, खेतान चीनी
मिल, रामकोला, देवरिया — १५–१२–६३

३१. भारतीय चीनी मिल मजदूर संघ (पी), रामकोला, देवरिया — १६–९–६३

३२. चीनी मिल कर्मचारी संघ, सिवराही, देवरिया
रामकोही रोड, पो० सिवराही, जिला देवरिया — २–१०–६३

३३. देवरिया चीनी मिल कर्मचारी संघ, देवरिया — २६–६–६४

३४. ऋषिकेश कर्मचारी संघ, ऋषिकेश जिला देहरादून
रामकुटी, कानपुर वाली धर्मशाला, ऋषिकेश, देहरादून — ९–११–५७

३५. ट्रंकमेकर्स एण्ड ब्लैकस्मिथ यूनियन, ८-यू सब्जी मण्डी, देहरादून — २१–५–५८

३६. आरा मशीन कर्मचारी संघ, कचहरी रोड, देहरादून — २९–१–६२

३७. टेलर्स वर्कर यूनियन, देहरादून, १५ कचहरी रोड, देहरादून — ३०–१०–६३

३८. ऐन्टीबायटिक्स प्रोजेक्ट ऋषिकेश कर्मचारी संघ, १८१ झण्डा
चौक, ऋषिकेश, देहरादून — ८–११–६३

३९. तांगाचालक संघ, देहरादून, १५ कचहरी रोड, देहरादून — १७–१२–६३

४०. मसोधा चीनी मिल कृषि विभाग श्रमिक संघ, पोस्ट मोती नगर,
जिला फैजाबाद — ४–८–६१

४१. श्रमिक संघ, चीनी मिल, बलरामपुर, जिला गोंडा — २४–३–६१

४२. बलरामपुर दुकान कर्मचारी संघ, जिला गोंडा, यू० पी० — २०–३–६२

४३. श्रमिक संघ, चीनी मिल, पो० तुलसीपुर, जिला गोंडा — १८–१–६४

४४. नगरपालिका कर्मचारी संघ, कर्नलगंज, गोंडा — ८–९–६४

४५.	एन० ई० रेलवे पोर्टर्स एसोसिएशन, जटेपुर पोखरा, गोरखपुर	२०-११-४१
४६.	दुकान कर्मचारी संघ, गोरखपुर, जटाशंकर पोखरा, गोरखपुर	३-९-५६
४७.	नाविक जल मजदूर संघ, गोरखपुर, बढ़हल गंज घाट पोस्ट बढ़हल गंज, गोरखपुर	११-४-५८
४८.	यूनिवर्सिटी एम्प्लाईज यूनियन, गोरखपुर यूनिवर्सिटी	१९-३-६२
४९.	भारतीय चीनी मिल कर्मचारी संघ, सिसवा बाजार, गोरखपुर लेबर क्वार्टर, महावीर शुगर मिल्स (प्रा०) लि० सिसवा बाजार, गोरखपुर	९-८-६२
५०.	पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ, जटेपुर पोखरा, गोरखपुर	१४-९-६२
५१.	भारतीय रिक्शाचालक संघ, गोरखपुर, जटेपुर पोखरा, गोरखपुर	३१-१०-६३
५२.	भारतीय चीनी मिल मजदूर संघ, पिपराईच, जिला गोरखपुर चीनी मिल क्वार्टर्स, पिपराइच, गोरखपुर	३१-१०-६३
५३.	भारतीय चीनी मिल मजदूर संघ, घुघली जिला गोरखपुर लेबर कालोनी (दि पंजाब शुगर मिल्स क० लि० घुघली) जिला गोरखपुर	१०-३-६४
५४.	जिला जालौन बाजार कर्मचारी संघ, उरई, २४८ तुलसी नगर, जिला जालौन	४-९-५६
५५.	आइरन एण्ड स्टील मजदूर यूनियन, ११९/११ नसीमाबाद, कानपुर	२२-५-४७
५६.	नागरथ पेंट्स मजदूर यूनियन, १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा	२८-१-४८
५७.	सी० ओ० डी० मजदूर पंचायत, २१४/५ न्यू लेबर कालोनी बाबूपुरवा, कानपुर	१५-११-४९
५८.	दि पैराशूट फैक्ट्री यूनियन, बर्तन लाइब्रेरी, नई सड़क, कानपुर	९-५-५०
५९.	कपड़ा मिल कर्मचारी संघ, कानपुर, १४/१२ बम्बा रोड, कानपुर	२१-१२-५३
६०.	सी० ओ० डी० कर्मचारी यूनियन, कानपुर रामहाल, बिरहाना रोड, कानपुर	२०-४-५४
६१.	टी० डी० इंज० आई० जी० एस० कर्मचारी यूनियन, तिलक हाल, कानपुर	२०-१२-५४
६२.	लेबर यूनियन टैक्नीकल डेवलपमैंट एस्टैब्लिशमेंट, कानपुर ४२१ फेथफुलगंज, कानपुर	९-६-५५
६३.	बुशवेयर कर्मचारी यूनियन, १४/१२ बम्बा रोड, कानपुर	३१-८-५५
६४.	पैराशूट कर्मचारी यूनियन, ६५/८० मोतीमहाल, कानपुर	२-११-५५
६५.	आरा मशीन मजदूर यूनियन, कानपुर १४/१२ बम्बा रोड, कृष्णनगर, कानपुर	४-८-५६
६६.	सिनेमा एम्प्लाईज यूनियन, कानपुर, १०६/३७१ हीरागंज, कानपुर	२६-१०-५६

६७. कानपुर आइस एण्ड स्टील एम्प्लाईज यूनियन उत्तर प्रदेश
१०६/३७१ हीरागंज, कानपुर १२-८-५७

६८. सिविलियन एम्प्लाईज यूनियन, मिलिटरी डेरी फार्म
म० न० ६५२ फेथफुलगंज, अस्पताल रोड, कानपुर १२-१०-५७

६९. भारतीय आइस एण्ड इंजीनियरिंग मजदूर संघ, कानपुर
१४/११-ए बम्बा रोड, कृष्णनगर, कानपुर ३०-१०-५७

७०. भारतीय कैमिकल मजदूर संघ, कानपुर
१४/११-ए, बम्बा रोड, कृष्णनगर, कानपुर १६-१-५८

७१. कानपुर आयल मिल्स इम्प्लाईज यूनियन, कानपुर
१०६/३७१ हीरागंज, कानपुर १२-३-५८

७२. कपूर ऐलन मजदूर कमेटी, कानपुर
२६/५ लेबर कालोनी, नवाबगंज, कानपुर १८-१२-५९

७३. सुरक्षा कर्मचारी संघ, कानपुर, ११/२५५ सूटरगंज, कानपुर ७-१२-६०

७४. जी० ई० सी० कर्मचारी संघ, यू० पी०
३६/८ राममोहन का हाता, कानपुर ४-२-६१

७५. आइस एण्ड कोल्डस्टोरेज कर्मचारी संघ, कानपुर
१४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर २२-८-६१

७६. साइकिल कर्मचारी संघ, १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर १८-९-६१

७७. नवीन प्रगतिशील इन्सपेक्ट्रेट श्रमिक संघ, १४९/२ हरिहरनाथ,
शास्त्रीनगर, कानपुर २१-९-६१

७८. कोल्डस्टोरेज इम्प्लाईज यूनियन, उत्तर प्रदेश
१०६/३७१ हीरागंज, कानपुर १-३-६२

७९. ठेलिया पल्लेदार मजदूर यूनियन, कानपुर
५९/११८ बिरहाना रोड, कानपुर २८-४-६२

८०. टाउन एरिया कर्मचारी संघ, पुखरायाँ (कानपुर)
सरस्वती भवन, पुखरायाँ, जिला कानपुर १-९-६२

८१. जूट मिल श्रमिक संघ, कानपुर
१४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर १०-१२-६२

८२. भारतीय होजरी मजदूर संघ, कानपुर
१४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर २७-१-६३

८३. सी० ए० एण्ड एन० डब्ल्यू० टी० टैक्नीकल एण्ड सुपर वाइजरी
यूनियन स्टाफ, ११२-ए/३४ अशोक नगर, कानपुर ३०-३-६३

८४. प्रेस कर्मचारी यूनियन, १४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर २८-८-६३

८५. फारमेसिस्ट एसोसिएशन, कानपुर,
सर्वहितकारी धर्मार्थ डिस्पेन्सरी, छपरा मुहाल, कानपुर ११-९-६३

८६. विद्यालय कर्मचारी संघ, कानपुर, ८ नवीन मार्केट पेड, कानपुर ५-११-६३

८७. सिंह प्लेट मजदूर संघ, कानपुर, ८४/५९ अनवर गंज, कानपुर ५-४-६४

८८. दि ग्लास एण्ड बल्ब मैन्यूफैक्चर बल्ब कर्मचारी यूनियन, कानपुर
३३२/३ जूही कालोनी, कानपुर १३-४-६४

८९. कानपुर महापालिका कर्मचारी संघ, कानपुर
१४/१२ बम्बा रोड, दर्शनपुरवा, कानपुर २-९-६४

९०. डेरी वर्कर्स यूनियन, बाँस मण्डी, गौतम बुद्ध मार्ग भा० म० संघ
कार्यालय, लखनऊ १६-३-६२

९१. गवर्नमैंट प्रेस मजदूर यूनियन, लखनऊ
२५ छितवापुर रोड, लालकुआँ, लखनऊ १-६-६२

९२. लखनऊ विश्वविद्यालय कर्मचारी संघ, मार्फत शिव सिंह राठौर,
जूलौजी डिपार्टमैंट, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ २२-११-६२

९३. मुद्रण व प्रकाशन कर्मचारी संघ, गौतम बुद्ध मार्ग (बाँसमण्डी)
स्वदेशी प्रेस के पास, लखनऊ २८-१-६३

९४. कालीन बुनकर संघ, ई० हिल एण्ड कम्पनी, खमरिया, मिर्जापुर
मार्फत श्री दूधनाथ शुक्ला, ई० हिल एण्ड कं०, खमरिया,
मिर्जापुर २०-४-५५

९५. एल्यूमिनियम कर्मचारी यूनियन, रेणुकूट, जिला मिर्जापुर
सी-१२, तुर्रा बाजार, जिला मिर्जापुर २८-११-६१

९६. बिजली मजदूर संघ, मथुरा,
राम भरोसे चतुर्वेदी, ओझा गली, चौक बाजार, मथुरा ७-९-६४

९७. मेरठ जिला इंजीनियरिंग मजदूर यूनियन, गाजियाबाद (मेरठ)
५७६ बजरिया, गाजियाबाद (मेरठ) १०-१०-६१

९८. कोल्ड स्टोरेज एण्ड आइस वर्कर्स यूनियन, गाजियाबाद (मेरठ)
५७६ बजरिया, गाजियाबाद, मेरठ ७-४-६२

९९. हैन्डलूम वर्कर्स यूनियन, गाजियाबाद (मेरठ)
५७६ बजरिया, गाजियाबाद, मेरठ १९-४-६२

१००. प्रेस कर्मचारी संघ, गाजियाबाद (मेरठ)
मकान कान्ती प्रसाद शर्मा, बोजा, गाजियाबाद, मेरठ १२-९-६२

१०१. लोहा इस्पात इंजीनियरिंग मजदूर संघ, गाजियाबाद (मेरठ)
द्वारा हरविलास गर्ग, रमते राम रोड, गाजियाबाद जिला मेरठ १३-९-६२

१०२. पिलखुआ कर्मचारी संघ, पिलखुआ, मेरठ
दुकान नं० १३६ के ऊपर तिराहा, पिलखुआ, मेरठ १९-४-६३

१०३. पीतल मजदूर यूनियन, हापुड, मेरठ
५७६ बजरिया, गाजियाबाद, मेरठ २१-८-६३

१०४. हापुड़ कर्मचारी संघ, हापुड़, मेरठ, ५२ भगवान नगर, हापुड़,
मेरठ २३-१२-६३

१०५. गाजियाबाद जनरल इन्डस्ट्रीज (प्रा०) लि० मजदूर यूनियन,
५७६ बजरिया, गाजियाबाद, मेरठ २३-१२-६३

१०६. चीनी मिल कर्मचारी संघ, शामली
मो० डयू दरवाजा, शामली, मुजफ्फरनगर १५-२-६४

१०७. शामली दुकान कर्मचारी संघ, शामली
मौ० डयू दरवाजा, शामली, मुजफ्फरनगर ३०-३-६४

१०८. व्यवसायी कर्मचारी संघ, रामनगर मौ० भवानीगंज, रामनगर,
जिला नैनीताल १४-२-६३

१०९. प्रेस कर्मचारी संघ, रायबरेली
पन्हौना कोठी, स्टेशन रोड, रायबरेली ७-२-६४

११०. राज मजदूर संघ, सीतापुर, तानसेन गंज, सीतापुर २५-२-५९

१११. रेलवे कुली संघ सीतापुर
मार्फत पुरुषोत्तम दास मेहरोत्रा, तानसेन गंज, सीतापुर १-५-६१

११२. नगरपालिका जलवाहक संघ, सीतापुर, तानसेन गंज, सीतापुर ७-११-६२

११३. कम्पनी बाग वर्कर्स यूनियन, २७/५ जनकपुरी, देहरादून रोड,
सहारनपुर २७-४-'५०

११४. हरिद्वार रिक्शाचालक संघ, हरिद्वार, निकट चित्रा टाकीज, हरिद्वार ८-२-६०

११५. सूती मिल मजदूर संघ, सहारनपुर
सुगर मिल बाजार, नकुड़ रोड, सहारनपुर १०-५-६१

११६. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी यूनियन, हरिद्वार ८-४-६३

११७. रुड़की रिक्शाचालक कमेटी, रुड़की
आर्यसमाज मन्दिर रोड, पुराना थाना, रुड़की ६-९-६३

११८. नगरपालिका कर्मचारी संघ, सहारनपुर
डाक बंगला, जिला बोर्ड सहारनपुर ७-५-६४

'भारत का धर्म एवं अध्यात्म के अधिष्ठान पर आधारित राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटम्बकम्' तथा 'स्वदेशो भुवनत्रयम्' के उच्चादर्शों को लेकर आगे बढ़ता है जबकि पश्चिम का राष्ट्रवाद दूसरों के अमंगल में अपना मंगल देखता है। हम किसी दूसरी माँ को नहीं जानते। हमारे लिए तो जननी जन्मभूमि ही स्वर्ग से महान् है (जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी)। हमारे लिए माँ नहीं, बाप नहीं, भाई नहीं, पत्नी नहीं, पुत्र नहीं, घर नहीं, द्वार नहीं। हमारी तो केवल वही सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम् भारतमाता है।

—बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

श्री रामलोचन उपाध्याय (बरेली)और श्री ओमप्रकाश गौतम

(बायें से) श्री पं० रामप्रकाश मिश्रा, श्री ब्रह्मदत्त त्यागी और श्री रामदौर सिंह

उत्तर प्रदेश में हुए कुछ प्रमुख महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

- **अभ्यास वर्ग**—कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल एवं आसाम के पूर्णकालिक कार्यकताओं का एक अभ्यास वर्ग कानपुर में फरवरी १९७२ में सम्पन्न हुआ था। उस समय माननीय बड़े भाई जी के पास उ० प्र०, बिहार, बंगाल एवं आसाम का कार्यक्षेत्र था । इस अभ्यास वर्ग में मान्यवर दत्तोपंत जी का लगातार चार दिन बहुत ही उत्साहवर्धक, आकर्षक एवं अनूठा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था।

- २७ व २८ अक्टूबर १९८० को लखनऊ में भारतीय रेलवे मजदूर संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ था जो अति भव्य था।

- (१) पूर्वी उत्तर प्रदेश में १३, १४ एवं १५ दिसम्बर १९८६ को रायबरेली में और (२) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ३, ४ व ५ जनवरी १९८७ को गंगा जी के किनारे नरौरा जिला बुलन्दशहर में शिक्षा वर्ग सम्पन्न हुआ जिसमें मान्यवर ठेंगड़ी जी का सम्पूर्ण समय मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ।

- **अभ्यास वर्ग**—भारतीय मजदूर संघ, उत्तरी भारत का अभ्यास वर्ग, जिसमें समस्त पूर्णकालिक कार्यकर्ता शामिल थे, २७, २८ व २९ नवम्बर १९८८ को महाबोधि बिरला धर्मशाला, सारनाथ, वाराणसी में सम्पन्न हुआ था। गीता के श्लोकः

  अधिष्ठानम् तथा कर्ता, करणं च पृथग्विविध।
  विविधाश्च पृथक्चेष्टा, दैवं चैवार्त पंचमम्॥

  पर आधारित लगातार चार दिन मान्यवर ठेंगड़ी जी का ओजस्वी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। इन चारों बौद्धिक विषयों पर आधारित बाद में एक पुस्तक 'हमारा प्रि[illegible]ान' के नाम से प्रकाशित हुई है।

- उत्तर प्रदेश में चीनी मिल मजदूर संघ की स्थापना अक्टूबर १९६२ में हुई तथा १३ व १४ अप्रैल १९६३ को पडरौना में इसका प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

- भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन ११, १२ मई १९६८ को मुरादनगर जिला गाजियाबाद (उस समय जिला मेरठ) की आर्डिनैंस फैक्ट्री के इण्टर कालेज में सम्पन्न हुआ। प्रतिरक्षा के इस महासंघ की स्थापना भारतीय मजदूर संघ के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर १३ अगस्त १९६७ को दिल्ली में हुई थी।

- भारतीय रेलवे मजदूर संघ का नामकरण संस्कार आगरा, उ० प्र० में हुआ और अधिवेशन बम्बई में हुआ था। इसी प्रकार परिवहन मजदूर संघ की स्थापना कानपुर, उ० प्र० में हुई लेकिन इसका केन्द्र नागपुर है।

- सीमेन्ट के कार्य की स्थापना उत्तर प्रदेश (चुर्क) में हुई।

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ विकास के पथ पर

वर्ष	यूनियनों की संख्या	सदस्य संख्या
वर्ष १९६० में	२४ यूनियनें	४,७३०
वर्ष १९६२ में	६८ यूनियनें	लगभग १०,०००
वर्ष १९६३ में	११२ यूनियनें	१७,५००
वर्ष १९६४–६५	१२८ यूनियनें	२०,०००
वर्ष १९६६ में	१३५ यूनियनें	३०,०००
वर्ष १९६८ में	१६६ यूनियनें	३७,०००
३१–१२–१९६९ तक	१७४ यूनियनें	६३,०००
३१–१२–१९७१	२३६ यूनियनें	७०,२२१
वर्ष १९७२ में	२३५ यूनियनें	७७,११२
वर्ष १९७३ में	२३७ यूनियनें	८६,६७४
३१–१२–१९७४ तक	२५८ यूनियनें	१,१४,२५१
वर्ष १९७५ में	२७७ यूनियनें	१,२६,०००
वर्ष १९७९ के वार्षिक विवरण के आधार पर	३१५ यूनियनें	३,२०,४०५
वर्ष १९८२ में	३५८ यूनियनें	३,८८,३९३
अप्रैल १९८९ में	४५६ यूनियनें	५,५९,२१६
दिसम्बर १९८९ तक	४८८ यूनियनें	५,१७,१३६
२० अक्टूबर १९९१ तक	५१५ यूनियनें	५,७०,४१५
३१–१२–१९९२ तक	४८८ यूनियनें	५,५०,३१०
३०–६–१९९४ तक	५७३ यूनियनें	६,१९,३०६

अपने देश के उद्योग तथा अर्थव्यवस्था तभी फले-फूलेगी जब स्वदेशी उद्योग अच्छी तरह से चलें। उद्योग चलने का मतलब है देश में उनके उत्पादन की खपत बढ़े, अर्थात् ग्राहक का झुकाव इन स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादनों की तरफ हो।

—पं० दीनदयाल उपाध्याय

३१ दिसम्बर १९८४ को उद्योगशः सदस्यता व यूनियनों का विवरण

क्र०	नाम उद्योग	यूनियनों की संख्या	सदस्य संख्या
१.	टैक्सटाइल्स	३२	६५,६११
२.	आइरन एन्ड स्टील	२	६४५
३.	मेटल ट्रेड्स	८	३,७७३
४.	इन्जीनियरिंग	४३	३४,३६८
५.	इलैक्ट्रिसिटी एन्ड स्टीम पावर	१४	३४,८३३
६.	ट्रान्सपोर्ट्स	१६	८०,४९३
७.	माइन्स	३	१,५८३
८.	प्रिंटिंग एन्ड पब्लिशिंग	१०	३,००६
९.	शुगर	६४	३३,६०९
१०.	सीमेन्ट	३	२,०४९
११.	केमिकल्स	१४	५,६२५
१२.	फूड एन्ड ड्रिंक्स	२१	४,४०५
१३.	टैनरीज एन्ड लैदर	५	२,२८७
१४.	पेपर एन्ड पेपर प्रॉडक्ट्स	५	१,३०३
१५.	एग्रीकल्चर	६	३४,७९२
१६.	लोकल बॉडीज	१४	६,१७५
१७.	सेलरीड, एम्प्लाइड एन्ड प्रोफोशनल वर्कर्स	६२	३७,५९९
१८.	पर्सनल सर्विसेज	१४	३,९२१
१९.	बैंक्स एन्ड अदर फाइनैंसियल इन्स्टीट्यूशन्स	१६	१०,३६९
२०.	वुड एन्ड वुड प्रॉडक्ट्स	९	८,३०९
२१.	विविध	२०	३५,१२४
	योग	३८१	४०९, ८७७

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ एवं अन्य श्रम संगठन—तुलनात्मक विश्लेषण

	१९७६ में	१९७७ में	वार्षिक विवरण के आधार पर वर्ष १९७९ में	
			यूनियनें	सदस्यता
भारतीय मजदूर संघ	१,३०,१२६	२,००,८३३	३१५	३,२०,४०५
इंटक (INTUC)	१,९०,६२०	१,७०,६५६	२५०	१,१६,५४९
H.M.S.	४५,२७५	४९,८२२	१२२	५९,९०३
H.M.P.	२२,८८७	७६,०३९	विवरण प्राप्त नहीं	
A.I.T.U.C (ऐटक)	७२,४७०	७४,६२०	९१	७२,२२९
U.T.U.C.	१२,६३३	१७,११७	३७	१४,०२२
C.I.T.U.	११,०४९	१६,१११	७७	२३,२३७
अमान्य महासंघों से सम्बद्ध			२५	२२,३२२
स्वतन्त्र			१,१०१	२,५१,४४७

भारतीय मजदूर संघ सबसे आगे

केन्द्रीय सरकार के मुख्य श्रमायुक्त द्वारा केन्द्रीय श्रम संगठनों की सत्यापित सदस्यता

(आधार तिथि ३१–१२–१९८९)

		गैर कृषि	कृषि	योग
१.	भारतीय मजदूर संघ	२७,६९,५५६	३,४७,७६८	३१,१७,३२४
२.	इंटक	२५,८७,३७८	१,१९,०७३	२७,०६,४५१
३.	सीटू	१७,६८,०४४	३०,०४९	१७,९८,०९३
४.	एच० एम० एस०	१३,१८,८०४	१,५८,६६८	१४,७७,४७२
५.	ऐटक	९,०५,९७५	१७,०००	९,२३,५१७
६.	यू० टी० यू० सी० (लेनिन सारिणी)	४,३३,४१६	३,६९,३९०	८,०२,८०६
७.	यू० टी० यू० सी०	२,२९,२२५	३,१०,२९८	५,३९,५२३
८.	एन० एफ० आई० टी० यू०	३,६३,६४३	१,६६,१३५	५,२९,९८२
९.	टी० यू० सी० सी०	३०,७९२	१,९९,३४७	२,३०,१३९
१०.	हिन्द मजदूर किसान पंचायत	३,५१६	–	३,५१६
११.	आई० एफ० एफ० टी० यू०	४२८	–	४२८
१२.	एन० एल० ओ०	१,३६,४१३	२,४६४	१,३८,८७७

सदस्यता सत्यापन १९८९

उत्तर प्रदेश में कार्यरत श्रम संघों की सदस्यता का तुलनात्मक विवरण

क्र०	संगठन का नाम	दावा की गयी सदस्यता	सत्यापित सदस्यता (उद्योगों की)	कृषि से सम्बन्धित सदस्यता	योग
१.	भारतीय मजदूर संघ	४१३०१०	३७३९५४	७६८७२	४५०८२६
२.	इण्टक	२६३२६९	७१६८०	१०६	७१७८६
३.	हिन्द मजदूर सभा	७८५४८७	५१५७५	–	५१५७५
४.	ऐटक	९१३७७	४४६०९	१३३	४४७४२
५.	सीटू	५२२८६	१३८४८	–	१३८४८
६.	यू० टी० यू० सी०	३२२१७	३६२९	–	३६२९
७.	टी० यू० सी० सी०	–	५९८२	–	५९८२

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय मजदूर संघ की सदस्यता सभी संगठनों की सदस्यता से दुगुने से भी अधिक है। भा० म० संघ की सदस्यता ४५०८२६ है जबकि शेष सभी की १९१५६२ है।

भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश

३१-१२-८९ तक का भारत सरकार द्वारा सत्यापित उद्योगश: पंजीकृत यूनियनों की सदस्यता का विवरण

क्र०	उद्योग का नाम	यूनियनों की संख्या	सदस्यता	सत्यापित सदस्यता
१.	टेक्सटाइल्स	२९	२५६७६	१८७७२
२.	क्लोदिंग	७	३४९०	४७२००
३.	जूट	२	१८५६	१६६०
४.	आयरन एण्ड स्टील	११	३९६६	२५२१
५.	मेटल	६	३७४३	२८२६
६.	इंजीनियरिंग	३७	३१५६९	२६,२७०
७.	डिफेन्स	३१	२५३८२	२१५४५
८.	इलेक्ट्रिक गैस एण्ड पावर	१७	३४१४२	२८२८५
९.	रेलवे	३	६६२७९	६८३१७
१०.	रोडवेज	१३	३५९५२	१४०७३

क्र०	उद्योग का नाम	यूनियनों की संख्या	सदस्यता	सत्यापित सदस्यता
११.	कोलमाइनिंग	२	७५५०	३७२०
१२.	माइनिंग	२	१०९०	२७४
१३.	एग्रीकल्चर एण्ड रूरल वर्कर्स	१०	१०४४६८	७६८७२
१४.	सुगर	७७	४५८७७	३९३८७
१५.	सीमेण्ट	९	३५४१	२९०९
१६.	केमिकल	२०	६४७२	४७२९
१७.	बिल्डिंग कान्स्ट्रक्शन	१०	३७२६९	३०५०४
१८.	फ्रूड एण्ड ड्रिंक्स	३३	६९९७	५१३४
१९.	टूबैको	२	७३०	०
२०.	टेनरीज एण्ड लेदर	२	२२८३	२२६७
२१.	पेपर एण्ड पेपर प्रॉडक्ट्स	७	२०४९	१०८५
२२.	प्रिन्टिंग एण्ड पब्लिशिंग	९	५३६८	३९६६
२३.	लोकल बाडीज	२५	१०२२८	९३२५
२४.	ग्लास एण्ड पाटरीज	९	३४७७	१७३३
२५.	पेट्रोलियम	३	१९८२	१७७२
२६.	सैलरीड	४८	१७७६८	१३६१०
२७.	होटल	५	३४८८	३२७७
२८.	हास्पिटल एण्ड मेडिकल्स	४	४५८	१९३
२९.	पर्सनल सर्विसेज	४	१४१९	१७७४
३०.	फाइनेन्सियल संस्थान	२७	१२१६२	१०९३३
३१.	वुड एण्ड वुड प्रॉडक्ट्स	८	२६३५	१६६०
३२.	रबड़ प्रॉडक्ट्स	७	२५६४	२१४१
३३.	सोप एण्ड डिटर्जेन्ट	१	५०५	५०५
३४.	सेल्फ एम्पलाइड	१	२९२	२९२
३५.	मिसलेनियस	७	१५०९	१२९५
	कुल	४८८	५१७१३६	४५०८३६
	एग्रीकल्चर को छोड़कर कुल	४८४	४१३०१०	−३७३९५४ ७६८७२

श्रम समितियों का विवरण

क्र०	समिति का नाम	प्रतिनिधि
१.	कर्मचारी भविष्य निधि योजना उ० प्र० क्षेत्रीय परिषद	श्री राम प्रकाश मिश्र
२.	उ० प्र० श्रम कल्याण परिषद	श्री घनश्याम दास गुप्त
३.	चीनी उद्योग बोनस समिति	श्री घनश्याम दास गुप्त, श्री अत्रिदेव तिवारी, श्री ओमप्रकाश गौतम
४.	उ० प्र० न्यूनतम वेतन परामर्शदाता मण्डल	श्री देवनाथ सिंह श्री रामदौर सिंह, श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र श्री जगदीश वाजपेयी, श्री ओम प्रकाश गौतम, श्री अम्बिका प्रसाद सिंह
५.	खाण्डसारी उद्योग समिति	श्री घनश्याम दास गुप्त
६.	सलाहकार संविदा श्रम बोर्ड उ० प्र०	श्री रामदौर सिंह
७.	लाइम स्टोन एण्ड डोलोमाइट माइन्स परामर्शदात्री समिति (निष्क्रिय है, सन् १९८५ से कोई बैठक नहीं)	श्री प्रदीप चक्रवर्ती
८.	असंगठित ग्रामीण मजदूरों हेतु राज्य स्तरीय स्थायी समिति (सन् १९८३ से बैठक नहीं हुई)	श्री आर० एन० सिंह
९.	अभियंत्रण उद्योग समिति (१९९० से कोई बैठक नहीं)	डॉ० गजेन्द्र पाल शर्मा
१०.	कागज एण्ड गत्ता उद्योग समिति	श्री देवनाथ सिंह, श्री जगदीश वाजपेयी

क्र०	समिति का नाम	प्रतिनिधि
११.	होटल उद्योग (सन् १९८९ से कोई बैठक नही)	श्री ओम प्रकाश गौतम श्री प्रेमसागर मिश्र श्री देवनाथ सिंह
१२.	ऊनी कालीन उद्योग समिति	श्री घनश्याम दास गुप्त
१३.	सूती उद्योग समिति	श्री अम्बिका प्रसाद सिंह
१४.	आसवानी तथा मद्यसार उद्योग	श्री घनश्याम दास गुप्त, श्री ओमप्रकाश गौतम
१५.	इलेक्ट्रॉनिक उद्योग समिति	श्री प्रेमसागर मिश्र
१६.	राज्यस्तरीय प्रवासी श्रमिक परिषद् (गठन से लेकर अब तक कोई बैठक नही)	श्री राजेश्वर दयाल शर्मा
१७.	केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा मण्डल परामर्शदात्री समिति	(अ) कानपुर क्षेत्र— श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र (ब) इलाहाबाद क्षेत्र— श्री देवनाथ सिंह (स) बरेली क्षेत्र— श्री वीरेन्द्र कुमार (द) आगरा क्षेत्र— श्री अख्तर हुसैन (य) गोरखपुर क्षेत्र— श्री अत्रिदेव तिवारी
१८.	कर्मचारी राज्य बीमा योजना क्षेत्रीय परिषद	श्री घनश्याम दास गुप्त
१९.	एडवांस ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट निर्देशन समिति	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र
२०.	राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद उत्तर प्रदेश	श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र
२१.	उद्योग बन्धु	श्री देवनाथ सिंह

भारतीय मजदूर संघ उ०प्र० की यूनियनों व सदस्यता का विवरण

२०.१०.९१ तक क्षेत्रश: यूनियनें एवं सदस्यता					३१.१०.९४ तक क्षेत्रश: व जिलाश:		बढ़ी संख्या १.७.९५
१. गोरखपुर	१.	देवरिया	२७	८७६६६	८	६१९१	८
	२.	पडरौना			९	४८८७	९
	३.	गोरखपुर			७	७५९२१	८
	४.	महराज गंज			२	१३९०	२
	५.	बस्ती			४	१०८०	४
	६.	सिद्धार्थनगर			—	—	—
	७.	आजमगढ़			१	६००	१
	८.	मऊ			१	८८०	१
				योग	३२	९१,९४९	३३
२. वाराणसी	१.	वाराणसी	४६	१२५६६१	२९	५२३०३	३६
	२.	बलिया			१	९६०	१
	३.	गाजीपुर			४	७७०	४
	४.	जौनपुर			४	१२८८	४
	५.	भदोही			४	४७४२५	४
	६.	मऊ			—	—	१
				योग	४२	९९७२८	५०
३. मिरजापुर	१.	मिरजापुर	२३	१७५६२	९	६६६२	९
	२.	सोनभद्र			१०	७६३९	१०
				योग	१९	१४३०१	१९
४. इलाहाबाद	१.	इलाहाबाद	१८	६९०१	१९	५५३५	१९
	२.	प्रतापगढ़			२	४५५	२
	३.	फतेहपुर			१	११०	१
				योग	२२	६१००	२२
५. फैजाबाद	१.	फैजाबाद	१९	१६१५७	९	११०८०	९
	२.	गोंडा			५	१५४०	५
	३.	सुल्तानपुर			२	८००	२
	४.	बहराइच			२	५००	२
				योग	१८	१३९२०	१८

२०.१०.९१ तक क्षेत्रशः यूनियनें एवं सदस्यता					३१.१०.९४ तक क्षेत्रशः व जिलाशः		बढ़ी संख्या १.७.९५
६. लखनऊ	१.	लखनऊ	५५	४८५७४	४३	३७६६३	४४
	२.	हरदोई			१	९५०	१
	३.	सीतापुर			९	४०१७	९
	४.	लखीमपुर-खीरी			४	२१९०	४
	५.	रायबरेली			९	९४०२	९
	६.	बाराबंकी			४	२०३४	४
				योग	७०	५६२५६	७१
७. कानपुर	१.	कानपुर	१०६–	१०७७६४	८६	१०९८०८	९८
	२.	अकबरपुर, कानपुर (देहात)			३	९०२	३
	३.	उन्नाव			१	१००	२
	४.	इटावा			५	१६३५	४
	५.	फर्रुखाबाद				१०६८	३
				योग	१००	११३५१३	११०
८. झाँसी	१.	झाँसी	१०	२१७०	८	७५६	८
	२.	ललितपुर			३	९१४	३
	३.	बाँदा			३	२४७	३
	४.	जालौन			३	३९९	३
	५.	हमीरपुर			१	--------	१
				योग	१८	२३१६	१८
९. बरेली	१.	बरेली	३७	३४७६३	२८	२७१७७	२८
	२.	पीलीभीत			४	२,५२९	४
	३.	बदायूँ			१	८०	१
	४.	शाहजहाँपुर			८	५७८२	८
				योग	४१	३५५६८	४१
१०. मुरादाबाद	१.	मुरादाबाद	१७	६१८२	११	४२९१	११
	२.	रामपुर			२	४४५	२
	३.	बिजनौर			६	२२६५	६
				योग	१९	७००१	१९

२०.१०.९१ तक क्षेत्रशः यूनियनें एवं सदस्यता					३१.१०.९४ तक क्षेत्रशः व जिलाशः		बढ़ी संख्या १.७.९५
११. आगरा	१.	आगरा	५९	४३२००	१४	२५८५४	२२
	२.	अलीगढ़			११	२४०४	११
	३.	एटा			२	६७८	५
	४.	मैनपुरी			१	४५	१
	५.	फिरोज़ाबाद			४	६३९	५
	६.	मथुरा			८	६६१०	८
				योग	४०	३६५३०	५२
१२. कुमायूँ	१.	नैनीताल	१४	३८४०	१५	३४५७	१५
	२.	अल्मोड़ा			१	५७	१
	३.	पिथौरागढ़			३	५१८	३
				योग	१९	४०३२	१९
१३. मेरठ	१.	मेरठ	२७	११९५१	८	१५४१	१२
	२.	मुजफ्फरनगर			८	३३१०	९
	३.	सहारनपुर			१४	६६७७	१४
	४.	हरिद्वार			७	२१९८	१०
			योग		३७	१३७२६	४५
१४. गढ़वाल	१.	देहरादून	३६	५१४८०	३०	३११३०	३३
	२.	पौढ़ी			३	६८०	३
	३.	टिहरी			१	५७	१
	४.	उत्तरकाशी			—	—	—
	५.	चमोली			—	—	—
				योग	३४	३१८५७	३७
१५. गाजियाबाद	१.	गाजियाबाद	२१	७३३४	१७	३१४६	२०
	२.	बुलन्दशहर			१३	५५३९	१४
				योग	३०	८६८५	३४
योग	६६		५१५	५७०४१५	५२८	५३५६०८	५८८

भारतीय मजदूर संघ, उ०प्र०—वर्तमान स्थिति

(२८, २९ व ३० जुलाई १९९२ को बरेली में हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की क्षेत्रीय बैठक का वृत्त)

प्रान्त	१९९१ ई० में							वर्तमान में						
	जिले	कार्ययुक्त	कुल यूनियनें	सदस्यता	प्रचारक	पूर्ण-कालिक	योग	जिले	कार्ययुक्त	कुल यूनियनें	सदस्यता	प्रचारक	पूर्ण-कालिक	योग
ब्रज प्रदेश	१३	१२	७५	४५,०००	—	३	३	१३	१३	९४	८८,०००	—	४	४
अवध प्रान्त	१९	१८	१८२	१,७१,८५५	१	६	७	१९	१८	२०५	२,१०,०००	१	६	७
काशी प्रान्त	१६	१३	१००	२,५१,११०	१	७	८	१६	१६	१३९	२,१२,०००	२	८	१०
मेरठ प्रदेश	१६	१६	११०	८२,२७५	२	३	५	१६	१६	१३१	९०,०००	२	३	५
योग	६४	६१	४६७	५,५०,३१०	४	१९	२३	६२	६३	५६९	६,००,०००	५	२१	२६

ट्रेड

कुल	कार्ययुक्त
६२	६२

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध वर्तमान महासंघ

१. उत्तर प्रदेश चीनी मिल मजदूर संघ
२. उ० प्र० डिस्टिलरी मजदूर संघ
३. उ० प्र० विद्युत मजदूर संघ
४. उ० प्र० इंजीनियरिंग वर्कर्स फेडरेशन
५. उ० प्र० दुकान कर्मचारी संघ
६. उ० प्र० स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ,
७. उ० प्र० सिंचाई मजदूर संघ
८. उ० प्र० रोडवेज कर्मचारी संघ
९. उ० प्र० टैक्सटायल मजदूर संघ
१०. उ० प्र० बैंक वर्कर्स आर्गेनाइजेशन
११. उ० प्र० गैरशिक्षक कर्मचारी परिषद्
१२. उ० प्र० राज्य कर्मचारी संगठन
१३. उ० प्र० मण्डी परिषद् कर्मचारी संघ
१४. उ० प्र० ग्रामीण बैंक वर्कर्स आर्गेनाइजेशन एवं आफीसर्स आर्गेनाइजेशन

उ०प्र० के कार्यकर्त्ता जो केन्द्रीय कार्य समिति में हैं

१. श्री अख्तर हुसैन, बुलन्दशहर—अ० भा० उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष, अ० भा० विद्युत मजदूर संघ

२. श्री गिरीश अवस्थी, कानपुर—अ० भा० मंत्री एवं उद्योग प्रमुख केन्द्रीय एवं राज्य सरकारी कर्मचारी

३. श्री रामदौर सिंह, लखनऊ—अ० भा० मंत्री एवं क्षेत्र प्रमुख उ० प्र० एवं दिल्ली

४. श्री राम प्रकाश मिश्रा, कानपुर—क्षेत्र प्रमुख राजस्थान, मध्य प्रदेश, उड़ीसा

५. श्री घनश्याम दास गुप्ता, शामली—उद्योग प्रमुख शुगर, पेपर एवं डिस्टिलरी

६. श्री देवनाथ सिंह—महामंत्री, भा० मजदूर संघ, उ० प्र० एवं भारतीय स्वायत्तशासी कर्मचारी संघ

७. श्री महिनारायण झा—उद्योग प्रमुख एवं अ० भा० अध्यक्ष केन्द्रीय सार्वजनिक प्रतिष्ठान कर्मचारी संघ

८. श्री ओम प्रकाश गौतम—महामंत्री अ० भा० शुगर मिल मजदूर महासंघ

९. श्री इन्द्र बहादुर सिंह, चुर्क, सीमेंट

१०. श्री अमलदार सिंह जी, जौनपुर, अध्यक्ष भा० रेलवे मजदूर संघ

कार्यकर्ताओं की विदेश यात्राएँ

१. श्रीमान् रामप्रकाश जी मिश्रा (कानपुर)—न्यूयार्क, अमरीका, २५ अप्रैल ८३ से २२ मई ८३ तक

२. श्रीमान् घनश्यामदास जी गुप्ता (शामली, मुजफ्फरनगर)—जापान

३. श्रीयुत महिनाराण झा (बी० एच० ई० एल० , हरिद्वार)—मीन्स (रूस)

४. श्रीयुत सुरेन्द्र बहादुर सिंह (आई० टी० आई० , बरेली)—संयुक्त राज्य अमेरिका, ८ जून १९९१ से २९ जून १९९१ तक—औद्योगिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य "Train the trainer" विश्व पर्यावरण केन्द्र, न्यूयार्क, न्यू जर्सी, लांग ब्रांच, मनमाऊथ कॉलेज के अलावा न्यूयार्क, न्यू जर्सी, फिल्डेल्फिया, वर्जीनिया, विलियम्सबर्ग, रेड इन आदि स्थानों पर फैक्ट्री विजिट भी किया। इसमें १५ भारतीय प्रतिनिधि गये थे।

५. श्रीमान डॉ० गजेन्द्र पाल शर्मा—अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के स्टडी प्रोग्राम के अन्तर्गत अमेरिका में ट्रेड यूनियनिज्म का अध्ययन करने के लिए भारत सरकार द्वारा ३० सितम्बर १९८८ से २१ अक्टूबर १९८८ तक मियामी, वाशिंगटन, जार्जिया और न्यूयार्क गये।

६. श्री रामदौर सिंह (लखनऊ)—२८, २९, ३० व ३१ मार्च १९९२ को नेपाल ट्रेड यूनियन महासंघ के प्रथम अधिवेशन पर उनके निमन्त्रण पर भा० मजदूर संघ के प्रतिनिधि की हैसियत से काठमाण्डू जाना हुआ।

विदेशी वस्तुओं पर नजर डालने और परस्त्री पर नजर डालने में कोई अंतर नहीं। दोनों एक जैसे घृणास्पद व्यवहार और व्यभिचार हैं।

—महात्मा गाँधी

स्वदेशी का दूसरे शब्दों में अभिप्राय राष्ट्र की अस्मिता और राष्ट्र की इच्छाशक्ति की पहचान से है। राष्ट्र के लिए समाज की त्याग करने की तत्परता स्वदेशी में से झलकती है।

—योगी अरविंद

'बिना आध्यात्मिक आधार से बनी—उभरी और बुलन्दी पर पहुँचने के लिए ललकती पाश्चात्य जड़वादी संस्कृति आने वाले ५० वर्षों में ही मुँह के बल गिरकर चूर-चूर हो जायेगी। ऐसी स्थिति में यूरोप को उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित धर्म ही पार ले जा सकता है, और ध्वस्त हो जाने से बचा सकता है।

—स्वामी विवेकानन्द

वर्तमान समय (१९९५) में उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता

१. श्री रामदौर सिंह	लखनऊ
२. श्री प्रेमसागर मिश्रा	लखनऊ
३. श्री राम सूरत जी	लखनऊ
४. श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र	कानपुर
५. श्री श्रीप्रकाश जी	कानपुर
६. श्री अम्बिका प्रसाद सिंह जी	प्रयाग (इलाहाबाद)
७. श्री बेचन सिंह	नैनी (इलाहाबाद)
८. श्री प्रदीप चक्रवर्ती, सोनभद्र	मिरजापुर
९. श्री यशवन्त सिंह	सोनभद्र
१०. श्री देवनाथ सिंह	वाराणसी
११. श्री लल्लन शुक्ला	वाराणसी
१२. श्री आर० एन० सिंह	वाराणसी
१३. श्री राम किशन गुप्ता	वाराणसी
१४. श्री अत्रिदेव तिवारी	देवरिया, गोरखपुर
१५. श्री देवेन्द्र सिंह	गोरखपुर
१६. श्री जगदीश वाजपेयी	गाजियाबाद
१७. श्री ओम प्रकाश गौतम	बरेली
१८. श्री रामलोचन उपाध्याय	बरेली
१९. श्री वीरेन्द्र मिश्र	मुरादाबाद
२०. श्री राजेश्वर दयाल शर्मा	मेरठ
२१. श्री कमलेश कुमार जी	देहरादून
२२. श्री महेन्द्र कुमार पाठक	झाँसी
२३. श्री विद्यासागर जी	आगरा
२४. श्री लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय	अलीगढ़
२५. श्री पारसनाथ दुबे	अयोध्या (फैजाबाद)

स्वदेशी स्वराज का अस्त्र-शस्त्र और मंत्र-तंत्र भी है। हर भारतीय का यह पहला कर्त्तव्य है कि वह स्वदेशी का व्रत की तरह पालन करे।

—श्री गुरुजी

उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ कार्यालय

	स्थान	पता	दूरभाष
१.	कानपुर	२ नवीन मार्केट, परेड, कानपुर	(०५१२) ३१९८८३
२.	लखनऊ	६ नवीन मार्केट, कैसर बाग, लखनऊ	(०५२२) २३२४२०
३.	गोरखपुर	१४७ जटाशंकर पोखरा (उत्तरी) गोरखपुर	(०५५१) ३१७८ पी० पी०
४.	वाराणसी	७/एफ नगर महापालिका क्वार्टर्स पिशाचमोचन, वाराणसी	(०५४२) ५५६७३
५.	सोनभद्र (रेणुकूट)	७ बी स्टाफ क्वार्टर्स, रेणुकूट, सोनभद्र	२१८९ पी० पी०
६.	चुर्क	जे ९८ चुर्क, जिला सोनभद्र	
७.	बरेली	बाँसमण्डी, बरेली	(०५८१) ७२०५९
८.	आगरा	१५/३९६ शहीद भगतसिंह द्वार, नूरी दरवाजा, आगरा	
९.	अलीगढ़	मधुपुरा, निकट रेलवे स्टेशन, अलीगढ़	(०५७१) २५५९५
१०.	मेरठ	शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग, मेरठ	(०१२१) ६४०८८० ६४१२०२
११.	देहरादून	३२, चकरौता रोड, देहरादून	(०१३५) २६९७० (पी० पी०)
१२.	गाजियाबाद	४, सुभाष मार्केट, रमते राम मार्ग, गाजियाबाद	(०५७५) ७१२२६१
१३.	रायबरेली	भा० म० संघ कार्यालय शापिंग सेन्टर के पास, सेक्टर-१, दूरभाष नगर, रायबरेली	
१४.	हरिद्वार	क्वा० नं० १४७ टाईप-३, सेक्टर-१, बी० एच० ई० एल०, रानीपुर, हरिद्वार	(०१३३) ४२७३६२
१५.	मुरादाबाद	भा० म० संघ कार्यालय अमरोहा गेट, मुरादाबाद	(०५९१) ३१५६४०
१६.	हलद्वानी	उ० प्र० रोडवेज कर्मचारी संघ, रोडवेज बस स्टेशन, हलद्वानी जिला नैनीताल	(०५९४६) २३१४५ पी० पी०
१७.	इलाहाबाद	२०५/८० टैगोर टाउन, इलाहाबाद	(०५३२) ६२२३७८ पी० पी०

क्षेत्र व जिला

क्र०	क्षेत्र	जिले	संख्या
१.	कानपुर	कानपुर, फर्रुखाबाद, उन्नाव, इटावा, कानपुर देहात	५
२.	झाँसी	झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, महोबा, जालौन, ललितपुर	६
३.	आगरा	आगरा, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, मथुरा, फिरोजाबाद	६
४.	फैजाबाद	फैजाबाद, बहराइच, गोंडा, सुल्तानपुर	४
५.	लखनऊ	हरदोई, लखीमपुर खीरी, रायबरेली, सीतापुर, बाराबंकी, लखनऊ	६
६.	मुरादाबाद	मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर	३
७.	वाराणसी	वाराणसी, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर, भदोही	५
८.	गाजियाबाद	गाजियाबाद, बुलन्दशहर	२
९.	मेरठ	मेरठ, हरिद्वार, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर	४
१०.	इलाहाबाद	इलाहाबाद, फतेहपुर, प्रतापगढ़	३
११.	मिरजापुर	मिरजापुर, सोनभद्र	२
१२.	बरेली	बरेली, बदायूँ, पीलीभीत, शाहजहाँपुर	४
१३.	कुमायूँ मण्डल	नैनीताल, अलमोड़ा, पिथौरागढ़	३
१४.	गढ़वाल मण्डल	देहरादून, चमोली, टिहरी, पौड़ी, उत्तरकाशी	५
१५.	गोरखपुर	गोरखपुर, आजमगढ़, देवरिया, बस्ती, पडरौना, मऊनाथ भंजन, महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर	८
		कुल	६६

अधिष्ठानम् तथा कर्ता,
करणं च पृथग्विविधं।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा,
दैवं चैवात्र पंचमम् ॥

अपने कार्य, ध्येय अथवा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अधिष्ठान, कार्यकर्ता, साधन, विविध प्रकार की चेष्टाएँ एवं परमात्मा के आशीष की आवश्यकता होती है।

आगरा में भारतीय मजदूर संघ का प्रारम्भ

इस पुस्तक के संकलनकर्ता श्री राजेश्वर दयाल शर्मा के अग्रज श्रीमान् रामेश्वर दयाल जी शर्मा वर्तमान में विश्व हिन्दू परिषद् के कार्य से जुड़े हुए हैं। परन्तु उन्होंने अपने जीवन का एक लम्बा कालखण्ड आगरा में भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता की हैसियत से व्यतीत किया है। वह कहते हैं कि "सन् १९६० से पूर्व मैं आल इन्डिया डिफेन्स इम्प्लोईज़ फैडरेशन के साथ संलग्न था। वहाँ से सन् ६० के अन्त में श्रमिक शिक्षा हेतु कानपुर गया। संघ कार्यालय गांधी नगर में निवास करने के कारण माननीय बड़े भाई से घनिष्ठ परिचय हुआ। श्रमिक शिक्षा में पढ़ाये गये सैद्धान्तिक विषय मैं माननीय बड़े भाई जी को बताता था और व्यावहारिक पक्ष उनसे सीखता था। उनकी प्रेरणा से भारतीय मजदूर संघ का प्रत्यक्ष कार्य प्रारम्भ किया। उसके पूर्व श्री राजामोहन अरोड़ा द्वारा तीन यूनियनें चलायी जाती थीं। विभाग प्रचारक माननीय ओंकार जी भावे द्वारा प्रोत्साहन मिलने पर यूनियनों की संख्या बढ़ने लगी और समाज के प्रत्येक वर्ग में यूनियनें बनीं, अर्थात् अपना कार्य रेलवे, बैंक, इंजीनियरिंग प्रतिरक्षा विभाग, रोडवेज, शू वर्कर्स, चिकित्सालय, आरा मशीन, प्रेस कर्मचारियों, दुकान कर्मचारियों, ढलाई मजदूरों आदि में फैला।

श्री दामोदर प्रसाद शर्मा एवं श्री लोकनाथ अरोड़ा के सहयोग से पश्चिम रेलवे, आगरा फोर्ट, कोटा आदि में तथा झाँसी के कार्यकर्ताओं के सहयोग से मध्य रेलवे में काम बढ़ा। फलस्वरूप माईथान धर्मशाला, आगरा में भारतीय रेलवे मजदूर संघ की स्थापना हुई। मुरादनगर, गाजियाबाद में भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ बना।

माननीय ठेंगड़ी जी एवं माननीय बड़े भाई जी का प्रत्येक वर्ष आगरा आगमन पर प्रत्यक्ष मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। आगरा में कई बार साम्यवादियों से संघर्ष भी हुआ।"

भारतीय मजदूर संघ, अलीगढ़

अलीगढ़ नगर में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना १९६२ में हुई।

अलीगढ़ नगर में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना में मान्यवर श्री कौशलेन्द्र जी (प्रचारक) के अथक परिश्रम से श्री मुन्ना बाबू चश्में वाले, श्री वासुदेव जी, श्री नत्थीलाल जी, श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा व श्री बनवारी लाल पाठक प्रमुख थे, और ये सभी व्यक्ति आज भी मौजूद हैं।

भारतीय मजदूर संघ का प्रारम्भ ताला उद्योग में कैंची, चाकू, ताला मजदूर संघ के नाम से हुआ जिसको बनाने में भी ओमप्रकाश जी गौतम, जो उस कालखण्ड में विजली कॉटन मिल हाथरस में कार्यरत थे, का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस समय आगरा क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ का कार्य अधिकांश सभी उद्योगों में फैला हुआ है।

अपने क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ, उ०प्र० का पहला अधिवेशन वर्ष १९६५ में इलायची वाली धर्मशाला, हाथरस और दूसरा अधिवेशन वर्ष १९७१–७२ में हीरा लाल

बारहसैनी इण्टर कालेज, अलीगढ़ में सम्पन्न हुआ जिसमें माननीय दतोपन्त ठेंगड़ी जी, माननीय श्री बड़े भाई (स्व० रामनरेश सिंह जी), माननीय श्री राम प्रकाश मिश्र जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वर्ष १९६५ में ताला उद्योग में बोनस तथा पीस रेट को लेकर लक्ष्मी मैटल वर्क्स, राम स्वरूप एन्ड सन्स, एच० आर० प्रोडक्ट आदि उद्योगो में आन्दोलन के माध्यम से बोनस लागू कराया और पीस रेटों में वृद्धि करायी गयी। इसके बाद और आज तक अनेकों जगह आन्दोलन हुए तथा आन्दोलनों के माध्यम से समझौते भी हुए जिनसे कर्मचारियों का हितरक्षण हुआ है।

वर्ष १९६५ में अलीगढ़ में प्रथम बार विश्वकर्मा जयन्ती को विशाल रूप में रैली निकाल कर नगर के प्रमुख बाजारों से होते हुए रामलीला मैदान में अभूतपूर्व कार्यक्रम करके मनाया गया। विशेष तौर से जिन मार्गो से रैली निकली वहाँ की जनता ने पुष्पों की वर्षा की, जिसमें मान्यवर श्री कौशलेन्द्र जी, श्री ओमप्रकाश गौतम, श्री मुन्ना बाबू चश्मे वाले, श्री वासुदेव जी, श्री नत्थी लाल जी, श्री राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, श्री बनवारी लाल पाठक, श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा व श्री सुरेश चन्द्र जैन अग्रणी रहे।

आपातकालीन वर्ष १९७५ से १९७७ के बीच प्रमुख लोगों के भूमिगत हो जाने पर जो कार्यालय पहले सायं ५ बजे से रात्रि ८ बजे तक खुला रहता था वह उस समय भी हमेशा खुला रहा। श्रमिक समस्याओं में भी अवरोध आना चाहिये था लेकिन ऐसी विषम परिस्थिति में श्री लक्ष्मीनारायण जी का विशेष योगदान रहा और कार्यालय के समय से भी अधिक देर रात्रि तक बदस्तूर निर्भय कार्य चलता रहा तथा जगह-जगह आन्दोलन भी कराये गये और भारतीय मजदूर संघ के कार्य को गति दी गयी। आन्दोलनों के माध्यम से समस्याओं का निराकरण भी हुआ। आपातकालीन स्थिति के समय जिला सम्मेलन भी विष्णुपुरी, अलीगढ़ में रखा गया जिसमें मान्यवर स्व० श्री राम नरेश सिंह जी, माननीय पं० राम प्रकाश मिश्रा व माननीय श्री राजेश्वर दयाल शर्मा की विशेष उपस्थिति रही और इनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

भारतीय मजदूर संघ, सहारनपुर

सहारनपुर में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना ५ मई १९५५ को श्री जगमोहन लाल गर्ग की अध्यक्षता में हुई। उस समय श्री देश राज, कल्याण सिंह रावत तथा प्रेम चन्द गुप्ता, नरेन्द्र सिंह यादव एवं जैड०ए० अहमद आदि बन्धु उपस्थित थे।

सबसे पहले टैक्सटाइल मिल, सहारनपुर में सूती मिल मजदूर संघ के नाम से काम शुरू हुआ। भारतीय मजदूर संघ का सम्मेलन सहारनपुर में वर्ष १९५९ में हुआ जिसमें मान्यवर दत्तोपन्थ ठेंगड़ी तथा बड़े भाई श्री राम नरेश सिंह भी उपस्थित थे। उस समय दो घोड़ों की बग्घी पर मान्यवर ठेंगड़ी जी को बैठाकर इसमें कम से कम दो हजार कर्मचारियों ने भाग लिया था। रेलवे स्टेशन से अग्रवाल धर्मशाला तक बड़ा शानदार जुलूस निकाला गया।

श्री मुलख राज जग्गा के द्वारा रेलवे में काम शुरू किया गया। श्री अजित प्रसाद जैन के द्वारा बैंकों में काम प्रारम्भ किया गया। धीरे-धीरे काम बढ़ता गया तथा कई मिलों में जैसे राधा कृष्ण बोर्ड मिल, सिनेमा कर्मचारी संघ, दुकान कर्मचारी संघ, कम्पनी बाग मजदूर संघ तथा रेड़ीचालक संघ में काम प्रारम्भ हुआ। देवबन्द शुगर मिल में श्री जगदीश बन्सल के द्वारा काम शुरू हुआ। बी० एच० ई० एल० में प्रान्तीय अधिवेशन हुआ, जिसमें मजदूर संघ के सभी नेता उपस्थित थे। श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने भारतीय मजदूर संघ के जिला मन्त्री के रूप में काम किया। सहारनपुर में विश्वकर्मा जयन्ती भारतीय मजदूर संघ प्रतिवर्ष १७ सितम्बर को मनाता रहा है। अब सफाई कर्मचारी संघ तथा वुड कार्विंग मजदूर संघ का काम भी शुरू किया गया है।

सुहाग नगरी—फिरोजाबाद

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक स्थान है फिरोजाबाद, जो बहुत पुराने समय से काँच की चूड़ी बनाने के लिए प्रसिद्ध है और इसीलिए लोग फिरोजाबाद को सुहाग नगरी के नाम से भी जानते हैं। पहले यह जिला आगरा की एक तहसील था लेकिन अब स्वतंत्र जिला है। फिरोजाबाद में चूड़ी बनाने के लिए गोल, चक्करदार, उमेंठा हुआ काँच का एक लम्बा तार बनाया जाता है जिसे बनाने के लिए कारीगर के हाथ में लोहे की कुछ पोली, एक लम्बी-सी छड़ होती है। उस छड़ की नोक (टिप) पर भट्टी में जो पिघलता हुआ शीशा (काँच) रहता है उसे लगाकर, जिसे वहाँ की भाषा में लोंग लगाना कहा जाता है, कारीगर आहिस्ते-आहिस्ते लोहे की छड़ को सधे हुए हाथों से लगातार घुमाते हुए और अपनी ओर बढ़ाते हुए शीशे का पेंचदार उमेंठ भरा तार खींचता रहता है ताकि तार लगातार एक जैसी गोलाई व मोटाई का खिंचता रहे और लगातार छड़ को घुमाते रहने की वजह से उस तार पर उमेंठन भरे पेच भी पड़ते रहें। यह एक बहुत ही कठिन कार्य है जिसको एक साथ एक बार में लगातार ४–४ घन्टे तक करना होता है। अतएव इसके लिए बहुत ही अभ्यास और सधे हुए हाथों की जरूरत होती है। यह काम फिरोजाबाद में पहिले केवल मुसलमान कारीगर ही करते थे और उनके बीच में कम्यूनिस्टों का भी कार्य था जिन्होंने वहाँ पर उन कारीगरों के बीच में अपने को केवल कम्यूनल बनाकर रखा हुआ था, अर्थात् कम्यूनिस्ट फिरोजाबाद में यूनियन चलाने का काम करेंगे तो वह केवल मुसलमान कारीगरों तक ही अपनी यूनियन की गतिविधि को सक्रिय रखेंगे, हिन्दू कारीगरों और उनकी सुख-सुविधाओं से उनको कोई भी सरोकार नहीं था। बाद में तार खींचने का काम करने वाले कारखानेदारों के दिमाग में यह बात आयी कि यह कार्य हिंदू कारीगरों को भी सिखाया जाय। कारखानेदार के कहने पर वहाँ काम करने वाले कारीगर हिंदू को काम पर रख तो लेते थे पर जैसे ही उनको मौका मिलता वह उस बेचारे हिंदू कारीगर को चोरी छिपे शीशा पिघलाती तपती भट्टी में झोंक देते थे। बड़ा ही आतंक का खौफनाक वातावरण था। उस समय फिरोजाबाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आज के हम सभी के सुपरिचित मान्यवर डॉ० नित्यानन्द जी थे। फिरोजाबाद की इन सभी घटनाओं को देखते हुए नित्यानन्द जी के आग्रह पर संघ के

स्वयंसेवक श्री जगदीश उपाध्याय आगे आये। अनेक कारखानेदारों से उन्होंने वार्ता की। फलस्वरूप श्री रमण लाल शाह एवं श्री शिवचरण लाल जी जैसे अनेक कारखानेदार आगे आये और अपने-अपने कारखानों में हिन्दू कारीगरों को काम सिखाने का दायित्त्व अपने ऊपर लिया। इसके लिए भारतीय मजदूर संघ के जन्मकाल से भी आठ साल पहिले हिन्दुस्थान की आजादी के लगभग साथ ही साथ १५ अगस्त १९४७ के आस-पास फिरोजाबाद में एक यूनियन बनायी गयी थी जिसका नाम राष्ट्रीय मजदूर संघ रखा गया था फिरोजाबाद में सब्जी मण्डी के पास दो कमरों का एक कार्यालय भी राष्ट्रीय मजदूर संघ के लिए खोला गया था। इतना जरूर है कि संघ पर जब प्रतिबन्ध लगा तो उस खौफ व आतंक के वातावरण में यह प्रयास लगभग समाप्त हो गया था। बाद में मान्यवर बड़े भाई जी ने श्री रामदास जी चक के द्वारा पुनरपि इस कार्य को प्रारम्भ कराते हुए भारतीय मजदूर संघ की यूनियन फिरोजाबाद में स्थापित की।

चिंतन प्रक्रिया

विचारधारा अथवा ध्येय	—	एकात्म मानव दर्शन
↓		↓
लक्ष्य (उद्देश्य)	—	समर्थ एवं सम्पन्न भारत
↓		↓
तात्कालिक लक्ष्य	—	आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई
↓		↓
नीति	—	प्रबल जनसंगठन, श्रमिक क्षेत्र में जन जागृति
↓		↓
रणनीति (strategy)	—	संघर्षात्मक एवं संगठनात्मक कार्य योजनाएँ
↓		↓
रणयुक्ति	—	कालबद्ध योजनाएँ
↓		↓
तदनुकूल तात्कालिक कार्यक्रम	—	वैचारिक प्रबोधन

भारत माता की जय

दीपशिखा

आज जब विगत ४० वर्षों का लेखा-जोखा करने के लिए बीते हुए वर्षों पर नजर डालता हूँ तो अहसास होता है कि कोई भी कार्य, विशेषतया देशहित में किया गया कार्य, यूँ ही नहीं हो जाता है। इसके लिए बड़ी आहुति देनी होती है। तिल-तिल कर शरीर को, मन को और अपनी इच्छाओं को गलाना पड़ता है, बिलकुल दीपशिखा की तरह अपने चारों तरफ के वातावरण को ज्योतिर्मय करने के लिए पिघल-पिघल कर अपने स्वयं के अस्तित्व को विलीन करना होता है।

मान्यवर ठेंगड़ी जी का अहर्निश प्रवास, सभी को अपनी ओर आकर्षित करनेवाला निश्छल आत्मीयता से ओत-प्रोत उनका व्यक्तित्व, मान्यवर बड़े भाई जी की अविश्रान्त कठोर साधना एवं पण्डित राम प्रकाश जी मिश्र का पत्थर को भी हीरा बना देने वाला अद्‌भुत कौशल, कार्यकर्ताओं के निर्माण की उनकी विशेष शैली—यह सब उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ की प्रगति के पीछे की साधना है।

मान्यवर बड़े भाई जी एम० एल० सी० रहे, अतएव विधान परिषद का काम, उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ की जिम्मेदारी, बिहार, बंगाल व आसाम का प्रवास, नित्य की व्यस्तता—ऐसे में हमको याद नहीं आता कि वे जब-जब लखनऊ में रहते थे तब कभी दोपहर को भोजन कर पाये हों। समय के अभाव और व्यस्तता की वजह से उनको दोपहर में भोजन करने के लिए समय ही नहीं मिल पाता था। ऐसे ही मान्यवर पण्डित राम प्रकाश मिश्र ने कानपुर का कार्य कुछ यों ही नहीं खड़ा कर दिया। उत्तर प्रदेश भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री रहते समय वह जब भी कानपुर में रहते थे कभी भी दोपहर का भोजन नहीं कर पाते थे—और चाय व जलपान में उनकी कोई रुचि रही नहीं, सो यह नित्य की एकादशी के व्रत का ही पुण्य प्रभाव है जो आज भारतीय मजदूर संघ प्रगति करता हुआ दिखायी दे रहा है।

प्रत्यक्ष सामने तो बहुत-से लोग हैं जो दिखायी देते हैं परन्तु अनेक ऐसे कार्यकर्ता भी होते हैं जिनकी कार्य के लिए अहम भूमिका होती है पर वे सदा पर्दे के पीछे ही रहते हैं। ऐसे ही देहरादून कार्यालय के चाचा, कानपुर कार्यालय के वकील और अलीगढ़ के लक्ष्मी जी हैं। लक्ष्मी नारायण जी आज तो भारतीय मजदूर संघ आगरा के क्षेत्र प्रमुख हैं लेकिन एक जमाना था जब वे टाईगर लॉक्स के कर्मचारी थे। घर से सुबह ७.३० बजे नौकरी के लिए निकलना और सायंकाल ४, ४.३० बजे से लेकर रात्रि ८, ८.३० बजे तक भारतीय मजदूर संघ कार्यालय अलीगढ़ की गतिशीलता को बरकरार बनाये रखना। उनका यह नित्य का कार्यक्रम गर्मी, सर्दी अथवा बरसात या त्यौहार हो अथवा बीमारी, कभी भी टूटा नहीं। घर पर रात्रि ९ बजे पहुँचकर प्रतीक्षा करती हुई पत्नी के द्वारा जो भी परोस दिया गया उसे खा-पीकर सुख की अनुभूति करना। 'रूखा-सूखा खाइ के ठण्डा पानी पी' वाली उक्ति को चरितार्थ करने वाले कार्यकर्ताओं की बरसों-बरस दिन-रात की तपस्या ने भारतीय मजदूर संघ को प्रगति के पथ पर लाकर खड़ा किया है।

ऐसे ही पुरानी पीढ़ी के संघ के प्रचारक हैं श्रीमान सलेक चन्द जी जिन्होंने मान्यवर बड़े भाई जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अलीगढ़ से देहरादून तक भारतीय मजदूर संघ की नींव रखने में अपना अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अलीगढ़, खुर्जा, बुलन्दशहर, गाजियाबाद, पिलखुवा, हापुड़, मोदीनगर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बी० एच० ई० एल० हरिद्वार व देहरादून के मध्य अविराम मोटर सायकलिंग करते-करते उन्होंने अपने शरीर के स्वास्थ्य को भी दाँव पर लगा दिया।

देहरादून के श्री खुशीराम शर्मा, जिन्हें हम सभी लोग "चाचा" कहकर पुकारते हैं, का जन्म १९२६ में हुआ था। आयु का एक लम्बा समय भारतीय मजदूर संघ कार्यालय देहरादून के पड़ोस में स्थित प्रभात टाकीज के कर्मचारी की हैसियत से व्यतीत किया। देहरादून में भारतीय मजदूर संघ के अनेक पदों पर रहकर कार्य करते रहे। अब इस समय ६९ साल की आयु के वयोवृद्ध हैं। सिनेमा से रिटायर होने के बाद पिछले १७ वर्षों से लगातार मजदूर संघ कार्यालय पर बैठते हैं। भारतीय मजदूर संघ कार्यालय देहरादून पर कोई हो अथवा न हो पर चाचा अवश्य ही मिलेंगे। सबकी खबर आपको देंगे और आपकी खबर सभी को देंगे।

जब कोई भव्य भवन खड़ा किया जाता है आदर्शों का तो उसके स्थायित्व और दीर्घकालीन टिकाऊपन के लिए अनेक कार्यकर्ताओं को नींव का पत्थर बनना होता है। भवन की भव्यता तो सभी को दिखायी देती है पर उस भवन को पुख्ता बनाने में कितने लोगों ने आत्मबलिदान किया हुआ है, नींव में जाकर भवन को लम्बी अवधि के लिए मजबूत और स्थायी बनाने में अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और जीवन का बलिदान किया हुआ है, यह कौन देखेगा? सुन्दर और आलीशान भवन का चमचमाता हुआ कलश तो सभी को दिखायी देता है पर जिन नींव के पत्थरों पर वह भवन टिका हुआ है उनको देखने के लिए दृष्टि चाहिए। ऐसा ही जीवन जिया है हमारे सबके सुपरिचित और वर्तमान में भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अख्तर हुसैन जी ने। एक पुत्र और एक पुत्री का छोटा-सा परिवार, किन्तु इन बच्चों को भी अपने पिता का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए प्रयास करना होता है। पिता जी का प्रवास मानों इस परिवार की नियति ही बनकर रह गयी है। इनका परिवार चलता कैसे है यह तो शायद परमात्मा ही जानते हैं, परन्तु हाँ, अख्तर हुसैन जी की वजह से विद्युत महासंघ से संबंधित कार्यकर्ताओं के कार्य अवश्य ही सन्तोषजनक ढंग से चलते रहते हैं।

ऐसा ही एक नाम मान्यवर घनश्यामदास जी गुप्ता का है। एक ही समय में पूर्ण दक्षता के साथ एक से अधिक कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करना यह उनसे सीखा जा सकता है। शामली शुगर मिल के एकाउन्ट विभाग में अति जिम्मेदारी का दायित्व, उत्तर प्रदेश जैसे विशाल प्रान्त के महामंत्री पद का गुरुतर भार और अखिल भारतीय शुगर मिल मजदूर संघ के महामंत्री पद को भी सक्रिय सफलता के साथ निभाना यह कोई बहुत सुगम कार्य नहीं है। परमपूजनीय श्री गुरु जी ने आगरा में मान्यवर पं० श्योवरन सिंह जी वकील साहब के निवास पर एक बार स्वयंसेवकों के बीच में कहा था कि एक ही समय में विभिन्न प्रकार के जटिल कार्यों को सुगमता के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न करना ही मन की एकाग्रता को

दर्शाता है। ऐसी मन की एकाग्रता एवं कठोर परिश्रम से युक्त साधना का जीवन जिया है श्रीमान् घनश्यामदास गुप्त ने।

कानपुर में भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश के कार्यालय पर आप जब भी जायें वहाँ पर आपका स्वागत करते हुए मिलेंगे श्री विन्ध्याशरण सिंह जिनको प्यार से सभी लोग वकील के नाम से पुकारते हैं। वह लगभग ४५ वर्ष की आयु के हैं और ग्रेजुएट हैं, पर लगता नहीं है। टाइप करने से लेकर रेलवे आरक्षण और सूचनाओं को इधर से उधर पहुँचाने तक, और कार्यालय पर बड़े मनोयोग के साथ झाड़ू लगाने से लेकर आनेवाले को एक गिलास पानी पिलाने तक वह सभी कार्य पूर्ण तल्लीनता के साथ निभाते हैं। विगत १५ वर्षों से प्रान्तीय कार्यालय पर प्रान्तीय स्तर के कोई पदाधिकारी हों अथवा न हों पर आप सुबह से लेकर रात्रि में सोने के बाद तक वहाँ पर वकील साहब को अवश्य ही पायेंगे। इसीलिए शायद इन सदृश महानुभावों के लिए ही भगवान् ने गीता में कहा है—

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भ परित्यागी, यो मद्भक्त स मे प्रियः ॥

हमने उपरोक्त कुछ कार्यकर्ताओं को बड़े संकोच के साथ स्मरण किया है क्योंकि जीवन तो प्रायः सभी कार्यकर्ताओं ने ऐसा ही जिया है जिसके प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित करना हम सभी का पुनीत दायित्व बन जाता है। उपरोक्त नाम तो मात्र कुछ उदाहरण हैं जिनसे हमको समझ में आ सके कि भारतीय मजदूर संघ का कार्य कैसे खड़ा हुआ है।

अन्त में अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मैं श्रद्धेय दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी का सहारा ले रहा हूँ। वे कहते हैं कि—"हम पागल हैं इसीलिए भारतीय मजदूर संघ है। हमने प्रारम्भ से ही चेतावनी दी थी कि जो चतुर हैं उनको भारतीय मजदूर संघ में आना ही नहीं चाहिए। जो पागल हैं, जिनका जरा दिमाग का पेंच कुछ ढीला है वही भारतीय मजदूर संघ में आयें। किन्तु हम राष्ट्र को आश्वासन देना चाहते हैं कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण का, गरीबों की गरीबी दूर करने का, रोनेवाले लोगों के आंसू पोछने का, अन्त्योदय (Unto the Last) का अर्थात् देश के छोटे से छोटे और गरीब से गरीब व्यक्ति के उत्कर्ष सिद्ध करने का जो प्रमुख साधन है उस साधन के रूप में भारतीय मजदूर संघ रहेगा और इसलिए जो व्यवहार-चतुर लोग हैं उनको हम कहेंगे कि साहब ! आप भारतीय मजदूर संघ के बाहर हट जाइये। आप प्रधान मंत्री बनिये। आप दुनिया के प्रेसीडैन्ट बनिये। लेकिन हमने परम वैभव सिद्ध करना है। आप आयेंगे और जायेंगे। हम तो राष्ट्र के परम वैभव के लिए काम कर रहे हैं, और वह हम करके रहेंगे।

गरीबों की गरीबी दूर करेंगे। रोनेवालों के आँसू पोछेंगे। आखिरी आदमी के उत्कर्ष तक हम काम करते रहेंगे और इसके लिए ही हमारा यह पागलपन है।"

> *मातृभूमि विषयक प्रेम की अभिव्यक्ति और अनुभूति स्वदेशी विचार और आचरण से होती है।*
>
> **—गोपाल कृष्ण गोखले**

श्रद्धाञ्जलि

यह श्रद्धाञ्जलि सूची उन स्वर्गवासी कार्यकर्ताओं की है जिन्होंने अपने जीवनकाल में उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ के कार्य के विस्तार में अपनी अहम भूमिका निभायी। हमारी उनकी स्मृति में हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

श्रद्धेय दादा विनय कुमार मुखर्जी, लखनऊ
मान्यवर बड़े भाई रामनरेश सिंह जी, कानपुर
श्रीयुत हंसदेव सिंह गौतम, कानपुर
श्री भगवत शरण रस्तोगी, कानपुर
श्री ईश्वर दयाल सक्सैना, कानपुर
श्री परमात्मा चरण सक्सैना, कानपुर
श्री यज्ञदत्त शर्मा, कानपुर
श्री गुरु चरन तिवारी, कानपुर
श्री शत्रुतोष सिंह, आर्डिनैंस फैक्ट्री, कानपुर
श्री आर०डी० फ्रेंकलिन, विद्युत, के०सा०, कानपुर
श्री सुरेश चन्द्र शुक्ला, परिवहन कार्यशाला, कानपुर
श्री बालादीन जी, हार्नेस फैक्ट्री, कानपुर
श्री रामकरन सिंह, जूट मिल, कानपुर,
श्री सुरेश चन्द्र रस्तोगी, लखनऊ (फैजाबाद)
श्री चारु चन्द्र मिश्रा, लखनऊ
श्री बी०डी० तिवारी, रेलवे, लखनऊ
श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी, एडवोकेट हाईकोर्ट, इलाहाबाद
श्री हीरालाल, इलाहाबाद
श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी, इलाहाबाद
श्री ज्ञान चन्द्र, गवर्नमैंट प्रैस, इलाहाबाद
श्री गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव, रायबरेली
श्रीमान सुधीर सिंह जी, गोरखपुर
श्री गुलाब चन्द त्रिपाठी, गोरखपुर
श्री शिव मंगल राय, देवरिया
श्री प्रेम नारायण, गाजीपुर
श्री भोलानाथ दुबे, गाजीपुर
श्री रामरति राय, गाजीपुर
श्री हृदय नारायण, जौनपुर
श्री कृपाशंकर श्रीवास्तव, पिपराइच
श्री प्रेमशंकर शुक्ल, सोनभद्र
श्री त्रिभुवन सिंह, रेणुकूट, सोनभद्र
श्री ब्रह्मचारी तिवारी, पडरौना

श्री राजाराम, कप्तान गंज
श्री कपिल देव वर्मा, सिसवा बाजार
श्री बाबू रमाशंकर सिंह जी, रोडवेज, वाराणसी
श्री फूलचन्द विश्वकर्मा, इंजीनियरिंग, वाराणसी
श्री लक्ष्मी नारायण जैसवाल, कैमीकल्स एण्ड फर्टीलाइजर, वाराणसी
श्री ललित मोहन त्रिपाठी, रेलवे, वाराणसी
श्री सच्चिदानन्द सिंह, वाराणसी
श्री वशिष्ठ त्रिपाठी, बैतालपुर
श्री मानबहादुर सिंह, नवाबगंज, गोंडा
श्री चौ० नन्हे लाल, जरबल रोड, बहराइच
श्री राम चन्द्र शाही, बलरामपुर
श्री जय शंकर सिंह, डाला
श्री विजय शंकर वाजपेयी, पारीक्षा
श्रीमान सत्य प्रकाश अग्रवाल, बरेली
श्री लक्ष्मी नारायण सक्सैना, बरेली
श्री रामरक्ष पाल जी, मुनीम, बरेली
श्री मूलचन्द्र श्रीवास्तव, शुगर मिल, गोला गोकर्णनाथ, लखीमपुर खीरी
श्री हरबंश लाल सूरी, शुगर मिल, गोला गोकर्णनाथ, लखीमपुर खीरी
श्री लवकुश, डिफैंस, शाहजहाँपुर
श्री चुन्नी लाल, पापा क्लोदिंग फैक्ट्री, शाहजहाँपुर
श्री सुरेश सिंह, आई०जी०एस०, शाहजहाँपुर
श्री बाबू राम तिवारी, शुगर मिल, हरदोई
श्री रामदास चक, फिरोजाबाद
श्री रघुनाथ सहाय जैन, गाजियाबाद
श्री रमेन्द्र ध्वज जी, बैंक, मेरठ
श्री महेन्द्रदत्त कुश, बागपत, मेरठ
श्री ब्रह्मानन्द शर्मा, बागपत, मेरठ
श्री जगदीश प्रसाद मिश्रा, विद्युत, मेरठ
श्री सुशील कुमार मांगलिक, पराग डेरी, मेरठ
श्री दिनेश कुमार मित्तल, स्टार पेपर मिल, सहारनपुर
श्री आनन्द प्रकाश शर्मा, शामली, मुजफ्फरनगर
श्री ब्रह्म प्रकाश अग्रवाल, शामली, मुजफ्फरनगर
श्री बलदेव राज शर्मा, इंजीनियरिंग, देहरादून
श्री दीवान सिंह विष्ट, दून आटो रिक्शा, देहरादून
श्री कंचन लाल शर्मा, टैक्सटायल, बुलन्दशहर
श्री राम जी दुबे, डोईवाला शुगर मिल
श्री भूपेन्द्र मल (भुप्पी), आयुध निर्माणी, देहरादून
श्री ब्रज मोहन शर्मा, दुकान कर्मचारी, देहरादून

हमारे ये हुतात्मा

श्री हंसदेवसिंह गौतम (कानपुर)

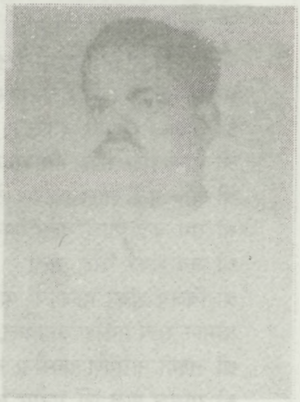

श्री गौरीशंकर मिश्र (बरेली)

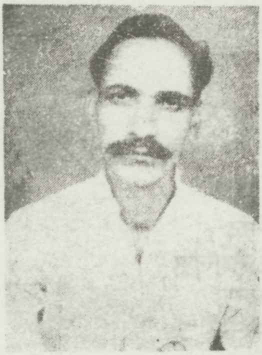

श्री यज्ञदत्त शर्मा (कानपुर)

श्री ज्ञानचन्द्र द्विवेदी एडवोकेट (प्रयाग)

हमारे ये हुतात्मा

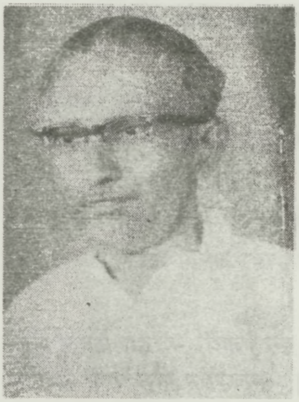

श्री भगवतशरण रस्तोगी (कानपुर)

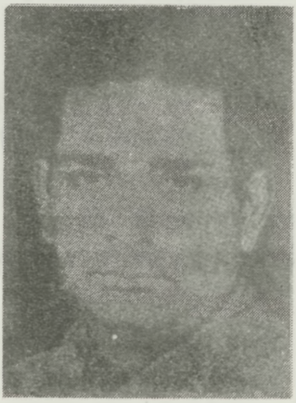

श्री ईश्वरदयाल सक्सेना।

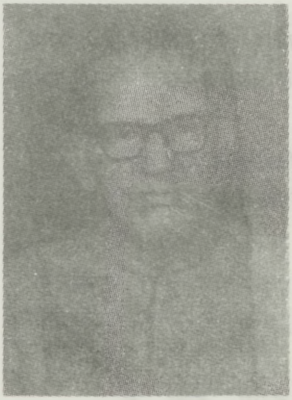

श्री रघुनाथसहाय जैन (गाजियाबाद)

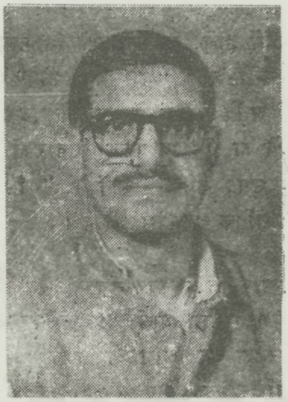

श्री सुधीरसिंह जी (गोरखपुर)
महामन्त्री
अ०भा०सुगर मिल मजदूर महासंघ

मेरी चाह

जग में इच्छाएँ हैं असीम और चाहों का भी अन्त नहीं,
उत्तम चाहों हित कर्म करूं, यह मेरी चाह सदैव रही।

पाने में सुख होता होगा, मधुर चाहों का सुख अपना है,
पर ओछी चाह का जन्म न हो, बस यह जीवन का सपना है।

यह मिटे गरीबी जो करती, इन्सानों को लंगड़ा-बौना,
रोटी इन्सान को ना खाये, भूखे न पड़े जीवन खोना।

श्रम करने के अवसर खोकर, बन जायें न हम केवल पुर्जा,
उत्पादकता तो बढ़ो, किन्तु श्रमकण न पोंछ पायी ऊर्जा।

विज्ञान-बुद्धि के बल पर तो होता पृथ्वी-प्रकृति का दोहन है,
कम्प्यूटर भुखमरी लायेगा, यह नहीं वैभव का आरोहण है।

विज्ञान न हिंसा भड़काए, हो व्यष्टि औ समष्टि में प्रकाश,
आनन्द और करुणा छहरे, हो समता-ममता का विकास।

राष्ट्र-विश्व-व्यक्ति औ समाज में, न विरोध के स्वर फूटें,
शासन-शोषित का द्वैत मिटे, सुख पर विलासिता ना टूटे।

तप नहीं वर्जना है केवल, कृत्रिमता कला न कहलाती,
है सौन्दर्य अलंकरण कभी नहीं, संख्या न सत्य को ढक पाती।

इन छद्म मुखौटों के पीछे, दुर्दान्त क्रूरता होती है,
निर्धन-अमीर, विद्वान-मूर्ख में, एक आत्मा होती है।

है नहीं मोक्ष की चाह मुझे, है चाह मनुजता जग जाये,
पथ के काँटों को साफ करूँ, पुष्पों की गन्ध बिखर जाये।

—राजेश्वरदयाल शर्मा

"इदं स्वाहा, इदं न मम।"

मान्यवर बड़े भाई जी

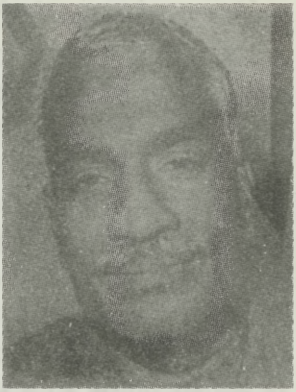

उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर जिले की चुनार तहसील के बगही गाँव में सन् १९२५ की दीपावली के शुभ पर्व पर श्री दलथम्मन सिंह जी के घर जो पुत्ररत्न पैदा हुआ था वह निम्न मध्यम वर्गीय किसान परिवार में पैदा होने वाले माननीय राम नरेश सिंह जी थे जिनको घर-बाहर से लेकर पूरे भारतवर्ष के लोग प्रेम से बड़े भाई के नाम से पुकारते थे। बड़े भाई ने १९४२ में चुनार से हाई स्कूल पास करने के उपरान्त वहाँ की कचहरी में लिपिक के पद से अपना जीवन प्रारम्भ किया। बाद में अपनी प्रतिभा और मेधा को समाज एवं राष्ट्र को समर्पित करके स्वयं को धन्य कर लिया। वे सामान्य देहयष्टि में एक असामान्य लौहपुरुष योद्धा थे जिनके व्यक्तित्व में तिलक जी की सिंहगर्जना, "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" और परमपूज्य श्री गुरु जी के बोधवाक्य "इदम् राष्ट्राय, इदम् न मम" दोनों के ही दर्शन होते थे। श्रमिकों को सम्मानपूर्वक जीने के अधिकार का मार्ग प्रशस्त करनेवाले बड़े भाई स्वभाव से निश्चल, निश्छल, संगठन-कौशल के धनी एवं शुद्ध राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के पक्षधर कर्मयोगी योद्धा थे।

बड़े भाई १९४२ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये तथा १९४६ में संघ के प्रचारक बन गये। इस पर उनके पिता जी ने नाराज होकर कहा कि तुम राम को अपना आदर्श मानते हो पर तुम्हारा आचरण राम जैसा नहीं है। तुम्हारी पत्नी घर पर है और तुम बाहर घूमते रहते हो? बड़े भाई जी ने उत्तर दिया, "मैं राम नहीं, राम का अनुज लक्ष्मण हूँ।" १९४८ में वह संघ पर लगे प्रतिबन्ध के समय जेल गये। १९४९ में मिर्जापुर के जिला प्रचारक बने। १९५० में पुरुषोत्तम चिकित्सालय और १९५२ में माधव विद्या मन्दिर हाई स्कूल की स्थापना पुरुषोत्तमपुर (चुनार) में की। इन्हीं दिनों विंध्याचल क्षेत्र से जनसंघ के विधान सभा प्रत्याशी बने। दौड़धूप के कारण गिरते हुए स्वास्थ्य की वजह से १९५६ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वस्तु-भण्डार एवं कार्यालय के प्रमुख नियुक्त हुए। १९६० में भारतीय मजदूर संघ में प्रवेश किया व उत्तर प्रदेश के महामंत्री बने। १९६२ में दुकान वाणिज्य प्रतिष्ठान अधिनियम संशोधन कराने में सफलता प्राप्त की। दिसम्बर .१९६२ में राष्ट्रीय मोर्चे का निर्माण किया। १९६३ में भारतीय मजदूर संघ को राष्ट्रवादी श्रम संगठन घोषित करने वाला प्रस्ताव पारित किया। १९६७ से अखिल भारतीय मंत्री बने। उस समय मान्यवर बड़े भाई जी के पास उत्तर प्रदेश के साथ-साथ बिहार, बंगाल एवं असम प्रान्त के भारतीय मजदूर संघ का दायित्व था। वे १९६८ से १९७४ तक विधान परिषद् उत्तर प्रदेश के सदस्य रहे। १९७४ में रेलवे कर्मचारियों की हड़ताल सफल कराने में सहयोग किया।

उनका १ जुलाई १९७५ से आपातकाल में कानपुर की जेल में रहना हुआ। मान्यवर बड़े भाई जी ने फरवरी १९७६ में भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय महामंत्री का पदभार सम्भाला। वे १९७६ से १९८२ तक के लिए पुनः उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। उन्होंने दिसम्बर १९७७ में दिल्ली में त्रिदलीय श्रम सम्मेलन में भाग लिया। मान्यवर बड़े भाई जी १९७८ में जयपुर में सम्पन्न हुए भारतीय मजदूर संघ के अधिवेशन में राष्ट्रीय महामंत्री के पद पर विधिवत् निर्वाचित घोषित किये गये। मान्यवर बड़े भाई भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की अनेक श्रम सलाहकार समितियों के सदस्य रहे।

मान्यवर बड़े भाई जी क्षेत्र के प्रवास एवं कार्यक्रमों में अखण्ड रूप से आजीवन व्यस्त रहे। निःसन्देह भारतीय मजदूर संघ का वर्तमान स्वरूप बड़े भाई जी की सर्वोत्तम कृति है। भारत के मजदूर आन्दोलन में भारतीय मजदूर संघ को द्वितीय स्थान दिलाने में बड़े भाईजी का सर्वाधिक योगदान है। श्रमिक क्षेत्र के लिए उन्होंने कई पुस्तकें एवं अनेक लेख लिखे हैं। 'यूनियन पथ प्रदर्शक' और 'भारत में श्रम संघ' (ट्रेड यूनियन) आन्दोलन' उनकी प्रमुख पुस्तिकाएँ हैं। 'सरकार हारी, मजदूर जीता' (अक्टूबर १९८४) एवं 'मजदूर की मिलिट्री बनाम मर्द यूनियन' (नवम्बर १९८४) उनके बहुचर्चित, अति प्रभावपूर्ण लेख हैं। २ मई, १९८५ को कानपुर में बड़े भाई ने अपनी इहलोक यात्रा का समारोप किया।

मान्यवर बड़े भाई का स्वभाव अनुशासनप्रिय और व्यवस्था-प्रधान था। हर कार्य वह नियत समय पर करते थे। देरी से आने के कारण ट्रेन निकल गयी अथवा ट्रेन के नियत समय से बहुत पूर्व रेलवे स्टेशन पर आकर उन्होंने ट्रेन की प्रतीक्षा की हो ऐसा प्रसंग उनके जीवन में कभी नहीं आया। वह अद्भुत रूप से कुशल संगठनकर्ता और सक्षम प्रशासक थे जबकि संगठन एवं प्रशासन का कोई आपसी तालमेल ही नहीं है। परमपूजनीय श्री गुरु जी के व्यक्तित्व का बहुत गहरा असर बड़े भाईजी के मन पर था। ऊहापोह के मानसिक द्वन्द्व के समय वह एकाग्रचित्त होकर यही सोचते थे कि इस परिस्थिति में श्री गुरु जी होते तो वे क्या निर्णय लेते। बड़े भाई जी का जीवन तितीक्षा से परिपूर्ण था अर्थात् वह मानसिक एवं शारीरिक दुःखों को सहज भाव से सहन कर लेते थे और इस कारण उनके व्यक्तित्व का खरा सोना और अधिक निखर कर सभी के सामने आया था।

निर्णय करने का कार्य वे आत्मविश्वासपूर्वक करते थे, फिर भी "मेरा पूर्व-प्रचारित निर्णय मैं कैसे बदलूँ" यह अहंकार उनके मन में नहीं आता था। "संगठन के अन्तर्गत न्याय मिलेगा" यह विश्वास छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता के मन में हमेशा बना रहे इसके लिए अपने अहंकार का विचार बीच में न लाते हुए वे निर्णय में उचित परिवर्तन करने में झिझकते नहीं थे। पारिवारिक वायुमण्डल का निर्माण उनके सान्निध्य का एक स्वाभाविक और अपरिहार्य परिणाम था। संघ, मजदूर संघ, विधान परिषद्, यहाँ तक कि अन्तिम बीमारी में विविध अस्पताल वगैरह जहाँ-जहाँ भी वे गये पारिवारिक वातावरण उनके चारों तरफ अपने आप बनता गया। अनेकानेक परिवार उनको अपने-अपने परिवार का मुखिया मानते थे। मजदूर जगत् में विभिन्न यूनियनों और उनके नेताओं व कार्यकर्ताओं से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। भारतीय रेलवे मजदूर संघ के लखनऊ अधिवेशन में मान्यवर जगदीश चन्द्र जी दीक्षित का आना, राष्ट्रीय श्रम दिवस (विश्वकर्मा जयन्ती) के समारोह में प्रतिवर्ष कानपुर में अध्यक्षता

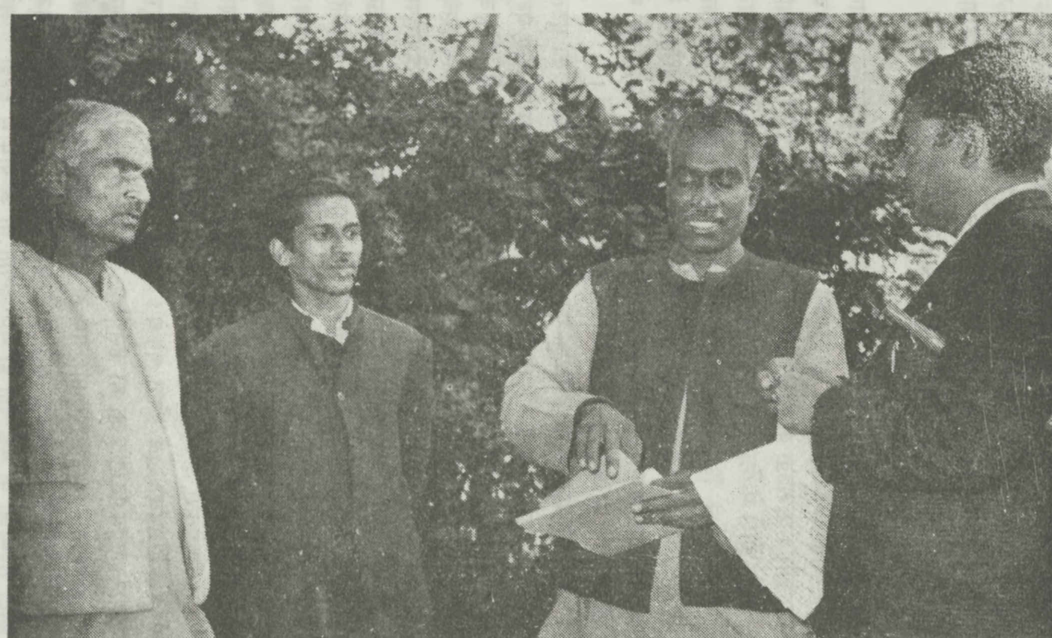

कानपुर जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन के दौरान बड़े भाई जी (ए०डी०एम० के दायें)।
साथ में खड़े है हंसदेवसिंह गौतम तथा रमाकान्त शुक्ल।

करने के लिए नियमित रूप से माननीय मकबूल अहमद साहब का उपस्थित रहना या भारतीय मजदूर संघ के किसी भी कार्यक्रम के लिए प्रसन्नतापूर्वक माननीय गणेशदत्त जी वाजपेयी का पधारना—यह सब घटनाएँ ट्रेड यूनियन के क्षेत्र के लिए आश्चर्यजनक प्रतीत होने वाली थीं। वाराणसी के रेलवे कर्मचारी के केस के लिए तत्कालीन रेल मंत्री श्रीमान् कमलापति त्रिपाठी के निवास पर दरबान, चपरासी, सचिव आदि सबको पीछे धकेलकर सीधे पंण्डित जी के प्राइवेट कमरे में घुसने वाले, विंध्याचल निवासी गणेश जी हों या अस्पताल के कमरे का वातावरण प्रसन्नता से भरा रहे इस हेतु अपनी विशेष शैली में अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाकर "हाँ बड़े भाई ! बी० एम० एस० जिन्दाबाद" यह नारा देनेवाली पूना के मुले अस्पताल की सिस्टर खुर्शीद हों, सभी के मन में उनके सहवास के कारण एक ही भाव समान रूप से निर्मित होता था, वह था आत्मीयता का।

परमपूजनीय श्री गुरु जी के बताए हुए त्रिपथ्यों का पालन उन्होंने निष्ठापूर्वक किया। अपने क्षेत्र में कार्य की रचना संघ के आदर्शों के अनुरूप की; संघ की रीति-नीति-पद्धति को मजदूर क्षेत्र में चलाया और संघ शाखा के साथ नित्य का सम्बन्ध निरपवाद रूप से निभाया। अन्तिम बीमारी तक उनके झोले में निकर अवश्य ही रहती थी। संगठन के अन्दर की अथवा बाहर की उलझनों से निपटने के लिए उनमें अपूर्व धैर्य था। उनको अविलम्ब आपरेशन करना भी आता था और सब्र का फल मीठा होता है इस कहावत के अनुसार कार्यकर्ता के मन के मनोविज्ञान के अनुसार लगातार लम्बी अवधि तक मानसिक तनाव झेलते हुए भी धीरज खोये बिना उचित क्षण की प्रतीक्षा करने में वे असाधारण धैर्यसम्पन्न थे।

आपातकाल के बीच में मान्यवर बड़े भाई जी को अ० भा० महामंत्री के पद का गुरुतर भार सौंपा गया था। आपातकाल के बाद की परिस्थिति भारतीय मजदूर संघ के लिए बहुत उलझनों से भरी हुई थी। अपने अपयश एवं अक्षमता के लिए किसी दूसरे को बलि का बकरा बनाने वालों का भण्डाफोड़ करना कुछ खास कठिन काम नहीं होता है लेकिन इसका परिणाम अपने पूरे परिवार के लिए अच्छा नहीं होता है। ऐसी स्थिति में मिथ्या दोषारोपण सहन करते हुए संयम बरतने में, हँसते-हँसते अपकीर्ति को हजम करने में, खासकर उस कालखण्ड में जबकि योग्यताविहीन नेता अपने व्यक्तिवाद को बढ़ावा देने के लिए प्रचारतंत्र के सुपरिचित एवं सुलभ प्रतिष्ठाशून्य उपायों से अपने चरित्र को उज्ज्वल दिखाने का प्रयास करते हों, बड़े भाई जी में असामान्य संयम प्रकट करने का श्रेष्ठ गुण था। संगठन में जहाँ सभी काम अच्छे होते हों वहाँ कुछ बदनामी देनेवाले काम भी हो जाते हैं, ऐसे समय बड़े भाई जी गलती की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर कार्यकर्ताओं को पूरा का पूरा संरक्षण देते थे। भले ही एकान्त में उनको खूब डाँटते भी थे। भगवान ने उनको सूक्ष्म दृष्टि युक्त पैनी समझ वाला विशाल हृदय दिया हुआ था, इसीलिए उनको Understanding बहुत थी। इसलिए चाहे चायबागान की मजदूर महिलाएँ हों अथवा भारतीय मजदूर संघ को दबाने की इच्छा से सम्बन्धित मंत्री को गुमराह करने वाले भ्रष्ट अफसर हों या सभी को बुद्धू समझने के आदी छोटी संस्थाओं के बड़े नेता हों या पक्षपात या अन्याय से दुःखी, मिलने को आने वाले मजदूर संघ के छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता, सभी के मन को वह ठीक ढंग से समझने में पारंगत थे। उनका साधन-शुचिता पर बड़ा आग्रह था। सच्चरित्रता को वे स्वयं

में एक बड़ा पारितोषिक मानते थे। यश की उन्होंने कभी लालसा नहीं की और आपत्ति से कभी घबराये नहीं तथा विलम्ब की वजह से वे कभी अधीर नहीं हुए। ऐसे व्यक्तित्व के धनी बड़े भाई अनुकूल, प्रतिकूल, विरोधी, सुखमय, भीषण दुःखदायी, सभी परिस्थितियों में अविचल रहते हुए तीव्र समझदारी वाले अपने विलक्षण हृदय की परख बारम्बार सभी को कराते रहे। वे कुशल रणनीतिज्ञ (Strategist) थे पर उनकी रणनीति का आधार विवेक (Discretion) था, चालाकी (Diplomacy) नहीं। विशुद्ध ध्येयनिष्ठा, सम्पूर्ण आत्मनियंत्रण, अन्तिम विजय पर अविचल विश्वास और मानवीय मनोविज्ञान के गहरे ज्ञान के परिणामस्वरूप उन्हें सफलता प्राप्त होती थी।

भारतीय मजदूर संघ में नेतृत्व की द्वितीय पंक्ति खड़ी करने के लिए उन्होंने सजग प्रयास किया था। उनका सभी यूनियनों के सभी कार्यकर्ताओं से सीधा सम्पर्क था। वे हरेक के गुण-अवगुण की जानकारी रखते थे। क्षमतासम्पन्न कार्यकर्ताओं का चयन करना, उनके गुणों को बढ़ाने के साथ-साथ उनके दोषों को दूर करना, कार्यकर्ता को प्रोत्साहित भी करना और उसके अहंकार को न बढ़ने देना, अपनी जीवन-शैली से बिना उपदेश किए उनको ध्येयवादी बनाना, कार्यकर्ता के सामने ध्येयवादी जीवन का आदर्श उपस्थित करना—ये सभी बातें उनका स्वभाव बन गयी थीं। अनेक कारणों से बड़े भाई जी औपचारिक शिक्षा बहुत अधिक प्राप्त नहीं कर सके थे लेकिन उनमें स्वभावज विद्योचित प्रज्ञा बहुत थी। सार्वजनिक कार्य के लिए अपनी औपचारिक शिक्षा की कमी को अथक परिश्रम द्वारा पूरा करके, इस त्रुटि की उन्होंने क्षतिपूर्ति कर ली थी।

एक वाक्य में कहना हो तो हम कह सकते हैं कि अथक परिश्रम, कठोर परिश्रम, प्रदीर्घ कठोर परिश्रम का दूसरा नाम ही माननीय बड़े भाई था। कठोर परिश्रम की वजह से ही असमय में उनका वज्र समान सुदृढ़ शरीर टूट गया था। उनको क्षय रोग भी हुआ था और बहुत समय तक लगातार ज्वर भी रहता था। किन्तु स्वास्थ्य के बारे में उन्होंने कभी किसी से कोई चर्चा नहीं की और ज्वर की वजह से अपना अनवरत प्रवास कभी रोका नहीं। तिल-तिल कर गलते रहे और दीपक की तरह अपने जीवन की ज्योति से अपने चारों ओर के वातावरण को आभायुक्त करते रहे। बड़े भाई को गुमराह करना किसी भी व्यवहारचतुर व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं था। गलती या अपराध के पीछे मनोवैज्ञानिक कारण क्या हो सकते हैं उनको वह खोजते थे और यदि कार्यकर्ता दुष्ट है, व्यक्तिवादी है, ध्येयशून्य है तो उससे सख्ती से निपटते थे परन्तु यदि वह ध्येयवादी है, कुछ व्यक्तिगत दुर्बलताओं की वजह से उससे चूक हुई है तो फिर दुर्बलताओं से मुक्त होने में उसकी सहायता करते थे। वह उसे ठीक ढंग से काम करने का एक और अवसर देने के पक्ष में रहते थे। वह मानते थे कि गलतियाँ भारतीय मजदूर संघ की रीति-नीति, पद्धति और जीवन-मूल्यों की जानकारी ठीक ढंग से न होने की वजह से भी होती हैं। ऐसे कार्यकर्ताओं को धैर्यपूर्वक ठीक ढंग से समझाने की आवश्यकता होती है। इसलिए लोगों को आश्चर्य होता था कि बड़े भाई कभी तो एकदम गुस्सा करते हैं और कभी-कभी वह अतुलनीय शान्ति का परिचय देते हैं। बड़े भाई हवा में छलाँग लगानेवाले स्वप्नदृष्टा नहीं थे, वह हर समस्या की तह तक जाते थे। कानपुर में रहते हुए सुरक्षा संस्थानों में वर्षों से जमा दादा एस० एम० बनर्जी का एकाधिकार

कैसे समाप्त हो, इण्टक को बढ़ावा देने वाले राजकीय प्रशासन से भारतीय मजदूर संघ को प्रान्तीय स्तर पर मान्यता कैसे दिलायी जायें, आई० डी० सक्सैना की लैनिन पार्क में हत्या करनेवालों की खोज कैसे की जाय, बालादीन जी के स्वास्थ्य पर अंग्रेजी दवाओं का विपरीत असर हो रहा है इसलिए उनके लिए आयुर्वैदिक औषधियों की व्यवस्था कैसे की जाय अथवा संघ कार्यालय पर रसोई बनानेवाले बहादुर की शादी की कुछ व्यवस्था कैसे की जाय, पत्नी द्वारा पाले गये कुत्तों के चक्कर से श्री यज्ञदत्त शर्मा को कैसे मुक्ति दिलायी जाय आदि सभी बातों पर एक ही समय सम्पूर्ण रूप से पूरा ध्यान ! ! सभी विषयों की तफसील पर पूरी पकड़, केवल व्यक्तिगत सुख के विषय को छोड़कर, यह ब्रड़े भाई जी का एक मूर्तिमंत चित्र है। चापलूसी या खुशामद से उनको नफरत थी। उनका व्यक्तिगत जीवन विविध सम्पर्क तथा अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों से युक्त था। इस कारण उनकी मनोवैज्ञानिक समझदारी बहुत गहरी, ऊँची और वास्तविकता से पूर्ण थी।

भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री का पद ब्रड़े भाई जी के पास पारितोषिक के रूप में नही, आह्वान के रूप में आया था।

समग्र क्रान्ति का जोशीला भाषण देने वाले कई नेता आपातकाल में समग्र आत्मसमर्पण तक पहुँच गये थे। उस समय अनुशासन-पर्व के नाम पर ट्रेड यूनियन के सारे अधिकार छीन लिये गये थे। आन्दोलन तो दूर, ट्रेड यूनियन का नियमित कार्यालय चलाना भी असम्भव हो गया था। ऐसे समय स्वघोषित क्रान्तिकारी, वामपंथी ट्रेड यूनियन नेताओं की मनःस्थिति डाँवाडोल हो गयी थी। सरकार की श्रमिक विरोधी नीतियों का विरोध प्रकट करने के लिए पत्रक पर केन्द्रीय श्रम संस्थाओं के पदाधिकारियों का नाम देना उचित होगा अथवा नहीं इस पर लम्बी चर्चा होती थी। उस समय पत्रक पर किसी नेता का नाम नहीं होता था, केवल संस्थाओं के नाम रहते थे। क्रान्तिकारी वामपंथियों के कई नेताओं का यह हाल था। ऐसे समय निभर्यतापूर्वक काम करना, पत्रक निकालना, वेश नहीं बदलना, धोती-कुर्ता, चप्पल के सामान्य वेश में प्रवास पर जाना, मजदूरों का हौसला बढ़ाकर उनको संघर्ष के लिए तैयार करते हुए साठ हजार से अधिक मजदूरों से आपातकाल के कानून को भंग कराना, यह सब कार्य अद्‌भुत थे। मान्यवर बड़े भाई के नेतृत्व में भारतीय मजदूर संघ ने यह सब किया। उनके महामंत्री पद के कार्यकाल का प्रारम्भ हीं "योद्धा नेता" के रूप में हुआ। आपातकाल की समाप्ति के बाद अनेक वीर पुरुष अनुकूल काल के प्रलोभनों का शिकार हुए। जनता राज आने के बाद अच्छे-अच्छे लोग और संगठन भी इस तरह की मनःस्थिति में आ गये। कहा गया है कि विजय-काल ही प्रमाद-काल होता है। अतएव अवसरवादी सस्ती नेतागिरी का प्रभाव बढ़ गया। ट्रेड यूनियन क्षेत्र में विलीनीकरण का स्वभाव आया, जैसे इण्टक कांग्रेस सरकार के साथ ही रही वैसे ही विलीनीकृत केन्द्रीय श्रम संस्था जनता सरकार के साथ सम्बद्ध रहे यह विचार बना। यह बहुत बड़ा प्रलोभन था किन्तु भारतीय मजदूर संघ ने दृढ़ता से इसका विरोध किया। यह भी बड़े भाई के नेतृत्व में हुआ। भारतीय मजदूर संघ का कोई भी कार्यकर्ता राज्याश्रय की मेनका के मोह में विश्वामित्र नहीं बन सका। आपातकाल में प्रकट हुई वीरता तो श्रेष्ठ थी ही किन्तु अनुकूल परिस्थिति में प्रकट हुई यह निर्मोहिता उससे भी अधिक श्रेय देनेवाली रही।

श्रेष्ठ नेता का निर्माण श्रेष्ठ परम्पराओं के आधार पर होता है। उसी आधार पर नेता सामान्य साथियों में से असामान्य कार्यकताओं का निर्माण करता है। कहावत है कि जो दूध घना नहीं होता है उसमें से घनी मलाई की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। नेता कार्यकर्ताओं की शक्ति बढ़ाता है व कार्यकर्ता नेता की शक्ति बढ़ाते हैं और दोनों मिलकर अंगीकृत कार्य की शक्ति बढ़ाते हैं, जिस प्रकार कमल सरोवर की, सरोवर कमल की और दोनों मिलकर वन की शोभा बढ़ाते हैं। मान्यवर बड़े भाई जी में मनुष्य-निर्माण की क्षमता बहुत बड़ी मात्रा में थी। उनके कारण उनके कार्यकर्ताओं की, कार्यकर्ताओं के कारण बड़े भाई की और दोनों के कारण मजदूर संघ की शोभा लगातार बढ़ती गयी। ट्रेड यूनियन के क्षेत्र में प्रतिष्ठा-प्राप्ति के अनेकानेक अवसर आते हैं—विदेश यात्राएँ, सरकारी व अन्य समितियों में नियुक्तियाँ आदि। ऐसे सभी अवसरों पर बड़े भाई जी एक-एक करके अनेक कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाते थे और स्वयं सबके पीछे ही रहते थे। बडे भाई जी अनुशासित भी थे और आत्मानुशासन भी उनमें बहुत था। संस्था के संवैधानिक अनुशासन का सीधे उल्लंघन किये बिना ऐश और आरामपरस्ती का जीवन व्यतीत करना सम्भव नहीं होता है लेकिन संयम, चारित्र्य, उद्यमशीलता, कर्मठता जैसे गुण संस्था के अनुशासन से उत्पन्न नहीं होते हैं। इसीलिए शायद आजकल यह कहने का फैशन-सा हो गया है कि नेता का मूल्यांकन सार्वजनिक जीवन के आधार पर करना चाहिए, उसके व्यक्तिगत जीवन के आधार पर नहीं। यह प्रगतिशील दृष्टिकोण बड़े भाई ने नहीं अपनाया था। उनके दैनिक जीवन की कर्मठता उनके आत्मानुशासन के फलस्वरूप ही थी। विधान परिषद् के सदस्य के नाते मिलने वाला मानधन किस तरह खर्च करना चाहिए इस पर संस्था ने कोई प्रतिबंध उन पर नहीं लगाया था किन्तु बड़े भाई सरकार द्वारा मिलने वाला पूरा मानधन भारतीय मजदूर संघ के काम के लिए ही खर्च करते थे और उसका पूरा हिसाब भारतीय मजदूर संघ के अधिवेशनों में प्रस्तुत भी करते थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी धर्मपत्नी की बीमारी के समय कुछ सप्ताह के लिए लखनऊ में दवा-पानी, यातायात और भोजन का सारा खर्च अपने गाँव बगही से लाकर निजी सम्पत्ति से ही किया। एम० एल० सी० होते हुए भी एम० एल० सी० को मिलनेवाले मानधन में से एक पैसा भी अपनी पत्नी की बीमारी पर मान्यवर बड़े भाई जी ने खर्च नहीं किया। इस कर्मठता का कहीं प्रचार भी नहीं किया गया लेकिन इस कर्मठता के कारण ही उनकी वाणी में नैतिक अधिकार उत्पन्न हुआ था।

बड़े भाई जी का यह सहज स्वभाव था कि एक क्षण के लिए भी यदि किसी ने आत्मीयता का व्यवहार किया हो तो उसका स्मरण आजीवन रखना। फिर वह रेणुकूट के मेवाराम हों या वाराणसी के मुन्नालाल। स्वाभाविक वृत्ति यह थी कि 'नेहा लगा के पछताना क्या?" जीवन के अन्तिम समय तक बीमारी की हालत में भी उनको अपने कार्य की और भारतीय मजदूर संघ की चिन्ता बनी रहती थी। इस विषय में यदि किसी ने रोका तो वे कहते थे कि कार्य से अलग रहकर आराम ही करना है तो काहे के लिए जीवित रहना?"

वे ध्येयनिष्ठा का सम्मान करते थे अतएव अपने विरोधी खेमे के ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं के प्रति उनके मन में अपार स्नेह एवं आदर था। वे कहा करते थे कि विरोधियों के बारे में ओछी व हल्की टीका-टिप्पणी करने से अपना ही स्तर गिरता है।

मान्यवर बड़े भाई जी के समकालीन विधान परिषद् उ०प्र० के सदस्य एवं निधान परिषद् के रिकार्ड इस मत की पुष्टि करते हैं कि यदि उन्होंने उधर अपने चित्त को एकाग्र किया होता तो वे अच्छे संसदज्ञ (पार्लियामैन्टेरियन) के नाते चमक सकते थे। लोकतंत्र में पार्लियामैन्टेरियन को एक अच्छा कैरियर माना जाता है किन्तु भारतीय मजदूर संघ की जिम्मेदारी के कारण वे उधर अधिक ध्यान नहीं दे सके। इस तरह भारतीय मजदूर संघ ने उनका कैरियर नष्ट ही किया। लेकिन व्यक्तिगत कैरियर को बनाने की चतुराई बड़े भाई में नहीं थी और यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की परम्परा के अनुकूल ही था। संघ ने भी अनेकानेक स्वयंसेवकों का कैरियर खराब किया है। कौन नहीं जानता कि यदि संघ के चक्कर में न आते तो मान्यवर यादवराव जोशी एक संगीतज्ञ के नाते ख्याति प्राप्त कर सकते थे, मा० विट्ठल राव पतकी क्रिकेट-पटु और वर्तमान में सरसंघचालक परम पूजनीय श्री रज्जू भैया जी एक विशिष्ट वैज्ञानिक के नाते विख्यात होते। बड़े भाई जी ने भी इसी परम्परा का निर्वाह किया।

भौतिकतावाद से मुक्त मान्यता है कि श्रेष्ठ नेता वह है जो अपनी चिरंतन अनुपस्थिति के कारण होनेवाली क्षति की पूर्ति की व्यवस्था पहले ही करके रखता है। संगठन में कभी शून्य पैदा न हो इसकी योजना करता रहता है। ऐसे नेताओं के सोच का ढंग "मैं नहीं, तू ही" होता है। वैसा ही उनके व्यवहार का ढंग भी भिन्न प्रकार का होता है। परमपूजनीय श्री गुरु जी ने कहा था, "आपमें से जिसने परमपूजनीय डाक्टर हेडगेवार जी को नहीं देखा है वह बालासाहब देवरस जी को देख ले।" इस उक्ति-कृति का सारा ढंग ही अलग है। प्रयास दूसरों को छोटा दिखाने का नहीं, अपने से भी बड़ा बनाने का ताकि पुण्य कार्य की गंगा में कहीं अवरोध न आ सके। बड़े भाई जी इसी परम्परा में पले थे। उनके निधन से भारतीय मजदूर संघ की, मजदूरों की, राष्ट्र की हानि हुई है। वह हानि अपरिमित है लेकिन अपूरणीय नहीं। इसी में बड़े भाई जी की श्रेष्ठता है। ध्येयवादी जीवन के सम्पर्क से मन में ध्येयवाद और तीव्र रूप से प्रखर होता है, इसी की सम्भावना भी रहती है।

मान्यवर बड़े भाई जी को भावों के इन श्रद्धा-सुमनों की श्रद्धाञ्जलि के साथ ही इस पुस्तक की विषयवस्तु को अब पूरा करते हैं।

जिनकी माँग है, उसके पीछे उनकी शक्ति खड़ी करो।

आज के श्रम कानून मजदूर का जीवन सुखी नहीं बना पाये। ऐसे अक्षम कानूनों को तोड़कर नये कानूनों को लागू कराने वाली शक्ति का नाम ही श्रम संगठन है।

पैसा, सत्ता और पुलिस बल के मुकाबले में हमारे पास असंख्य मजदूरों की शक्ति है जिसको साथ लेकर हम श्रम का पूरा मूल्य लेकर मजदूरों की मान-प्रतिष्ठा बढ़ा सकते हैं।

—मान्यवर बड़े भाई जी

यदि ४० वर्ष पूर्व ध्यान दिया होता तो ...

'स्वदेशी'

स्वदेशी अपनाने की प्रेरणा कैसे जाग्रत हुई? उस काल की हलचल, राजनीतिक जागृति तथा आन्दोलन को देखो। उसकी प्रेरणा थी 'ब्रिटिश विरोध'। 'छः हजार मील से आये हुए अंग्रेज हमारे ऊपर राज्य करते हैं, उनका विरोध करना चाहिए'—इस कल्पना पर ही सारा आन्दोलन उभारा गया था। अंग्रेजी कपड़ों का बहिष्कार ही स्वदेशी आन्दोलन की प्रेरणा थी। परन्तु, यह मातृभूमि है, उसकी भक्ति करनी चाहिए उसके आधार पर राष्ट्र की रचना होनी चाहिए, या यहाँ का राष्ट्रीय कौन है? यह राष्ट्र किसका है? आदि प्रश्नों पर किसी ने विचार नहीं किया। उस समय तो 'ब्रिटिश का विरोध' ही स्वदेशी का पर्यायवाची बन गया।

जिनका हम विरोध कर रहे थे वह चले गये। परन्तु विरोध की वृत्ति बनी रही। चूँकि ईसाइयों और मुस्लिमों का विरोध करना नहीं था, इसलिए अपना ही विरोध करना आरम्भ कर दिया। और कई लोगों ने तो हिन्दुओं के विरोध की शपथ ही खा ली। विरोध-बिन्दु नष्ट होने पर स्वदेशी की कैसी दुर्दशा हो रही है, यह देखो! पहले की 'स्वदेशी प्रेरणा' अंग्रेज-विरोध थी, वह तो चली गयी। अब उसका बाहरी रूप दूर होने पर स्वदेशी का आन्तरिक प्रेम है किसमें? देश में उत्पन्न न होने वाली किसी आवश्यक वस्तु, सैनिक सामर्थ्य को बढ़ाने वाले अस्त्र-शस्त्र और रोग-निवारण के लिए आवश्यक औषधियों के विदेश से आयात की बात तो समझ में आ सकती है। परन्तु नाखून रंगने का रंग, मुँह पर पोतने की सफेदी, बाल सँवारने की पिनें, पत्ते आदि निरुपयोगी वस्तुओं के लिए देश का करोड़ों रुपया विदेश जाता है, उसका क्या कारण है? उसका यही कारण है कि देश में जो स्वदेशी आन्दोलन चला था, वह केवल अंग्रेज-विरोध पर आधारित था। उसका आधार सच्चा तथा स्वाभाविक स्वदेश-प्रेम नहीं, बल्कि ब्रिटिश-विरोध था। यह एक राष्ट्र-मारक तत्त्व सिद्ध हुआ। इसे आज बड़े-बड़े विचारवान् लोग भी स्वीकार करते हैं।

—मा॰स॰ गोलवलकर

नवम्बर १९५२ में पुणे की एक सभा में व्यक्त विचार

आज यह दुरवस्था न होती

अर्थ और आदर्श

देश के लिए लड़ने वाला सैनिक अपने जीवन की बाजी अर्थ की कामना से नहीं लगाता। अर्थ का लालच उसे देश-द्रोह सिखा सकता है, देशभक्ति नहीं। स्त्री के सतीत्व का अपना मूल्य है, उसे अर्थ की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता है। वैद्य रोगी की चिकित्सा के बदले अर्थ किन मूल्यों के आधार पर ले सकेगा? अध्यापक विद्यादान का मूल्य नहीं लगा सकता है। सरकारी कर्मचारी किस आधार पर एक फाइल को आगे सरकाने के लिए मूल्य लेगा? दुर्बल की रक्षा करने वाली पुलिस जब अपनी सेवाओं का मूल्य माँगने लगेगी तब या तो दुर्बल की रक्षा हो ही नहीं पायेगी अथवा शारीरिक शक्ति से दुर्बल अपनी बुद्धि का उपयोग कर धूर्तता से धन कमाकर पुलिस को अपनी रक्षा का मूल्य चुका कर निर्भय होकर अत्याचार करेगा।

श्रम का उद्भव चाहे शारीरिक हो या मानसिक, उसकी फलश्रुति यद्यपि दृश्य वस्तुओं के उत्पादन अथवा सेवाओं में हुई है तो भी उसका मूल्य रुपये-पैसों में आँकना असम्भव है।

स्वयमेव मृगेन्द्रता

मुद्रक: उर्वशी प्रेस, 49/3 वैद्यवाड़ा, मेरठ-250 002 फोन: 25558